हमारा इतिहास और नागरिक जीवन

७

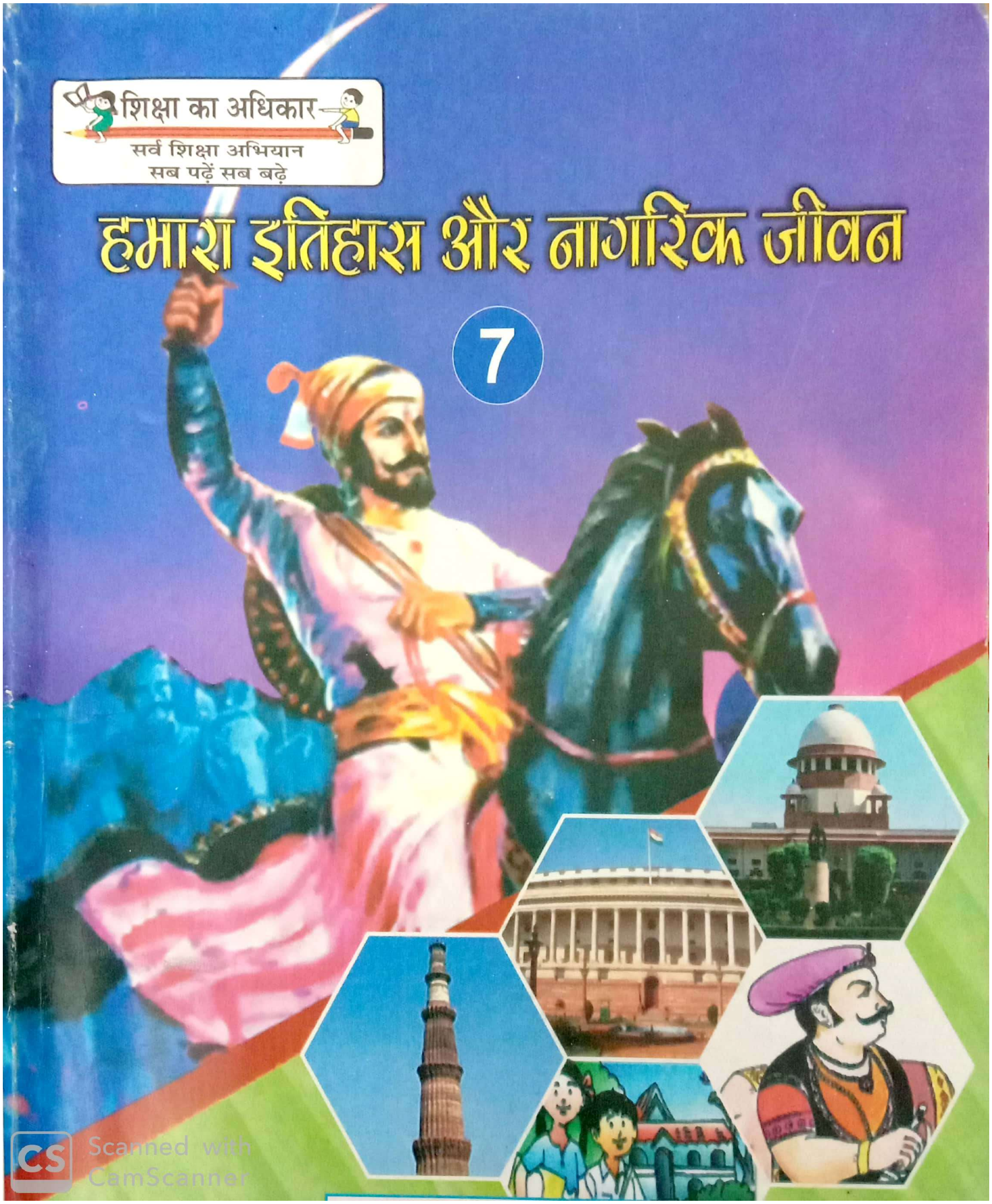

CS Scanned with CamScanner

E-BOOKS DEVELOPED BY

1. Dr.Sanjay Sinha Director SCERT,U.P,Lucknow
2. Ajay Kumar Singh J.D.SSA,SCERT,Lucknow
3. AlpaNigam (H.T)Primary Model School,TilauliSardarnagar,Gorakhpur
4. Amit Sharma(A.T)U.P.S,Mahatwani ,Nawabganj, Unnao
5. Anita Vishwakarma (A.T)Primary School ,Saidpur,Pilibhit
6. Anubhav Yadav(A.T)P.S.Gulariya,Hilauli,Unnao
7. Anupam Choudhary(A.T)P.S,Naurangabad,Sahaswan,Budaun
8. Ashutosh Anand Awasthi(A.T)U.P.S,Miyanganj,Barabanki
9. Deepak Kushwaha(A.T)U.P.S,Gazaffarnagar,Hasanganz,unnao
10. Firoz Khan (A.T) P.S,Chidawak,Gulaothi,Bulandshahr
11. Gaurav Singh(A.T)U.P.S,FatehpurMathia,Haswa,Fatehpur
12. HritikVerma (A.T)P.S.Sangramkheda,Hilauli,Unnao
13. Maneesh Pratap Singh(A.T)P.S.Premnagar,Fatehpur
14. Nitin Kumar Pandey(A.T)P.S, Madhyanagar, Gilaula , Shravasti

15. Pranesh Bhushan Mishra(A.T) U.P.S,Patha,Mahroni Lalitpur
16. Prashant Chaudhary(A.T)P.S.Rawana,Jalilpur,Bijnor
17. Rajeev Kumar Sahu(A.T)U.P.S.Saraigokul, Dhanpatganz ,Sultanpur
18. Shashi Kumar(A.T)P.S.Lachchhikheda,Akohari, Hilauli,Unnao
19. Shivali Gupta(A.T)U.P.S,Dhaulri,Jani,Meerut
20. Varunesh Mishra(A.T)P.S.GulalpurPratappurKamaicha

DNN15Y

पाठ-1

इस्लाम का भारत में आगमन

इस्लाम का उदय अरब देश में हुआ और धीरे-धीरे पूरे विश्व में इसका प्रसार हो गया। सातवीं शताब्दी में भारत पर अरबों के आक्रमण के बाद भारतीय लोग इस्लाम से परिचित हुए और धीरे-धीरे इस्लाम भारतीय संस्कृति का अंग बन गया।

इस्लाम धर्म की शुरुआत

यह अरब देश की बात है। वहाँ के मक्का नामक शहर में सन् 570 ई0 में हजरत मोहम्मद का जन्म हुआ था। उस समय अरब में अनेक छोटे-छोटे कबीले थे जो लगातार एक दूसरे से लड़ते रहते थे। ये लोग बहुत सारे देवी- देवताओं की पूजा करते थे। हजरत मोहम्मद इन कबीलों के बीच आपसी सौहार्द एवं भाईचारा बढ़ाने के लिए यह सन्देश देने लगे कि ईश्वर एक है। एक मात्र अल्लाह की सीधे और सरल तरीके से प्रार्थना करनी चाहिए। मोहम्मद साहब ने कहा कि अल्लाह को मानने वाले सब लोग बराबर हैं और एक हैं।

प्रारम्भ में मक्का शहर के कई लोगों ने मोहम्मद साहब की बातों का विरोध किया था। यहाँ तक कि मोहम्मद साहब को मक्का छोड़कर 622 ई0 में दूसरे शहर मदीना जाना पड़ा था। इनका यह जाना ‘हिजरत’ कहा जाता है। इसी समय से मुसलमानों का हिजरी सम्वत् प्रारम्भ होता है। धीरे-धीरे अरब के सारे कबीले मोहम्मद साहब की बातें मानने

लगे। इस्लाम धर्म अरब देश से प्रारम्भ होकर दुनिया के कई देशों में फैला। मोहम्मद साहब की मृत्यु 632 ई0 में हुई।

इस्लाम के तीन बुनियादी सिद्धान्त हैं-समता, समानता तथा बंधुत्व। इस्लाम धर्म में लोग मानते हैं- अल्लाह एक है और वे उसके बन्दे हैं तथा हज़रत मोहम्मद, अल्लाह का पैग़ाम (संदेश) लाने वाले पैगम्बर हैं।

काबा (मक्का)

मोहम्मद साहब की शिक्षाएँ

मोहम्मद साहब ने इस्लाम धर्म के मानने वालों के लिए जीवन में निम्न पाँच सिद्धान्त निर्धारित किए-

1. कलमा- अल्लाह एक है और मोहम्मद उसके पैगम्बर हैं।

2. नमाज़ - प्रतिदिन पाँच बार नमाज़ पढ़ना।

3. रमज़ान- रमजान के पवित्र महीने में रोजा (व्रत) रखना।

4. ज़कात - अपनी उपार्जित आय का 2.5 प्रतिशत गरीबों को सहायतार्थ देना।

5. हज- पूरे जीवन में एक बार मक्का की तीर्थयात्रा करना।

मोहम्मद साहब के देहावसान के बाद अरब में खलीफाओं का प्रभुत्व स्थापित हो गया। खलीफा पैगम्बर के उत्तराधिकारी के रूप में मुस्लिम जगत के धार्मिक गुरू तथा राजनीतिक प्रशासक होते थे। इन्होंने अपना साम्राज्य अरब देश, सीरिया, इराक, ईरान, मिस्र, उत्तरी अफ्रीका तथा स्पेन तक फैलाया।

भारत में इस्लाम धर्म

भारत में इस्लाम धर्म समय-समय पर कई तरह से आया व फैला जैसे-अरबों द्वारा भारत पर आक्रमण से, अरब व्यापारियों के माध्यम से, ईरानी शरणार्थियों और सूफी सन्तों के आने से। भारत में इस्लाम धर्म के प्रसार के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. अरबों का आक्रमण-भारत पर अरबों का पहला आक्रमण खलीफा उमर के समय 636 ई0 में थाना (पश्चिमी तट) पर हुआ। यह आक्रमण सफल नहीं हुआ। इस आक्रमण से भारतीय लोग सबसे पहले इस्लाम धर्म मानने वालों के सम्पर्क में आए। इसके बाद समय-समय पर भारत पर अरबों का आक्रमण होता रहा। इसमें पूर्ण सफलता मोहम्मद बिन कासिम को प्राप्त हुई। मोहम्मद बिन कासिम ने

712 ई0 में सिंध के शासक राजा दाहिर को पराजित कर सिंध पर अरबों का राज्य स्थापित किया।

2. कई अरब व्यापारी जो इस्लाम धर्म को मानते थे, भारत के पश्चिमी तट पर व्यापार करने आते थे। वहाँ के बंदरगाहों में वे छोटी- छोटी बस्तियाँ बनाकर बसे। राजाओं ने उन्हें बसने में मदद की। उन्हें अपने घर, गोदाम बनाने के लिए जमीन दी। इन व्यापारियों के प्रभाव से आस-पास के लोग इस्लाम धर्म से परिचित हुए।

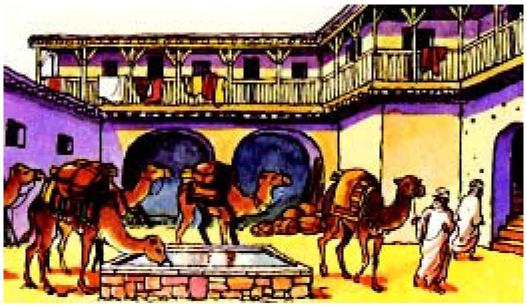

3.भारत के उत्तरी हिस्सों में इस्लाम धर्म की जानकारी ईरानी शरणार्थियों के द्वारा आयी। सन् 900 के लगभग ईरान देश पर तुर्क कबीले हमले कर रहे थे। इन हमलों से बचने के लिए कई ईरानी लोग भारत आये। उनमें कई लोग कारीगर थे और कई लोग सन्त थे। कुछ सिपाही भी आये जो राय-राणाओं की सेनाओं में शामिल हो गये। ये ईरानी लोग मुसलमान थे। इनके सम्पर्क में आकर बहुत से लोगों को इस्लाम के बारे में जानकारी मिली।

4.सन् 1190 के बाद भारत में तुर्क लोगों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया था। इस समय तक तुर्क लोग भी इस्लाम धर्म मानने लगे थे। तुर्कों के साथ बड़ी संख्या में ईरानी, अफगानी, खुरासानी लोग भी भारत आकर बसे।

5.सन् 1100 से 1500 के बीच कई ऐसे सन्त हुए जैसे-कबीर, नानक, तुकाराम, रामानंद, जिन्होंने साधारण भाषा में दोहे और गीत गाये, जो ईश्वर के प्रति भक्ति भाव से भरे थे। इन्हीं भक्त सन्तों की तरह कई मुसलमान सन्त भी थे जो सूफी सन्त कहलाते थे। अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया बहुत जाने-माने सूफी सन्त थे।

सूफी सन्तों के विचार भक्त सन्तों के विचार से मिलते जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। इन सन्तांे के विचारों की मदद से हिन्दू और

मुसलमान लोगों ने एक-दूसरे के धर्म की समान बातें समझीं। लोगों के बीच यह विचार बैठने लगा कि एक ही ईश्वर है- उसे अल्लाह, ईश्वर, परमेश्वर, भगवान जैसे नामांे से जाना जाता है।

मिलने-जुलने के फायदे

जब दो अलग-अलग संस्कृति के लोग आपस में मिलते हैं तो एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखते हैं। जब अरबी लोग भारत आए तो वे अपने साथ वहाँ (अरब) के रीति-रिवाज व धर्म (इस्लाम) लाए। अरबों तथा भारतीयों ने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा इससे इनके रहन-सहन तथा जीवन में बदलाव आया। अरबों ने कई भारतीयों ग्रन्थों का अरबी भाषा में अनुवाद किया।

भारतीयों ने अरबों से सीखा	अरबों ने भारतीयों से सीखा
– कागज बनाना	– हिन्दी संख्या से अरबी संख्या बनाना
– चरखे से सूत कातना	– संख्याओं की गणना करना
– सिले हुए कपड़े-सलवार, कमीज	– ज्योतिष
– खान-पान- कचैड़ी, समोसा बनाना	– गणित
	– शतरंज का खेल
	– भारतीय संगीत
	– चिकित्सा शास्त्र (आयुर्वेद का ज्ञान)

तुर्क आक्रमण के समय भारत

उत्तर भारत में इस्लाम के आगमन के समय कोई शक्तिशाली शासक नहीं था। ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतवर्ष सौ से भी अधिक छोटी राजनीतिक इकाइयों अथवा राज्यों में विभक्त हो चुका था जिन पर कई छोटे-बड़े राजा और सामन्त शासन करते थे। इनमें अधिकांशतः राजपूत थे। अतः इस युग को 'राजपूत युग' कहा गया है। इन छोटे छोटे राज्यों के शासक व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु राज्य-विस्तार में संलग्न हो गए। इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक अव्यवस्था और अधिक बढ़ गई। ऐसे में केन्द्रीय सत्ता का ह्रास स्वाभाविक था।

समाज जाति-पाँति तथा भेद-भाव के बन्धन पर आधारित था। इस समय जाति-व्यवस्था में और अधिक कठोरता आ गई थी। भारतीय समाज अपने खान-पान एवं आचार-विचार को श्रेष्ठ समझता था। अतः दूसरे देशों में क्या हो रहा है ? उससे परिचित होने का न प्रयास किया गया और न ही लाभ उठाया गया।

हिन्दी संख्या

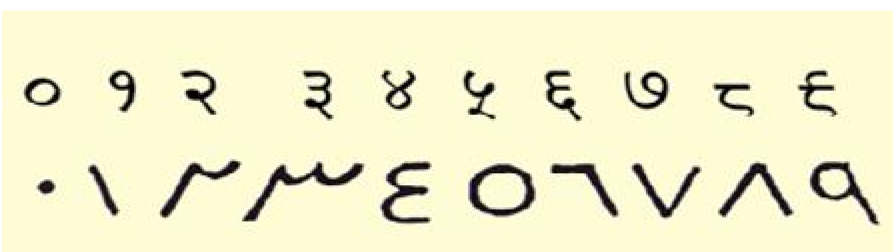

अरबी संख्या

तुर्क आक्रमण

उन दिनों भारत में कई छोटे-बड़े राजा और सामन्त थे। उत्तर भारत में चौहान, तोमर, गहड़वाल, चन्देल, चालुक्य जैसे राजपूत वंशों के राज्य थे। इसी समय तुर्कों ने, जिनका राज्य ईरान, अफगानिस्तान व तुर्किस्तान में था, भारत में अपना राज्य फैलाने के लिए आक्रमण प्रारम्भ किया।

महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण

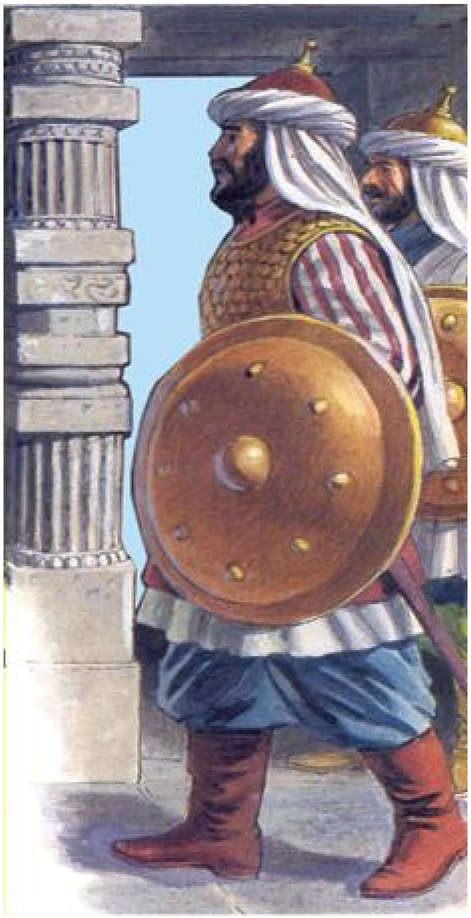

महमूद गजनवी

तुर्क लोगों द्वारा पहला बड़ा हमला तब हुआ जब गजनी राज्य (अफगानिस्तान) के महमूद गज़नवी नाम के तुर्क राजा ने भारत पर हमला किया, पर वह भारत में राज्य नहीं करना चाहता था। उसकी नज़रें ईरान, अफगानिस्तान व खुरासान के क्षेत्र में ही दूसरे तुर्क राजाओं को हराकर अपने राज्य गजनी को बढ़ाने में लगी थी।

जब महमूद गज़नवी भारत में राज्य नहीं करना चाहता था तो फिर वह भारत क्यों आया ? इसलिए कि वह अपनी सेना बनाने के लिए धन जुटाने की कोशिश कर रहा था। इस

कोशिश में उसने सन् 1000 से सन् 1025 तक 17 बार विभिन्न राजपूत राज्यों पर आक्रमण किया। उसने कई राजाओं को हराकर उनके धन पर कब्ज़ा किया। उन मंदिरों और बौद्ध मठों को तोड़ा व लूटा, जिनमें बहुत

धन दौलत इकट्ठी हुई थी। इसमें 1025 ई0 में सोमनाथ मन्दिर का आक्रमण सबसे प्रसिद्ध है।

सोमनाथ मन्दिर गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल में स्थित है। ये बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस मन्दिर को कई बार आक्रमणकारियों ने नुकसान पहुँचाया।

आधुनिक मन्दिर का निर्माण सरदार वल्लभ भाई पटेल के प्रयास से हुआ। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के हाथों 11 मई 1951 को यहाँ ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई।

अल्बरुनी की दृष्टि में भारत

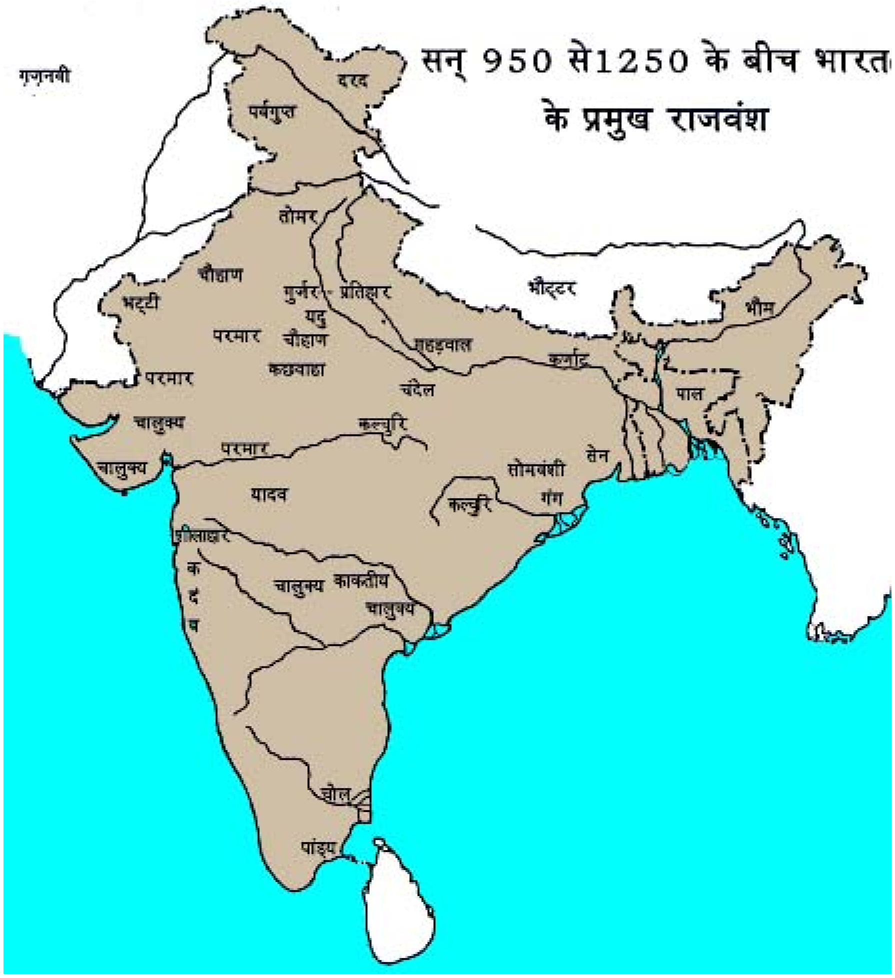

अल्बरुनी मध्य एशिया का प्रसिद्ध विद्वान था। इनका मूल नाम अबुरैहान मोहम्म्द बिन अहमद था। इनका जन्म 973 ई0 में खीवा में हुआ। अल्बरुनी महमूद गज़नवी का समकालीन था और वह भारत आया था। उसने यहाँ संस्कृत भाषा, भारतीय दर्शन और ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किया। अल्बरुनी ने अपनी पुस्तक तहकीक-ए-हिन्द में ग्यारहवीं शताब्दी में भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन (समाज, रीति-रिवाज, तौर-तरीके आदि) पर विस्तार से जानकारी दी है, जिसके मुख्य अंश निम्नलिखित हैं-

- विदेशियों के प्रति यहाँ के लोगों के विचार बहुत संकुचित थे। विदेशियों के तौर-तरीके, पहनावे के तरीके, खानपान उन्हें नहीं पसंद थे। इन्हीं कारणों से वे उन्हें म्लेच्छ कहते थे।

- भारत के लोग अपने-अपने पारम्परिक व्यवसाय को ही अपनाते थे।
- सभी को भोजन अलग थाल में परोसा जाता था। वे एक थाल में नहीं खाते थे।
- भारत में लोग दैनिक कार्यों को करने में शगुन को महत्त्वपूर्ण मानते थे।
- हिन्दुओं में ईश्वर के प्रति सम्मान और विश्वास है। उनका मानना है कि- ईश्वर एक है, अनादि है, अनन्त है, स्वतंत्र है, सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है, सबसे बुद्धिमान है, जीवंत है, जीवनदाता है, शासक है।
- भारतीय खगोल एवं खगोल विज्ञान व्यवस्था पाँच सिद्धान्त के रूप में दी गई है। पृथ्वी और ग्रह, उनका आकार और घूमना, सूर्य और चन्द्रग्रहण, अक्षांश और देशांतर, इनके पर्यवेक्षण के उपकरण तथा अन्य खगोलीय तथ्यों की भारतीय अवधारणाएँ हैं।
- भारतीय गणितज्ञ तथा खगोलशास्त्री योग्य हैं लेकिन उन्होंने इस ज्ञान के निष्कर्ष पर ध्यान नहीं दिया। पृथ्वी, तत्व, अंतरिक्ष तथा समय और इसके विभाजन में पुराणों में वर्णित पारम्परिक विचारों को ही भारतीयों ने मान्यता दी।

मुहम्मद गौरी

मुहम्मद गोरी अफगानिस्तान के गोर नामक स्थान का था। उसने गजनी पर 1173-74 ई0 में अधिकार कर लिया। भारत पर उसने पहला आक्रमण मुल्तान पर किया। मुल्तान पर विजय करने के बाद गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया। यहाँ उसे चालुक्य वंश के राजा मूलराज द्वितीय ने अपनी साहसी विध्ावा माँ नायिका देवी के नेतृत्व में आबू पहाड़ के निकट पराजित किया। यह भारत में उसकी पहली पराजय थी। इस पराजय के बाद गोरी ने अपने आक्रमण का मार्ग बदला। उसने पंजाब पर आक्रमण प्रारम्भ किया। 1190 ई0 तक उसने सम्पूर्ण पंजाब को जीत लिया।

मुहम्मद गौरी

पृथ्वीराज चौहान

पंजाब जीतने के बाद उसके राज्य की सीमाएँ दिल्ली और अजमेर के शासक पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चैहान) के राज्य से मिलने लगी।

पृथ्वीराज चैहान-जिन दिनों मुहम्मद गोरी भारत पर आक्रमण कर रहा था, उस समय चैहान (चाहमान) वंश के राजा पृथ्वीराज चैहान भी अपने राज्य का विस्तार करने में लगे हुए थे। पृथ्वीराज चैहान एक वीर, साहसी एवं योग्य सेना नायक था। उन्होंने कई राजपूत शासकों को पराजित किया इनमें चन्देल शासक, 'पर्मादिदेव' भी था। 'पर्मादिदेव' के आल्हा-ऊदल नाम के लोक प्रसिद्ध सेना नायकों ने भीषण युद्ध किया, पर वे युद्ध में मारे गए। भटिण्डा पर मुहम्मद गोरी के अधिकार कर लेने के बाद पृथ्वीराज चैहान तथा मुहम्मद गोरी के मध्य संघर्ष की स्थिति बन गई।

पृथ्वीराज चौहान

तराइन का युद्ध

मुहम्मद गोरी तथा पृथ्वीराज चैहान के मध्य पहला युद्ध तराइन (हरियाणा के करनाल जिले में) के मैदान (1191 ई0) में हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की हार हुई और वह जान बचाकर भागा।

मुहम्मद गोरी एक साल तक शान्त रहा। इस दौरान उसने अपनी सेना को शक्तिशाली बनाया। 1192 ई0 में उसने पुनः पृथ्वीराज चैहान पर आक्रमण किया। दोनों के बीच एक बार पुनः तराइन के मैदान में भीषण युद्ध हुआ। इस बार पृथ्वीराज चैहान की हार हुई। पृथ्वीराज चैहान को बन्दी बना लिया गया।

पृथ्वीराज चैहान को पराजित करने के बाद मुहम्मद गोरी ने 1194 ई0 में कन्नौज के शासक जयचन्द को चंदावार नामक स्थान पर पराजित किया। मुहम्मद गोरी एवं उसके सेनानायकों ने ग्वालियर, बयाना, बिहारा एवं बंगाल पर विजय प्राप्त की। मुहम्मद गोरी के मृत्यु के समय (1206 ई0) तक लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत उसके अधीन आ चुका था।

तुर्कों की जीत के कारण

इतिहासकार राजपूतों की हार व तुर्कों की जीत के अलग-अलग कारण बताते हैं। इतिहासकारों के बीच इस बात को लेकर सहमति नहीं है फिर भी मुख्य रूप से तुर्कों की जीत के निम्नलिखित कारण हैं-

- राजपूत राजाओं में एकता का अभाव।
- राजपूतों द्वारा पुरानी युद्ध प्रणाली व शस्त्रों का प्रयोग करना।
- तुर्क सेना के पास अच्छी नस्ल के घोड़े और फुर्तीले घुड़सवारों का होना।
- तुर्क सैनिकों का कुशल तीरंदाज होना।
- भारतीय समाज में व्याप्त ऊँच-नीच एवं छूआ-छूत की भावना।

- शब्दावली

तुर्क - मध्य एशिया व तुर्किस्तान के क्षेत्रों में रहने वाली जाति।

हिजरत - मुहम्मद साहब का मक्का छोड़कर मदीना जाना।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

    (क) इस्लाम धर्म के संस्थापक कौन थे ?

(ख) हजरत मोहम्मद के जन्म के समय अरब देश का जनजीवन कैसा था ?

(ग) अरबों तथा भारतीयों ने एक दूसरे से क्या-क्या सीखा ? सूची बनाइए।

(घ) महमूद गजनवी का भारत पर आक्रमण का क्या उद्देश्य था ?

(ङ) तुर्क आक्रमण के समय भारत की राजनैतिक दशा कैसी थी ?

(च) राजपूतों पर तुर्कों की विजय के क्या कारण थे ?

2. सही मिलान कीजिए-

तराइन का प्रथम युद्ध	1025 ई0
सिंध पर आक्रमण	622 ई0
सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण	1191 ई0
हिजरी सम्वत् का प्रारम्भ	712 ई0

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) तहकीक-ए-हिन्द पुस्तक के लेखक .... हैं।

(ख) तराइन का युद्ध .... और .... के मध्य लड़ा गया।

(ग) महमूद गजनवी ने भारत पर .... बार आक्रमण किया।

(घ) मुहम्मद गोरी को गुजरात में चालुक्य वंश के राजा ....ने पराजित किया।

प्रोजेक्ट वर्क-

निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित स्थान वर्तमान में किस देश में है। शिक्षक की सहायता एवं आई0सी0टी0 का प्रयोग करते हुए खोज कर लिखिए -

स्थान	देश	राजधानी	भाषा
सिन्ध			
खीवा			
गजनी			
गोर			
मदीना			

पाठ 2

सल्तनत काल की शुरुआत

तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चैहान की पराजय के पश्चात दिल्ली में तुर्क शासकों का राज्य स्थापित हो गया। इन तुर्क शासकों का रहन-सहन, भाषा, धर्म तथा शासन करने का तरीका भारतीय शासकों से अलग था। तुर्क शासक सुल्तान की उपाधि धारण करते थे। इन्होंने दिल्ली को शासन का केन्द्र बनाया और लगभग 320 साल तक शासन किया।

मोहम्मद गोरी की मृत्यु 1206 ई0 में हो गई। उसके मृत्यु के समय तक लगभग पूरा उत्तर भारत उसके अधीन हो चुका था। उसने भारत में शासन चलाने के लिए गुलाम अधिकारी नियुक्त कर रखे थे। इन्हीं में एक योग्य गुलाम अधिकारी कुतुबुद्दीन ऐबक था। गोरी की मृत्यु का समाचार मिलने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने स्वयं को भारत में तुर्क राज्य का शासक घोषित कर दिया। यह तुर्क राज्य अब

'तुर्क सल्तनत' कहलाया। अगले शासक इल्तुतमिश ने 1210 ई0 में सत्ता संभालने के साथ दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया। तब यह दिल्ली सल्तनत के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

आपको इस बात से हैरानी हो सकती है पर उन दिनों गुलाम रखने की प्रथा थी। तुर्किस्तान के युवकों को खरीद कर उन्हें युद्ध और प्रशासन के काम में प्रशिक्षण देकर सुल्तानों को बेचा जाता था। इसलिए वे गुलाम कहलाते थे। सुल्तान की सेवा में आने पर, योग्य और होनहार गुलामों को ऊँचे और ज़िम्मेदारी के पद भी सौंपे जाते थे। सुल्तान मोहम्मद गोरी की सेवा में भी ऐसे कई गुलाम थे और भारत में उसके राज्य का शासन चलाते थे।

सल्तनत (सुल्तनत) के सामने चुनौतियाँ

सरदार जिन्हें 'अमीर' कहा जाता था, तुर्क और अफगान कबीलों के होते थे। इनमें जातीय श्रेष्ठता तथा सल्तनत में ऊँचा स्थान पाने की भी होड़ रहती थी। इन्हीं अमीर सरदारों में से ही सुल्तान होता था। सुल्तान होने के लिए सैनिक योग्यता एवं शासकीय क्षमता का होना आवश्यक था। इन क्षमताओं के प्रभाव से वह सुल्तान बन सकता था और तभी तुर्क अमीरों का समर्थन प्राप्त करना भी सम्भव था। सुल्तान के लिए अमीर सरदारों का समर्थन और विश्वास जरूरी था। उसे हमेशा भय रहता था कि कहीं ये अमीर सरदार आपस में मिलकर कोई षड्यंत्र न करें। अतः सुल्तान का अधिकांश समय इन गुप्त षड्यंत्रों से बचने के उपायों में बीतता था। सुल्तानों को इन अमीर सरदारों में संतुलन भी बनाए रखना पड़ता था।

सुल्तान इस्लाम धर्मावलम्बी थे तथा बाहरी देशों से आए थे इसलिए भारतीय जनता पर शासन करने के लिए तुर्क अमीरों, उलेमा (धार्मिक वर्ग) आदि को खुश करने के साथ ही हिन्दुस्तानी जनता से भी सतर्क रहते थे क्योंकि सल्तनत में विद्रोहों का भय हमेशा बना रहता था।

सल्तनत कालीन शासकों ने आन्तरिक शान्ति बनाए रखने के लिए शासकीय प्रबन्ध तंत्र तथा राज्य विस्तार एवं बाह्य आक्रमणों से रक्षा के लिए मजबूत सैन्य संगठन भी बनाए। इनमें प्रारम्भिक तुर्क, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश एवं लोदी वंश प्रमुख थे।

प्रारम्भिक तुर्क शासक-गुलाम वंश(1206 ई0 -1290 ई0)

कुतुबुद्दीन ऐबक

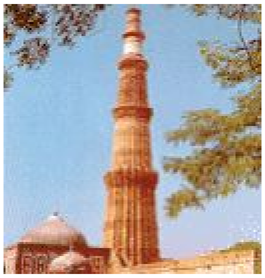

1206 ई. में मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात उसका तुर्क गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक उत्तर भारत का पहला तुर्की शासक था। उसकी उदारता के कारण ही उसे लाखबख्श कहा जाता था, अर्थात वह लाखों का दान करने वाला दानप्रिय व्यक्ति था। भारतवर्ष में उसके जीवन का अधिकांश समय सैनिक गतिविधियों में ही बीता।

अढ़ाई दिन का झोपड़ा

कुतुबुद्दीन ऐबक को भवन निर्माण में भी रुचि थी। उसने दिल्ली में कुतुबमीनार, कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' का निर्माण कराया। कुतुबमीनार की शुरुआत ऐबक ने की थी परन्तु इसको पूर्ण इल्तुतमिश ने कराया।

- चित्र देखकर बताइए कि कुतुबमीनार कितने मंजिल की है ?

कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में एक नये राज्य की नींव अवश्य डाली, पर उस राज्य को सुदृढ़ बनाने का अवसर उसे नहीं मिल पाया। कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु 1210 ई0 में चैगान खेलते हुए घोड़े से गिर कर हो गई।

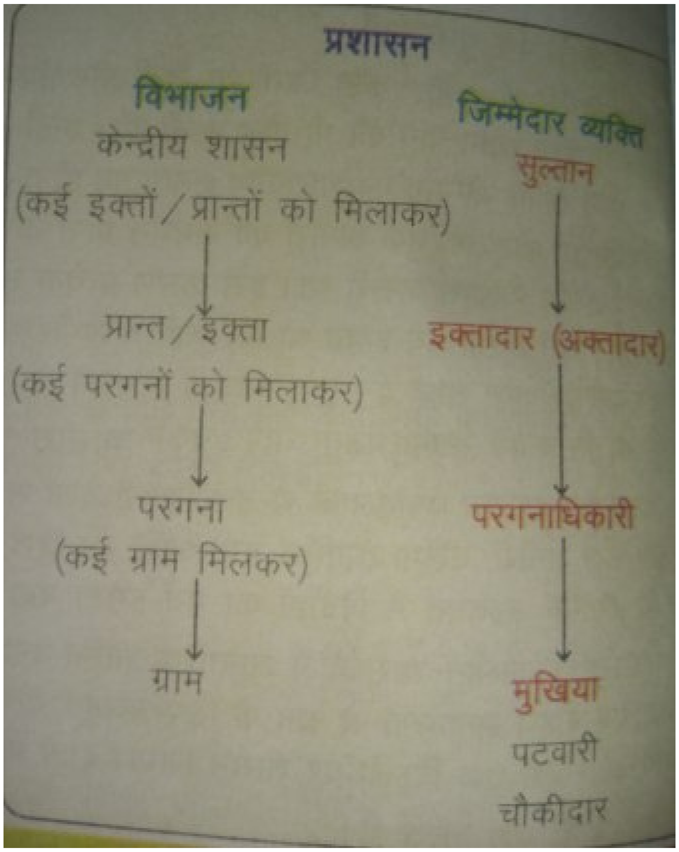

इल्तुतमिश (1210 ई0-1236 ई0)

1210 ई0 में कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात दिल्ली के अमीरांे ने इल्तुतमिश को गद्दी पर बैठाया। उसे ही उत्तरी भारत में तुर्कांे के राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। गद्दी पर बैठने के बाद उसे आन्तरिक और बाहरी समस्याओं से जूझना पड़ा। इल्तुतमिश ने चालीस गुलाम सरदारों का संगठन अर्थात तुर्कान-ए-चेहलगानी का निर्माण किया।

शासन व्यवस्था

इल्तुतमिश ने देश में एक राजधानी, एक स्वतंत्र राज्य, राजतंत्रीय प्रशासनिक व्यवस्था और अफसरशाही व्यवस्था की स्थापना की। उसने दिल्ली को भारत वर्ष में तुर्क साम्राज्य का राजनैतिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक केन्द्र बनाया। उसने 'इक्ता (अक्ता)' व्यवस्था के द्वारा केन्द्र को प्रान्तीय और स्थानीय शासन से जोड़ने की नींव डाली।

सुल्तान ने अपनी सल्तनत (राज्य) को कुछ प्रांतों में बाँटा। प्रांतों को 'इक्ता' कहते थे। हर इक्ते में सुल्तान अपने एक ज़िम्मेदार सेनापति को नियुक्त करता था, जिसे 'इक्तादार या

अक्तादार’ कहा जाता था।

क्या पिछली कक्षा में आपने स्थानीय शासन की ऐसी किसी सुनियोजित व्यवस्था के बारे में पढ़ा है ? सोचिए और बताइए।

इल्तुतमिश का साम्राज्य

इक्तादार के पास अपनी सेना होती थी और प्रशासन चलाने के लिए अधिकारी होते थे। इक्तादार इनकी सहायता से राज्य की रक्षा करते थे और राय एवं राणाओं से कर वसूल करते थे। अपने इक्ते से इकट्ठे किए गए कर से ही वे अपनाए अपने अधिकारियों का और अपने सैनिकों का खर्चा चलाते थे। इस खर्चे के ऊपर जो कर बचता था उसे अक्तादार सुल्तान को भेज देते थे।

हारे हुए राय.राणा अक्सर सोचते थे श्मैं क्यों अपने यहाँ का इतना सारा कर इकट्ठा करके तुर्कों को दूँ घ् मैं पहले की तरह खुद ही क्यों न रख लूँ घ् जब वे आकर मांगेंगे तब देखा

जायेगा।श् मौका देखकर राय.राणा आदि कर देना बंद कर देते थेए फिर सुल्तान या उसके इक्तादारों को ऐसे विद्रोही राजाओं व राणाओं पर हमला करके ज़बरदस्ती उनसे कर वसूल करना पड़ता था।

चाँदी का टंका

इल्तुतमिश ने मुद्रा व्यवस्था में सुधार करते हुए चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल चलाया। 1236 ई0 में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गयी। उसने अपने जीवन काल में ही अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

रजिया सुल्तान- प्रथम मुस्लिम महिला शासिका- (1236ई0-1240ई0)

इल्तुतमिश ने अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी बना दिया थाए परन्तु सरदारों तथा उलेमा के विरोध के चलते इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज गद्दी पर बैठ गया लेकिन दुर्बल शासक होने के कारण 1236 ई0 मंे रजिया दिल्ली की गद्दी पर बैठ ीऔर सुल्तान कही जाने लगी।

रजिया से पूर्व प्राचीन मिस्र और ईरान में महिलाओं ने रानियों के रूप में शासन किया था परन्तु मध्यकालीन विश्व में पहली मुस्लिम महिला शासक थी।

रजिया ने लगभग तीन वर्ष आठ माह शासन किया। रज़िया ने स्त्रियों का पहनावा छोड़ दिया और बिना पर्दे के दरबार में बैठने लगी। वह युद्ध में सेना का नेतृत्व भी करती। अमीरों को शीघ्र ही पता लग गया कि स्त्री होने पर भी रज़िया उनके हाथों की कठपुतली बनने को तैयार नहीं थी। तुर्क सरदार भी किसी महिला के अधीन कार्य करने को तैयार नहीं थे। उन्होंने एक षड्यंत्र के द्वारा उसे गद्दी से हटा दिया। रजिया के बाद उसका एक

भाई एवं दो भतीजे बारी.बारी से सुल्तान बनेए जो अयोग्य थे। अतः इल्तुतमिश के छोटे पौत्र नासिरुद्दीन महमूद को दिल्ली का सुल्तान बनाया गया।

सोचिए और बताइए कि उस समय लोगों व दरबारी अमीरों ने रजिया का विरोध क्यों किया होगा घ् यदि रजिया आज शासक होती तो क्या उसका विरोध होता ?

नासिरुद्दीन महमूद (1246ई0-1265ई0)

श्चालीस तुर्की अमीरों का दलश् इस समय अत्यधिक शक्तिशाली हो गया था। वे जिसे चाहते गद्दी से उतार देते थे और जिसे चाहते गद्दी पर बैठा देते थे। 1246 ई0 में इस दल ने इल्तुतमिश के पौत्र नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया।

महमूद ने एक अमीर जिसका नाम बलबन था को अपना नायक बनाया। बलबन ने धीरे.धीरे अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली और वह एक शक्तिशाली सरदार बन गया। 1265 ई0 में नासिरुद्दीन महमूद के बाद बलबन गद्दी पर बैठा।

बलबन (1265ई0-1287ई0)

बलबन

बलबन एक योग्य और अनुभवी शासक था। उसने अपने शासन काल में कई महत्वपूर्ण कार्य किये। उसने दिल्ली को सुरक्षित बनाने के लिए आस.पास के जंगलों को कटवाया तथा साफ करवाकर वहाँ पुलिस चौकियों का निर्माण कराया। इस प्रकार वह दिल्ली के आसपास रहने वाले मेवातियों के विद्रोह को रोकने में सफल रहा। मेवातियों के अलावा उसने अन्य विद्रोहों का भी दमन किया।

बलबन ने कानूनों को लागू करने में कठोरता बरती। उसने राजा के पद को प्रतिष्ठित बनाया। वह राजा को धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। बलबन का मानना था कि राजा को ईश्वर से शक्ति प्राप्त होती है। इसलिये उसके कार्यों की सार्वजनिक जाँच नहीं की जा सकती। इससे उसकी निरंकुशता सुरक्षित होती थी। इसलिए वह दरबार में अत्यंत गम्भीर मुद्रा में बैठता था। वह न तो कभी मज़ाक करता था और न ही हँसता था। उसने दरबार में निर्धारित ढंग से वस्त्र पहनकर आनेए बैठने आदि के बारे में नियम बनाये जिनका कठोरता से पालन किया जाता था। उसने सुदृढ़ व्यवस्था बनायी जिससे राज्य की पूरी खबरें गुप्तचर सुल्तान को देते थे। बलबन की प्रमुख विशेषता थी कि उसने सदैव न्याय को सुल्तान का प्रमुख कार्य समझा। उसने शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिये सेना पर भी ध्यान दिया। सैनिकों को संतुष्ट रखने के लिये उसने उनका वेतन सदैव समय पर दिया। उन्हें सक्रिय रखने के लिए निरन्तर अभ्यास पर बल दिया।

मंगोल आक्रमण

बलबन ने राज्य को बाहरी आक्रमणों से बचाने एवं मंगोलों की शक्ति को रोकने का प्रयास किया। तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में एशिया और यूरोप में आक्रान्ताओं की नयी लहर आयी।

यह नये आक्रमणकारी मंगोल थे, जिन्हें उस महान साम्राज्य के लिए सबसे अधिक जाना जाता है जिसका गठन उन्होंने चंगेज खाँ के नेतृत्व में किया।

तेरहवीं सदी का अंत होते-होते मंगोल साम्राज्य ज्ञात दुनिया के बड़े भाग तक फैल चुका था। चंगेज खाँ के नेतृत्व में उनकी शक्ति बहुत बढ़ गई थी।

चाँदी का टंका

मंगोल आक्रमण की भयंकरता को बलबन भलीभाँति अनुभव करता था। इसलिए उन्हें रोकने के लिए उसने मंगोलों के मार्ग में पड़ने वाले पुराने दुर्गों की मरम्मत करवाई तथा नये दुर्गों का निर्माण करवाया। वहाँ पर हृष्टपुष्ट सैनिकों एवं विश्वसनीय और अनुभवी अधिकारियों को नियुक्त किया। शस्त्र तथा भोजन आपूर्ति की पूर्ण व्यवस्था भी वहाँ पर की गई।

फारसी शब्द 'मुगल' का उद्भव मंगोल शब्द से हुआ है।

उसकी मृत्यु के बाद दिल्ली की गद्दी पर उसके वंश का शासन अधिक दिन तक न रह पाया, परन्तु दिल्ली को जो शक्ति बलबन ने प्रदान की, उसी के परिणामस्वरूप खिलजी सुल्तान अलाउद्दीन अपने साम्राज्य का विस्तार करने में सफल रहा।

- शब्दावली

मलिक	-	सरहद और पंजाब के मुसलमानों की एक सम्मानजनक उपाधि।
इक्ता	-	प्रान्तों को 'इक्ता' कहते थे।
मंगोल	-	मध्य एशिया, तिब्बत एवं चीन के क्षेत्रों में रहने वाली जाति।

सिजदा - घुटने पर बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना

पायबोस - सुल्तान के चरणों को चूमना।

अभ्यास

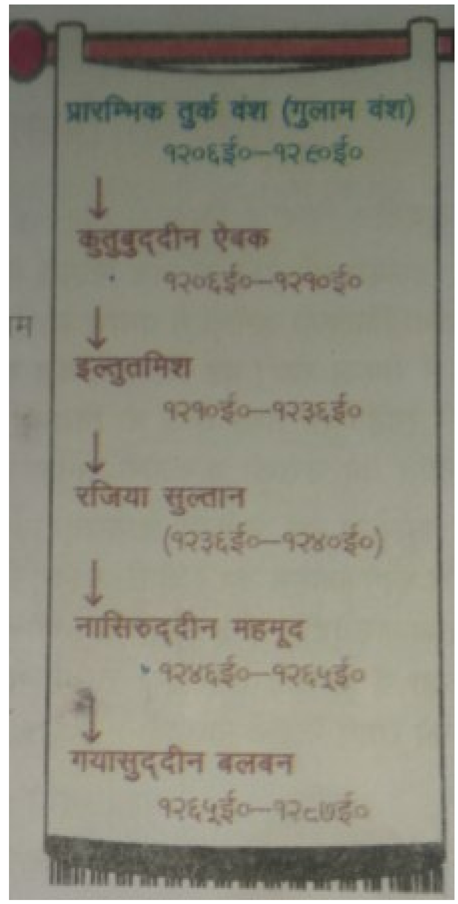

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

   (क) दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक किसे माना जाता है ?

   (ख) 'चालीस गुलाम सरदारों का संगठन' किस शासक ने बनाया ?

   (ग) कुतुबुद्दीन ऐबक को लाखबख्श क्यों कहा जाता है?

   (घ) दिल्ली सल्तनत में कौन-कौन से राजवंशों ने शासन किया ?

   (ङ) बलबन ने मंगोल आक्रमण से बचाव के लिए क्या किया ?

2. सही मिलान कीजिए-

   (क) अढ़ाई दिन का झोपड़ा रजिया

   (ख) टका एवं जीतल कुतुबुद्दीन ऐबक

   (ग) प्रथम मुस्लिम शासिका बलबन

   (घ) सिजदा और पायबोस इल्तुतमिश

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

   (क) 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' .... ने बनवाया था।

(ख) कुतुबमीनार को .... ने पूर्ण करवाया।

(ग) प्रान्त (इक्ता) का प्रधान अधिकारी .... कहलाता था।

(घ) इल्तुतमिश ने .... को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

प्रोजेक्ट वर्क

निम्नलिखित महिला राष्ट्राध्यक्ष किस देश की हैं। तालिका में लिखिए तथा सम्बन्धित देश का राष्ट्रध्वज का चित्र बनाकर रंग भरिए।

राष्ट्राध्यक्ष	देश का नाम
चन्द्रिका कुमार तुंग	
मार्गग्रेट थैचर	
जूलिया गिलार्ड	
एंजिला मार्केल	
मेघावती सुकर्णोपुत्री	
किम कैम्बल	

पाठ-3

सल्तनत का विस्तार - खिलजी वंश (1290 ई0-1320 ई0)

जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290ई0-1296ई0)

बलबन की मृत्यु के बाद दिल्ली की सत्ता पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए तुर्क तथा खिलजी (खलजी) सरदारों के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इस संघर्ष में खिलजी सरदार जलालुद्दीन फिरोज सुल्तान बने में सफल रहा। जलालुउद्दीन फिरोज खिलजी के पूर्वज अफगानिस्तान के 'खल्ज नामक' स्थान से भारत आये थे। अफगानों की भाषा में 'गर्म प्रदेश' को 'खल्ज' कहते हैं। अत: ये खिलजी (खलजी) कहलाए। जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने दिल्ली में खिलजी वंश की स्थापना की। वह एक उदार एवं सहिष्णु शासक था। उसने दंड के नियमों को मानवीय बनाने पर ध्यान दिया तथा विद्रोही तुर्क सरदारों को संतुष्ट करने की नीति अपनाई।

सुल्तान का भतीजा अलाउद्दीन जो कड़ा (इलाहाबाद) एवं अवध का इक्तादार तथा रक्षामंत्री था, देवगिरि पर आक्रमण करने के लिए स्वयं निकला। वहाँ उसे विजय के साथ-साथ अपार धन मिला। सुल्तान अपने भतीजे अलाउद्दीन के इस अभियान की सफलता के कारण उससे मिलने कड़ा (इलाहाबाद) की ओर चल पड़ा पर कड़ा में सुल्तान की हत्या उसके भतीजे अलाउद्दीन द्वारा कर दी गई। जलालुद्दीन की मृत्यु के बाद अलाउद्दीन खिलजी ने सिंहासन प्राप्त किया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 ई0-1316 ई0)

अलाउद्दीन खिलजी 1296 ई0 में दिल्ली के तख्त पर बैठा। वह महान विजेता, कुशल शासक और चतुर राजनीतिज्ञ था। उसके सुल्तान बनते समय दिल्ली सल्तनत में अव्यवस्था का बोल-बाला था। उलेमाओं का दखल शासन में बहुत बढ़ गया था। अमीर तथा सरदार विद्रोह कर रहे थे। मंगोल आक्रमणकारी लगातार हमले कर रहे थे। इन परिस्थितियों का सामना उसने बढ़े धैर्य तथा सुनियोजित योजना बनाकर किया। सबसे पहले उसने जलालुद्दीन खिलजी की उदार एवं सहिष्णु नीति का त्याग कर कठोर नियमों को लागू किया। इन कठोर नियमों तथा सुनियोजित योजनाओं के बल पर वह विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहा।

प्रशासन में राज्य और धर्म का अलगाव

अलाउद्दीन को शासन के मामले में धर्मगुरुओं (उलेमा) का दखल पसन्द नहीं था। इसलिए वह शासन सम्बन्धी नियम बनाने और उन्हें लागू करने में उनकी बातों को नहीं मानता था।

सैनिक सुधार

अलाउद्दीन खिलजी की विजयों का श्रेय उसकी सुसंगठित सेना को था। अलाउद्दीन ने एक विशाल स्थायी सेना का संगठन किया। उसकी सेना में 4,75,000 सैनिक थे। सैनिकों की नियुक्ति उनकी घुड़सवारी, शस्त्र चलाने की योग्यताओं के आधार पर की जाती थी। सैनिकों के हुलिया का पूरा विवरण रखा जाता था। सैनिकों को नगद वेतन देने की प्रणाली अपनाई गई और घोड़ों पर दाग लगाने की व्यवस्था प्रारम्भ की। अपने विस्तृत साम्राज्य की सुरक्षा के लिए उसने अनेक नये किलों का निर्माण कराया तथा पुराने किलों की मरम्मत करवाई। इन किलों को रसद आपूर्ति की भी पूरी व्यवस्था की गई।

राज्य विस्तार

सुल्तान बनने के बाद अलाउद्दीन ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहा। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने गुजरात, रणथम्भौर, चित्तौड़, उज्जैन, माण्डू, धार तथा चन्देरी के राजपूत राजाओं को हराकर उनके राज्यों पर अधिकार कर लिया।

अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने दक्षिण भारत के देवगिरि, तेलंगाना (वारंगल) और होयसल राज्यों पर विजय प्राप्त की और उन्हें सुल्तान की अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया। इन शासकों को इस शर्त पर अपने राज्य में शासन करने दिया गया कि वे सुल्तान को कर देते रहेंगे एवं उसकी अधीनता स्वीकार करेंगे।अलाउद्दीन ने दक्षिण के राज्यों को अपने राज्य में क्यों नहीं मिलाया ? इस तरह की नीति गुप्त साम्राज्य के किस शासक ने अपनायी थी ? तुलनात्मक चर्चा कीजिए।

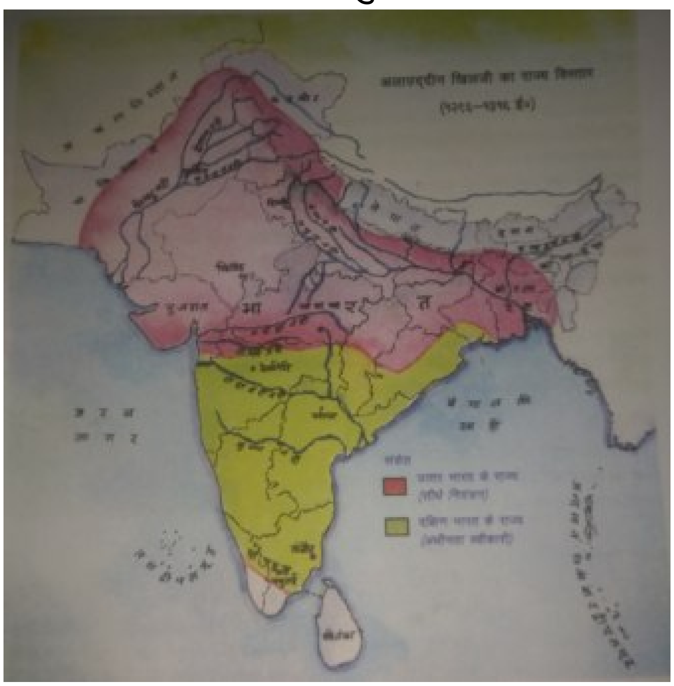

अमीरांे तथा सरदारों पर नियंत्रण

अलाउद्दीन का मानना था कि दावतों तथा उत्सवों में मिलने से अमीरों तथा सरदारों में निकटता तथा आत्मीयता बढ़ती है जिससे सुल्तान के प्रति षड्यन्त्र एवं विद्रोह करने का अवसर मिलता है। अतः विद्रोहों को रोकने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने दरबार के अमीरों तथा सरदारों पर कठोर प्रतिबन्ध लगाये। उनके इलाकों पर राज्य द्वारा अधिकार कर लिया गया। अमीरों की दावतों, मदिरापान एवं गोष्ठियों पर भी नियंत्रण लागू किया गया। सुल्तान की पूर्व आज्ञा के बिना अमीर सामाजिक समारोहों का आयोजन नहीं कर सकते थे। गुप्तचर सदैव उन पर नजर भी रखते थे।

इन प्रतिबन्धों से सरदार और अमीर भयभीत रहते थे। सुल्तान के विरुद्ध किसी को सिर उठाने का साहस नहीं था। इस प्रकार उसका अमीरों पर पूर्ण नियंत्रण था।

मंगोल आक्रमणों का प्रतिरोध

भारत की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर मंगोलों के आक्रमण होते रहते थे। अलाउद्दीन के समय में भी मंगोलों ने कई बार आक्रमण किये। मंगोलों के आक्रमणों से सुरक्षा के लिए अलाउद्दीन ने बलबन की भाँति पुराने किलों की मरम्मत करवाई और नये किलों का निर्माण करवाया। इन किलों में उसने योग्य और कुशल सेना रखी। यह सेना मंगोलों के आक्रमणों को रोकती थी।

कृषि नीति

अलाउद्दीन पहला मध्यकालीन शासक था जिसने लगान का सही अनुमान लगाने के लिए भूमि को 'गज' से नापने की प्रथा शुरू की। 60 वर्ग गज़ का एक बीघा होता था। खराज़ (लगान) पैसों में नहीं बल्कि अनाज (खाद्यान्न) के रूप में वसूल किया जाने लगा, ताकि नगरों को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न पहुँचाया जा सके।

बाजार नियंत्रण

अलाउद्दीन को मंगोल आक्रमणों से राज्य की सुरक्षा तथा सल्तनत विस्तार के लिए एक बड़ी सेना रखना जरूरी था। इन सैनिकों को उनकी जरूरतों के अनुसार वेतन देने में खजाना खाली हो जाता था। अतः उसने कम वेतन में सैनिकों का खर्च चलाने के लिए बाजार नियंत्रण लागू किया। उसने दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं के मूल्य निश्चित कर दिये जिससे निश्चित वेतन पाने वाले सैनिक भी अपना निर्वाह कर सकें।

बाजार व्यवस्था की सफलता के लिये कुशल एवं ईमानदार कर्मचारी नियुक्त किये जिनका प्रमुख शहना (अधीक्षक) कहलाता था, जो व्यापारियों पर नियत्रंण रखता था। दुकानदारों को बाजार के नियमों का पालन करना पड़ता था। यदि कोई दुकानदार वस्तुओं की कीमत अधिक लेता या माप, तौल में कम देता था तो उसे कठोर दण्ड दिया जाता था। बाजार के भावों और सामानों पर निगरानी रखने के लिए गुप्तचर व्यवस्था को दुरुस्त किया गया। सुल्तान को प्रतिदिन बाजार की पूर्ण सूचना प्राप्त होती थी। कभी-कभी सुल्तान स्वयं भी वस्तुओं और उनके मूल्यों की जाँच करता था। इस व्यवस्था का परिणाम यह हुआ कि दुकानदार वस्तुओं का अधिक मूल्य लेने का साहस नहीं कर पाते थे। कुशल बाजार नियंत्रण के लिये सरकारी गोदाम भी स्थापित किये गये। अकाल पड़ने के समय गोदामों से खाद्यान्न

की आपूर्ति की जाती थी। वह पहला शासक था, जिसने 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' की शुरुआत की।

वर्तमान समय में मूल्य नियंत्रण एवं बाजार प्रबन्ध के लिए क्या व्यवस्था है ? यह उस समय की व्यवस्था से कितनी भिन्न व कितनी समान है ?

साहित्य व कला का विकास

प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो व बरनी उसके दरबार में रहते थे। अमीर खुसरो अपनी पहेलियों, दोहों और कव्वालियों के लिए प्रसिद्ध हैं।

एक गुणी ने यह गुण कीना,

हरियल पिंजरे में दे दीना,

देखा जादूगर का कमाल,

डाला हरा निकला लाल।

(PAAN)

अलाउद्दीन ने दिल्ली में कुतुबमीनार के निकट कुव्वत्तुल इस्लाम मस्जिद के एक द्वार के रूप में अलाई दरवाजा बनवाया।

उसने दिल्ली में एक विशाल टैंक का निर्माण कराया जिसे हौज खास के नाम से जाना जाता है। उसने दिल्ली में हजार खम्भा महल का भी निर्माण कराया।

शब्दावली -

उलेमा - धर्मगुरू या धर्माधिकारी (आलिम अथवा शिक्षित का बहुवचन)

खराज़(लगान) - भूमि पर खेती करने वालों से लिया जाने वाला कर (टैक्स)

घोड़ों पर दाग - घोड़ों की संख्या एवं इनकी पहचान के लिए उनकी पीठ पर दाग लगाने की परम्परा थी।

हुलिया - किसी व्यक्ति के रंगरूप आदि का ब्यौरा।

रसद - भोजन-सामग्री

अभ्यास

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) जलालुद्दीन खिलजी के बाद दिल्ली का सुल्तान कौन बना?

(ख) अलाउद्दीन ने भारत के किन-किन राज्यों को जीता ?

(ग) सेना को शक्तिशाली बनाने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने क्या उपाय किया ?

(घ) अलाउद्दीन खिलजी ने वस्तुओं के मूल्य क्यों निश्चित कर दिये ?

(ङ) अमीरों तथा सरदारों को अलाउद्दीन खिलजी ने कैसे नियन्त्रित किया ?

6. सही कथन के सामने सही ( ) का निशान और गलत कथन के सामने गलत (*) का निशान लगाइए-

(क) खिलजी वंश का संस्थापक अलाउद्दीन खिलजी था।

(ख) मलिक काफूर अलाउद्दीन का सेनापति था।

(ग) खराज़ (लगान) निश्चित करने के लिए भूमि को ‘गज’ से नापा जाता था।

(घ) अमीर खुसरो जलालुद्दीन फिरोज के दरबार का प्रमुख विद्वान था।

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) जलालुद्दीन खिलजी .... ई0 में दिल्ली का सुल्तान बना।

(ख) मलिक काफूर ने दक्षिण के तीन राज्यों 1. .... 2. .... 3. .... पर विजय प्राप्त की।।

(ग) अलाई दरवाजा का निर्माण ....ने दिल्ली में करवाया।

(घ) अलाउद्दीन खिलजी ने सन् .... ई0 से .... ई0 तक शासन किया।

प्रोजेक्ट वर्क-

निम्नलिखित दैनिक उपयोग की वस्तुओं का मूल्य सरकारी राशन की दुकान तथा सामान्य बाजार से पता कर तालिका में लिखो।

वस्तु	सरकारी राशन की दुकान पर मूल्य	बाजार में मूल्य
1. गेंहूँ (प्रति कि0ग्रा0)		
2. चावल (प्रति कि0ग्रा0)		
3. केरोसिन आॅयल (प्रति ली0)		
4. नमक (प्रति कि0ग्रा0)		

DPFNAH पाठ-4

तुगलक काल (1320 ई0 - 1412 ई0)

"खिलजी वंश के बाद दिल्ली में तुगलक वंश का शासन स्थापित हुआ। तुगलक वंश के शासकों ने दिल्ली सल्तनत का विस्तार सुदूर दक्षिण तक कर दिया। इस वंश के शासकों ने राज्य के विस्तार के साथ-साथ प्रजा हित के कार्यों जैसे-सड़क, पुल, नहर, चिकित्सालय आदि के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया।"

गयासुद्दीन तुगलक (1320 ई0-1325 ई0)

तुगलक वंश का प्रथम शासक गयासुद्दीन तुगलक था। इसने अलाउद्दीन खिलजी की कठोर नीति को त्याग कर उदारता की नीति अपनाई। इन्होंने प्रजा के असंतोष को कम करने के लिए 'कर' को कम कर दिया, साथ ही साथ कृषि को प्रोत्साहन दिया।

मुहम्मद बिन तुगलक(1325 ई0-1351 ई0)

मुहम्मद बिन तुगलक

गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जौना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से 1325 ई0 में सुल्तान बना। इन्हें दिल्ली सल्तनत का सबसे विद्वान सुल्तान माना जाता है। इन्हीं के शासन काल में मोरक्को के यात्री इब्नबतूता भारत आया। इब्नबतूता ने अपनी पुस्तक 'रेहला' में भारत यात्रा का वर्णन किया है।

मुहम्मद तुगलक की योजनाएँ

सुल्तान ने साम्राज्य की प्रगति और सुव्यवस्था के लिए कई नवीन योजनाएँ चलाईं जिससे आर्थिक सुधार हो सके। सुल्तान के द्वारा चलाई गई ये योजनाएँ प्रायः असफल रहीं क्योंकि उसने उनको सही तरीके से लागू नहीं किया। ये योजनाएँ निम्नवत थीं -

दोआब में कर वृद्धि

राज्य की आय बढ़ाने के लिए मुहम्मद बिन तुगलक ने गंगा एवं यमुना के बीच समृद्ध एवं उर्वरक भूमि ”दोआब“ में कर बढ़ाने का एक प्रयोग किया। उसने वहाँ भूमिकर में वृद्धि की तथा कुछ अन्य करों की भी वसूली शुरू कर दी। जिस समय यह कर लगाया गया, उस समय यहाँ भयानक अकाल पड़ा था, किन्तु निरंकुश शासक के भय से अधिकारियों ने सुल्तान को इसकी जानकारी नहीं दी एवं बढ़े कर की वसूली जारी रखी। अतः खेती बर्बाद हो गई तथा किसान अपने घर छोड़कर जंगलों में छिप गए। इन कारणों से लोगों ने कर देने से इनकार कर दिया और विद्रोह कर दिया। बाद में सुल्तान ने राहत के लिए बीज व ऋण की व्यवस्था भी की, किन्तु तब तक विलम्ब हो चुका था। अतः सुल्तान की कर बढ़ाने की योजना असफल हो गई।

राजधानी परिवर्तन

राजधानी परिवर्तन वस्तुतः एक द्वितीय राजधानी की योजना थी। मुहम्मद तुगलक के शासन काल तक दिल्ली सल्तनत का राज्य एक बड़े साम्राज्य का रूप धारण कर चुका था। इसमें मालाबार को छोड़कर दक्खन के सभी राज्य जुड़ चुके थे। अतः दक्षिण के इन राज्यों को कुशल प्रशासक देने के लिए द्वितीय राजधानी की योजना बनाई गई।

मानचित्र देखकर दिल्ली व देवगिरि का पता लगाइए।

दिल्ली से दौलताबाद

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन

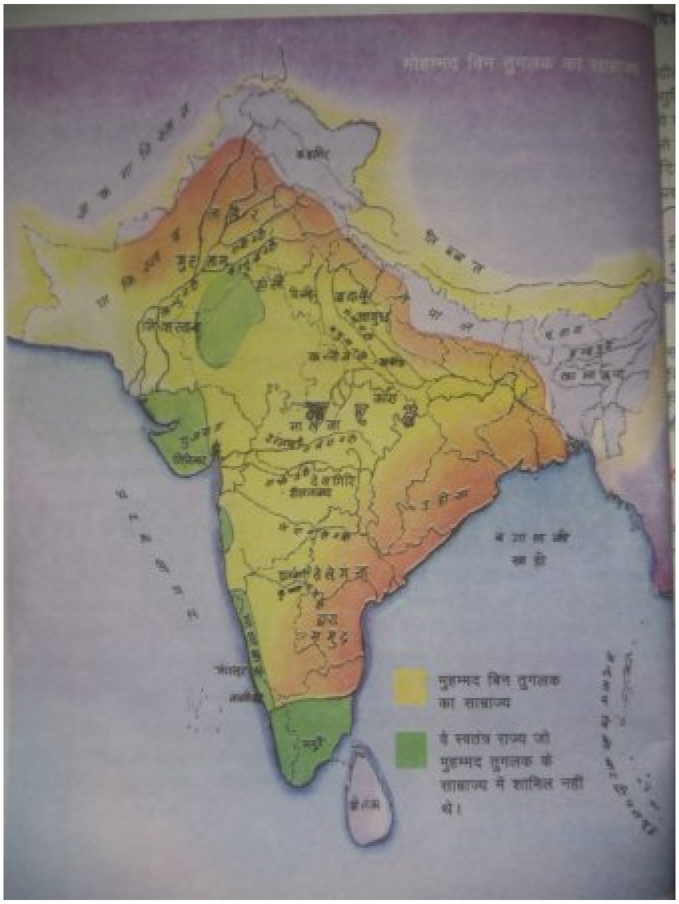

सुल्तान ने दिल्ली के स्थान पर देवगिरि को राजधानी बनाने का विचार बनाया। देवगिरि का नाम दौलताबाद रखा गया। दिल्ली से दौलताबाद जाते समय लोगों को रास्ते में कष्ट न होए इसलिए राज्य द्वारा सुविधायें भी दी गई थीं। रास्ते का कष्ट तथा दौलताबाद की जलवायु दिल्लीवासियों को रास नहीं आयी। वे वहाँ से दिल्ली वापस आना चाहते थे। दक्षिण का रहन सहनए खान.पानए वेशभूषा तथा मौसम आदि दिल्ली से भिन्न था। करीब दो वर्ष बाद सुल्तान ने दौलताबाद छोड़ने का निर्णय लिया। उसे महसूस हुआ कि जैसे दिल्ली से दक्षिण पर नियंत्रण कठिन हैए उसी प्रकार दक्षिण से दिल्ली पर नियंत्रण रखना कठिन है। इस प्रकार सुल्तान की द्वितीय राजधानी की योजना भी असफल हो गई।

इसी प्रकार अंग्रेजों ने भी दिल्ली के साथ शिमला को अपनी द्वितीय राजधानी के रूप में विकसित किया था। होली के बाद दिल्ली की भीषण गर्मी से बचने के लिए वह शिमला चले जाते थे और वहीं से प्रशासन की देख.रेख करते थे।

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन

सांकेतिक मुद्रा

जिस समय सुल्तान ने सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन की योजना बनाई उस समय विश्व में चाँदी उत्पादन में काफी कमी आ गई थी। उस समय चाँदी के सिक्कों का प्रचलन था। सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर मिश्रित धातु के सिक्के चलाने का आदेश दिया। इन सिक्कों का मूल्य चाँदी के सिक्कों के बराबर ही माना गया।

वर्तमान में चलने वाले सिक्कों के चित्र अपनी अभ्यास पुस्तिका में बनाइए तथा बताइए कि यह सिक्के किस धातु के बने हैं ?

सांकेतिक सिक्कों के प्रचलित होते ही लोगों ने जाली सिक्के बनाना शुरू कर दिया। थोड़े ही दिनों में इन सिक्कों की भरमार हो गयी। विदेशी व्यापारियों ने सिक्कों को लेना बन्द कर दिया। अतः भारत की चाँदी यहाँ से बड़ी मात्रा में बाहर जाने लगी। सुल्तान ने सांकेतिक सिक्के बन्द कर दिए। इन सिक्कों के बदले राजकोष से चाँदी के सिक्के दिये गये।

सांकेतिक मुद्रा (ताँबे एवं पीतल के मिश्रित सिक्कों) पर यदि कोई राजचिह्न अंकित होता और सरकारी टकसाल पर उचित नियंत्रण होता तो शायद यह स्थिति न आती। इस योजना से राजकोष पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

मुहम्मद तुगलक द्वारा लागू की गयी सारी योजनाएँ असफल रहीं। यदि उसके स्थान पर आप होते तो क्या करते ?

सुल्तान अपने शासन के अन्तिम काल में राज्य की आन्तरिक अशान्ति से परेशान रहा। उत्तर एवं दक्षिण दोनों भागों में विद्रोह शुरू हो गये। केन्द्रीय शासन प्रणाली होने के कारण

सुल्तान स्वयं दोनों स्थानों पर पूर्ण नियन्त्रण न रख सका। दक्षिण में दो नये राज्यों विजय नगर राज्य तथा बहमनी राज्य का उदय हुआ। पूरब में बंगाल स्वतंत्र हो गया। सुल्तान अपने शासन के अन्तिम सोलह वर्षों तक विद्रोहों को शान्त करने में एक तरफ से दूसरी तरफ भागता रहा। सिन्ध में विद्रोह के समय मुहम्मद बिन तुगलक बीमार पड़ा और 1351 ई0 में यहाँ उसकी मृत्यु हो गयी।

फिरोजशाह तुगलक (1351 ई0 - 1388 ई0)

1351 ई0 में मुहम्मद तुगलक की मृत्यु के बाद उसका चचेरा भाई फिरोज तुगलक दिल्ली का सुल्तान बना। मोहम्मद तुगलक के शासन के अन्तिम काल में साम्राज्य के विभिन्न भागों में बार-बार विद्रोह हो रहे थे। अतः गद्दी पर बैठते ही सुल्तान के लिए पहली समस्या यह थी कि विद्रोहों को शान्त कर साम्राज्य के विघटन को कैसे रोका जाय। इसके लिए उसने अमीरों, सेना तथा उलेमा वर्ग को सन्तुष्ट करने का प्रयास किया और इस्लाम के नियमों के अनुसार राज्य प्रशासन चलाया। सुल्तान ने साम्राज्य को बढ़ाने के लिए कोई सैनिक अभियान नहीं किया। जो भी आक्रमण किए गए वह साम्राज्य की रक्षा के लिए किए गए। उसने उन्हीं प्रदेशों को अपने पास रखने की कोशिश की जिनका शासन केन्द्र से आसानी से हो सकता था। उसका शासनकाल जनकल्याणकारी कार्यों के लिए प्रसिद्ध था।

फिरोजशाह तुगलक का मकबरा, दिल्ली

लोक हित के कार्य

कृषि की सिंचाई हेतु उसने कई नहरों का निर्माण कराया जैसे- यमुना नहर, सतलज नहर आदि जिनसे आज भी सिंचाई होती है। इससे कृषि की उन्नति हुई। बंजर भूमि से प्राप्त आमदनी को धार्मिक एवं शैक्षिक कार्यों में खर्च किया। सुल्तान ने जौनपुर, फिरोजपुर तथा फिरोजाबाद आदि नये नगरों की स्थापना की। उसने प्रजा के लिए सरायों, जलाशयों, अस्पतालों, बगीचों तथा पुलों का निर्माण एवं मरम्मत करवाई। दीवाने-खैरात विभाग की स्थापना की, जिससे विधवाओं, अनाथों एवं लड़कियों के विवाह के लिए आर्थिक सहायता दी जाती थी। सरकारी खर्च पर योग्य वैद्यों द्वारा औषधियाँ एवं भोजन दिये जाने की व्यवस्था की थी। बेरोजगार लोगों को नौकरी देने हेतु उसने सर्वप्रथम एक रोजगार कार्यालय स्थापित किया।पूर्ववर्ती शासकों द्वारा दी जाने वाली कठोर यातनाओं को बन्द किया। लोकहित के कार्यों के कारण फिरोज तुगलक को याद किया जाता है।

पता कीजिए आज भी आपके जनपद में लोकहित की कौन-कौन सी योजनाएँ चल रही हैं और उन्हें कौन लागू करता है ?

इन्हें भी जानिए

फिरोज तुगलक ने अशोक के दो स्तम्भों को दिल्ली मँगवाया और उसमें से एक को अपने राजमहल के परिसर में लगवाया। फिरोजशाह कोटला में स्थित अशोक स्तम्भ की ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।

स्वच्छता के सात आयाम - मानव मल का सुरक्षित निपटान, व्यक्तिगत स्वच्छता, पीने के पानी का रख-रखाव, घर एवं भोजन की स्वच्छता, कूड़ा-करकट का सुरक्षित निपटान, बेकार पानी की निकासी, ग्रामीण स्वच्छता।

शब्दावली

दोआब - दो नदियों के बीच का क्षेत्र जैसे गंगा, यमुना का दोआब।

टकसाल - वह स्थान जहाँ मुद्रा ढाली जाती थी।

सांकेतिक मुद्रा - ताँबे व पीतल की मिश्रित धातु से बनी मुद्रा जिसका मूल्य चाँदी के सिक्के के बराबर होता था।

दीवाने खैरात - जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता प्रदान करने वाला विभाग।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

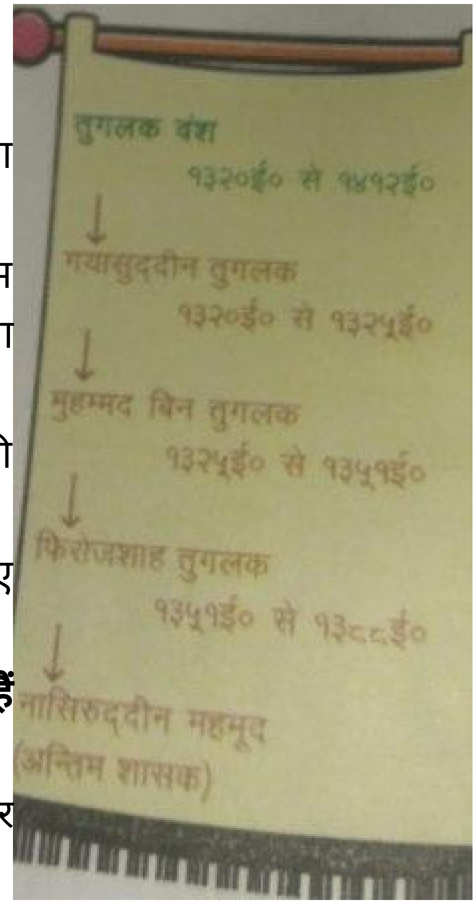

(क) तुगलक वंश की स्थापना किसने की?

(ख) गयासुद्दीन की मृत्यु के बाद दिल्ली का सुल्तान कौन बना ?

(ग) मुहम्मद तुगलक के शासन के अन्तिम काल में दक्षिण भारत में किन दो नए राज्यों की स्थापना हुई।

(घ) मुहम्मद तुगलक ने राजधानी परिवर्तन की योजना क्यों बनाई ?

(ङ) फिरोज तुगलक ने प्रजा हित के लिए कौन-कौन से कार्य किए ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे कुछ विकल्प दिए हैं सही विकल्प के सामने के गोले को काला करें।

(क) मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली के स्थान पर द्वितीय राजधानी के रूप में किसे चुना ?

लखनौती देवगिरि आगरा उज्जैन

(ख) मुहम्मद तुगलक ने चाँदी के स्थान पर सिक्के चलाए-

सोने के मिश्रित धातु के कागज के चमड़े के

(ग) फिरोजपुर नगर की स्थापना की थी-

गयासुद्दीन तुगलक मुहम्मद तुगलक

फिरोजशाह तुगलक खिज्र खां

प्रोजेक्ट वर्क -

पता करके बताइए कि भारत के किस प्रदेश में दो राजधानियाँ हैं भारत के मानचित्र में उस प्रदेश तथा उसकी राजधानियों को चिन्ह्ति कीजिए।

आपके विद्यालय में छात्र-छात्राओं को सरकार की ओर से कौन-कौन सी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं ? समूह में चर्चा करके इसकी एक सूची बनाइए।

पाठ-5

सल्तनत का विघटन

फिरोज़ तुगलक के उत्तराधिकारी अत्यधिक अयोग्य और शक्तिहीन थे। उन्होंने अपना अधिकांश समय मनोविनोद तथा पारस्परिक संघर्ष में ही लगाया। परिणामस्वरूप प्रान्तीय गवर्नरों ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। सल्तनत का बचा-खुचा वैभव दिल्ली में 1398 ई0 में हुए तैमूर के आक्रमण से समाप्त हो गया।

तैमूर का आक्रमण

तैमूर लंग

सन् 1398 में उत्तर भारत पर फिर मध्य एशिया की सेनाओं का आक्रमण हुआ। तुर्क सरदार तैमूर ने जिसे तैमूरलंग भी कहा जाता है, अपनी विशाल सेना लेकर भारत पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण का उद्देश्य केवल उत्तर भारत पर आक्रमण करना और लूट का माल लेकर मध्य एशिया लौट जाना था। तैमूर के सैनिकों ने दिल्ली में प्रवेश किया। उन्होंने नगर को लूटा और नगर निवासियों की हत्या की। जब उन्होंने पर्याप्त मात्रा में धन

लूट लिया तब वे समरकंद लौट गए। तैमूर ने समरकंद जाते समय खिज्र खाँ को पंजाब का गवर्नर (शासक) नियुक्त किया।

सैय्यद वंश (1414 ई0 से 1451 ई0)

अन्तिम तुगलक शासक नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद खिज्र खाँ ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया और सैय्यद वंश की नींव डाली। खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि धारण न कर, रैयत-ए-आला उपाधि धारण की। वह जीवन भर तैमूर के वंशजों का वफादार बना रहा और उन्हें राजस्व तथा उपहार भेजता रहा।

लोदी वंश (1451 ई0-1526 ई0)

दिल्ली सलतनत का अन्तिम राजवंश लोदी वंश था। 1451 ई0 दिल्ली के अमीरों ने सरहिन्द के सूबेदार बहलोल लोदी को आमंत्रित कर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा दिया। लोदी शासक तुर्क न होकर 'अफगान' थे।

बहलोल लोदी (1451 ई0-1489 ई0)

बहलोल लोदी ने सल्तनत को संगठित करने का प्रयत्न किया। उसने जौनपुर पर आक्रमण कर शर्की शासकों को पराजित कर अपने अधीन कर लिया।

सिकंदर लोदी (सन् 1489 ई0 से 1517 ई0)

बहलोल लोदी के बाद उसका पुत्र निजाम खाँ सुल्तान सिकन्दर शाह नाम से सिंहासन पर बैठा। उसने 1504 ई0 में अपनी राजधानी दिल्ली से हटा कर नये नगर में स्थापित किया। जो बाद में आगरा नाम से प्रसिद्ध हुआ। सिकन्दर लोदी की साहित्य के प्रति विशेष रुचि थी। उसके शासन काल में कई ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद हुआ। जिनमें एक आयुर्वेदिक ग्रन्थ का नाम 'फरहंगे सिकन्दरी' रखा। वह स्वयं भी 'गुलरुखि' उपनाम से कविता लिखता था। उसने राज्य की आर्थिक दशा सुधारने के लिए वस्तुओं का मूल्य नियंत्रित किया एवं राजस्व बढ़ाने के लिए भूमि नाप के आधार पर भू-राजस्व निर्धारित किया। उसने नाप के लिए पैमाना गज-ए-सिकन्दरी चलाया जो 30 इंच का होता था।

इब्राहिम लोदी (सन् 1517 ई0 से 1526 ई0)

सिकन्दर लोदी के बाद उसका पुत्र इब्राहिम लोदी सिंहासन पर बैठा इनके समय में सुल्तान तथा अफगान सरदारों के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हो गया। अफगान सरदार सुल्तान

की शक्तिशाली स्थिति से प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने इब्राहिम लोदी के खिलाफ षड़यन्त्र प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार षड़यन्त्रकारी अफगान सरदारों की मदद से काबुल के शासक बाबर ने इब्राहिम लोदी को पानीपत के मैदान में 1526 ई0 में पराजित किया। इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया और भारत में लोदी वंश के साथ ही दिल्ली सल्तनत का भी अन्त हो गया।

दिल्ली सल्तनत के पतन के कारण-

दिल्ली सल्तनत में उत्तराधिकार के नियम का अभाव था। शासक की मृत्यु हो जाने के बाद राजपरिवार में सत्ता के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो जाता। इस प्रकार के आपसी संघर्ष ने आपसी विश्वास की भावना को कम कर दिया, जो आगे चलकर सल्तनत के पतन का कारण बना।

अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली सल्तनत को सुदूर दक्षिण तक पहुँचाया दिल्ली से अत्यधिक दूरी होने के कारण इन पर नियंत्रण रखना सम्भव नहीं था।

तैमूर के आक्रमण ने दिल्ली सल्तनत की शक्ति को कमज़ोर कर दिया जिससे अधीनस्थ राज्य स्वतन्त्र होने लगे

समय रेखा

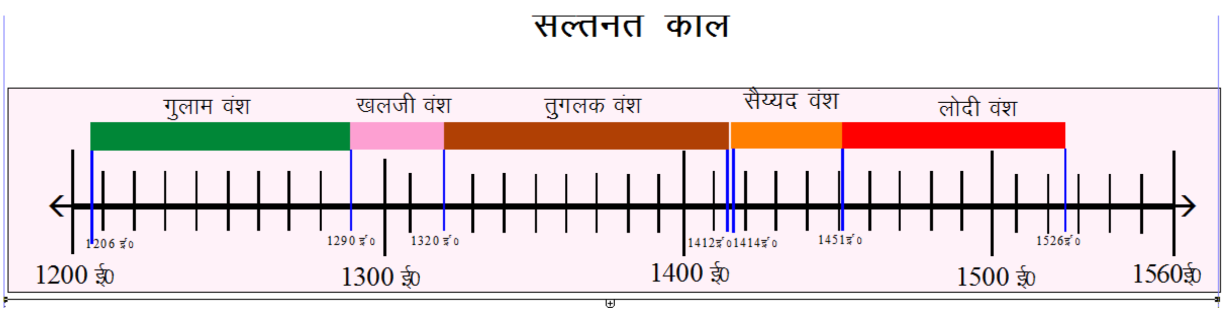

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) लोदी वंश का संस्थापक कौन था ?

(ख) पानीपत का प्रथम युद्ध किनके मध्य लड़ा गया।

(ग) तैमूर ने भारत पर आक्रमण क्यों किया ?

(घ) लोदी वंश में कौन-कौन से शासकों ने शासन किया?

(ङ) सिकन्दर लोदी की उपलब्धियों का वर्णन कीजिए।

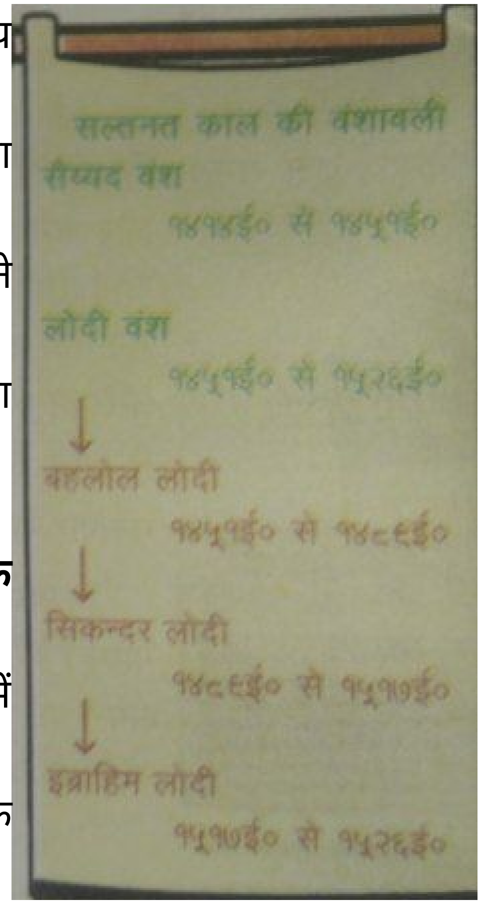

2. सही स्थान के सामने सही () तथा गलत के सामने () का निशान लगाइए-

(क) तैमूर ने भारत पर 1426 ई0 में आक्रमण किया। ( )

(ख) बाबर ने इब्राहिम लोदी को पानीपत के युद्ध में परास्त किया। ( )

(ग) सिकन्दर लोदी ने 1504 ई0 में आगरा नगर की स्थापना की थी। ( )

(घ) बाबर काबुल का शासक था। ( )

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

(क) सुल्तान...तुगलक वंश का अन्तिम शासक था।

(ख) गज-ए-सिकन्दरी की लम्बाई..........इंच होती थी।

(ग) तैमूर की राजधानी ....थी।

(घ) सैय्यद वंश की स्थापना ....ने की थी।

प्रोजेक्ट वर्क

पाठ में आए हुए नगरों की एक सूची बनाइए और यह पता लगाइए कि उनमें से किन नगरों के नाम आज भी वही हैं जो उस समय थे।

DPYFE7

पाठ-6

सल्तनतकालीन की संस्कृति

तेरहवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में दिल्ली सल्तनत की स्थापना को भारत के सांस्कृतिक विकास के नये काल का सूत्रपात माना जा सकता है। भारत आने वाले तुर्क विजेता अनपढ़ और बर्बर लोग नहीं थे। जब तुर्क लोग भारत आये तो उनके पास उनका धर्म इस्लाम था जिसमें उनकी गहरी आस्था थी। शासन प्रबन्ध, विज्ञान, साहित्य और स्थापत्य कला के क्षेत्र में उनका अपना दृष्टिकोण था। दूसरी ओर भारतीयों के भी अपने धर्म, शासन प्रबन्ध, साहित्य, विज्ञान तथा स्थापत्य को लेकर अपने निश्चित विचार थे। इन दोनों के मिलन ने एक मिलीजुली संस्कृति का विकास किया।

सल्तनतकालीन प्रशासन

दिल्ली सल्तनत का प्रारम्भ 1206 ई0 में तथा अन्त 1526 ई0 में हुआ। इस प्रकार भारत में सुल्तानों ने लगभग 300 वर्षों तक शासन किया। सल्तनत काल में सुल्तान का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। सारी राजनैतिक, कानूनी और सैनिक सत्ता उसी में निहित थी। वह राज्य की सुरक्षा और व्यवस्था के लिए जिम्मेदार था। इस तरह वह प्रशासन के लिए भी जिम्मेदार था। सुल्तान ही सेना का प्रधान होता था। कानून और न्याय की व्यवस्था करना भी उसी का दायित्व था। इस कार्य के लिए वह न्यायाधीशों की नियुक्ति करता था। उसके किसी भी पदाधिकारी के अन्याय के खिलाफ उससे सीधे अपील की जा सकती थी। न्याय करना शासक का महत्त्वपूर्ण दायित्व था।

केन्द्रीय शासन

केन्द्रीय शासन में सुल्तान का पद महत्वपूर्ण होता था। सुल्तान ही सेना का सबसे बड़ा अधिकारी होता था। युद्ध और सन्धि के सम्बन्ध में वही निर्णय लेता था। न्याय में भी उसी का निर्णय अन्तिम होता था।

सुल्तान अपनी मदद के लिये मंत्रियों की नियुक्ति करते थे। मंत्रियों का पदासीन रहना या न रहना सुल्तान की इच्छा पर निर्भर करता था। मंत्रियों की संख्या, उनके अधिकार और कर्तव्य समय-समय पर सुल्तान परिवर्तित करते रहते थे।

प्रान्तीय शासन

समस्त देश अनेक प्रान्तों में विभक्त था। पहले इन्हें 'इक्ता' और बाद में 'विलायत' कहा गया। प्रत्येक प्रान्त का अधिकारी गवर्नर होता था, जो 'इक्तादार' और बाद में 'मुक्ति' या 'वली' कहलाता था। उसे सुल्तान नियुक्त करता था। वह सुल्तान के प्रति उत्तरदायी होता था। वह प्रान्त में कानून व्यवस्था बनाए रखता था। उसे सैन्य एवं प्रशासनिक योग्यता के आधार पर नियुक्त किया जाता था। उसके अधीन घुड़सवार, फौजी दस्ते तथा पैदल सैनिक रहते थे। वह आपराधिक मामलों के विवादों में न्यायाधीश का कार्य करता था। वह कर संग्रह में सहायता प्रदान करता था।

स्थानीय शासन

प्रत्येक शिक को परगनों में बाँटा जाता था। गाँवों के समूह को परगना कहते थे। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी। गाँव का मुखिया मुकद्दम या चैधरी कहलाता था। वह समस्त ग्रामीण प्रशासन के लिए उत्तरदायी था। भू-राजस्व निर्धारण एवं वसूली के साथ राजस्व सम्बन्धी सभी कागजात वह रखता था। गाँव की सुरक्षा का कार्य गाँव के चैकीदार का होता था। गाँव के ये तीनों अधिकारी वंशानुगत होते थे। इन्हें वसूले गए भू-राजस्व का एक भाग प्राप्त होता था। गाँव का प्रशासन ग्राम पंचायतों के माध्यम से होता था। इसीलिए मध्यकालीन भारत में ग्रामीण स्तर पर प्राचीन परम्पराएँ यथावत रहीं।

दिल्ली के सुल्तानों ने दिल्ली सल्तनत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया परन्तु इनके अधिकतर उत्तराधिकारियों के अयोग्य होने के कारण सल्तनत की शक्ति कम होती गई। सल्तनत के विभिन्न भागों में बहुत से इक्तादारों ने नए राज्य बना लिए। उत्तर भारत में सल्तनत के कुछ प्रान्त थे जो बाद में स्वतंत्र राज्य बन गए, जैसे- जौनपुर, बंगाल, मालवा, गुजरात, कश्मीर तथा मेवाड़।

सल्तनत कालीन समाज

सल्तनत काल के शुरुआती दौर में सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों, रिवाजों एवं विश्वासों में भिन्नता होने से समाज में संघर्ष एवं टकराव की स्थिति पैदा होने लगी। तुर्कों के आगमन ने उत्तर भारत में पर्दा-प्रथा को मजबूत किया। यह प्रथा समाज के ऊँचे तब़कों की प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गई। इसका स्त्रियों की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और वे घर में सिमटने लगीं।

बाह्य आडम्बर एवं धन - सम्पत्ति का प्रदर्शन समाज की विशेषता बन गई। इन सबसे समाज में तनाव बढ़ने लगा, जिससे जीवन के नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगा। लोग जीवन के यथार्थ से आँख चुराने लगे। किन्तु लोग बनावटी जीवन से थकने लगे। उन्हें एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता हुई जिसमें सामाजिक जीवन के नैतिक मूल्यों को बचाया जा सके। इसी समय भक्तों और सूफी सन्तों का पदार्पण हुआ। इन्होंने लोगों में आपसी समझ पैदा करने की कोशिश की और 'सादा जीवन उच्च विचार' पर बल दिया।

भक्ति आन्दोलन तथा सूफी सन्त

तुर्क और अफगान जो अपने साथ धार्मिक विचार और संस्कृति लाये, उसका भारतीय समाज एवं विचार धारा पर प्रभाव पड़ा। जाति प्रथा की कठोरता, ऊँच-नीच का भेद-भाव तथा बाहरी आडम्बर के कारण भारतीय समाज में कुछ दोष आ गये। अतः सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और समाज को सुसंगठित करने के लिए कुछ समाज सुधारकों ने जनता में परस्पर प्रेम तथा सद्भाव को बढ़ाने का प्रयास किया। इन्होंने धार्मिक कर्मकाण्डों की अपेक्षा भक्ति-भाव से ईश्वर की उपासना करने को श्रेष्ठ बताया। इस प्रकार धार्मिक

सहिष्णुता की भावना को बल मिला। सन्तों एवं समाज सुधारकों द्वारा चलाया गया इस प्रकार का आन्दोलन भक्ति आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इन भक्त संतों में कबीर, चैतन्य महाप्रभु, गुरुनानक, दादू, रैदास, तुकाराम, रामानंद, बल्लभाचार्य, मीराबाई आदि प्रसिद्ध हैं।

कबीर

काशी (वाराणसी) में एक जुलाहे, बुनकर परिवार में कबीर का पालन-पोषण हुआ। कबीर निरंकार परमेश्वर में विश्वास रखते थे। कबीर की प्रमुख रचनाएँ थी- साखी, सबद, रमैनी।

मीराबाई- ये मेड़ता के राठौर राणा रतन सिंह की पुत्री थी। मीराबाई कृष्ण की उपासना में भजन गाया करती थी।

गुरु नानक देव

1469 ई0 में पंजाब के तलवंडी नामक स्थान में गुरुनानक का जन्म हुआ था। इन्होंने सिख धर्म धर्म चलाया तथा एकेश्वरवाद का उपदेश दिया।

चैतन्य महाप्रभु ने बाह्य आडम्बर तथा कर्मकाण्ड का विरोध किया। रविदास ने लोगों को शिक्षा दी कि भक्ति से ही मनुष्य मोक्ष पा सकता है। रामानन्द ने शुद्ध आचरण एवं भक्ति पर विशेष बल दिया। दादू, तुकाराम जैसे सन्तों ने भी अपने विचार द्वारा भक्ति आंदोलन को गति प्रदान की।

भक्ति सन्तों ने लोगों के बीच यह भावना फैलाई थी कि ईश्वर को पाने के लिए सच्चे दिल से प्रेम करना ही एक मात्र तरीका है। उन्होंने आम लोगों की बोली में कई सुन्दर गीतों की रचना की जिसे भक्त लोग मगन होकर गाते थे। वे ऊँच-नीच, जाति-पाति के खिलाफ थे। उनका मानना था कि सभी मनुष्य ईश्वर की नजर में समान है और हिन्दू तथा मुसलमान दोनों का एक ही ईश्वर है। ईश्वर को पाने का रास्ता भी एकसमान है।

चैतन्य महाप्रभु

इन्हीं भक्त संतों की तरह कई मुसलमान संत भी थे जो सूफी सन्त कहलाए। इन सूफी सन्तों मंे अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, पंजाब के बाबा फरीद, बहुत जाने माने सूफी संत थे।

भक्त संतों और सूफी संतों के विचार आपस में बहुत मिलते-जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। सूफी मत के अनुयायी एक ईश्वर में विश्वास करते थे। शांति, अहिंसा एवं सहिष्णुता एवं मानवता के प्रति प्रेम की भावना में भी उनका अटूट विश्वास था। सूफी सन्तों से हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही अत्यधिक प्रभावित हुए।

लल्ला देव कश्मीर की विधवा ब्राह्मण औरत थीं। कई सूफी संत उसे अपना पीर या गुरु मानते थे। वह कहती थीं-

"शिव सब जगह मौजूद हैं, सब में मौजूद हैं फिर हिन्दू और मुसलमान में फर्क मत करो। अगर तुम समझदार हो तो अपने आप को समझो। यही ईश्वर की सही समझ है।"

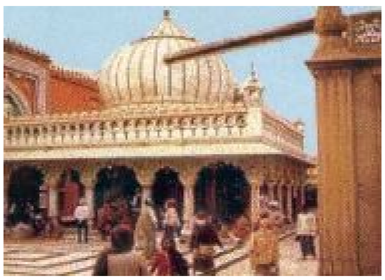

निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, दिल्ली

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, अजमेर

साहित्य

सल्तनत काल में देश के बहुत से भागों में फारसी राजभाषा रही। अतः बहुत सी भारतीय भाषाओं पर फारसी का प्रभाव पड़ा और फारसी के बहुत से शब्द भारतीय भाषाओं में

आ गए। सल्तनत काल में दिल्ली, अरबी व फारसी साहित्य के विद्वानों का केन्द्र बन गई थी। महमूद गजनवी के समय अलबरुनी और फिरदौसी नामक प्रसिद्ध विद्वान तथा कवि थे। मंगोलों के डर से मध्य एशिया के अनेक विद्वानों और साहित्यकारों ने भागकर दिल्ली के सुल्तानों के दरबार में शरण ली थी। भारत में फारसी साहित्य का महान विद्वान अमीर खुसरो था। उसने भारत के बारे में बहुत कुछ लिखा जिससे उसका भारत के प्रति प्रेम झलकता है।

इस समय साहित्य के नाम पर यशोगान और धार्मिक पुस्तकों की ही रचना हुई। इस श्रेणी में नरपति-नाल्ह का बीसल देव रासो तथा खुमानरासो उल्लेखनीय है। अमीर खुसरो ने हिन्दी में भी पद रचना की थी।

भक्ति आन्दोलन के सन्तों जैसे गोरखनाथ, कबीर आदि ने ईश्वर स्तुति में गीतों की रचना की थी। इस काल में सुप्रसिद्ध प्रेमाख्यान तथा ऐतिहासिक महाकाव्य पद्मावत की रचना महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी ने की।

स्थापत्य कला

ईरानी व तुर्क कारीगर जब भारत आए तो अपने साथ इमारत बनाने की एक नई विधि भी लाए। सल्तनतकालीन इमारतों की तीन खास बातें थीं- मेहराब, गुम्बद और मीनारें जो उनकी सभी इमारतों में देखी जा सकती है। कुछ इमारतों में कुरान की आयतें भी लिखी गयीं हैं।

मिली-जुली शैलियाँ

ईरानी व तुर्क कारीगरों से ये बातें भारत के कारीगरों ने सीखीं। उन कारीगरों ने भी भारत के कारीगरों के हुनर सीखे। मंदिरों में मेहराबें व गुम्बद बनने लगे और कई मस्जिदों में पत्थर पर पत्थर रखकर तराशे हुए खम्भे बनने लगे।

आपके आस-पास भी कुछ मंदिर व मस्जिद होगें क्या उनमें ऐसी कुछ विशेषताएँ आपको देखने को मिलती हैं ? इनकी सूची बनाइए।

चित्रकला और संगीत

सल्तनत काल में बारीक और छोटे-छोटे चित्र बनाये जाते थे। कलाकारों को दरबार में आश्रय मिला था। कभी-कभी वे पुस्तक में वर्णित घटनाओं के चित्र बनाते थे।

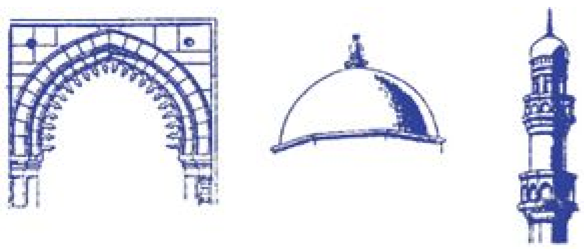

मेहराब गुम्बद मीनार

भारतीय संगीत पर फारस और अरब की संगीत शैली का प्रभाव पड़ा। सितारए सारंगी और तबला जैसे वाद्य यंत्रों की लोकप्रियता बढ़ गयी। कुछ सूफी सन्तों ने संगीत में विशेष रुचि दिखायी। उनका विश्वास था कि भक्ति.संगीत भी ईश्वर के निकट पहुँचने का एक रास्ता है। इससे संगीत के नये रूपों जैसे कव्वाली को लोकप्रिय होने में बड़ी सहायता मिली।

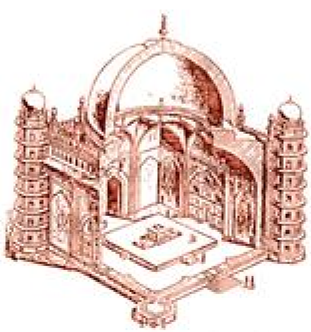

गुम्बद का आन्तरिक भाग

अस्त्र शस्त्र का विकास

मध्यकालीन समय में सर्वोत्तम तलवारें वाराणसी (बनारस) और सौराष्ट्र में बनती थीं। उसके बाद लाहौर, सियालकोट, मुल्तान, गुजरात तथा गोलकुण्डा के प्रान्त भी इसके लिए मशहूर हुए। राजस्थान एवं गुजरात में निर्मित जमधार, छूरे, धनुष तथा तीरों की बड़ी माँग थी।

सियालकोट तथा मेवाड़ की तोड़ेदार बन्दूक सर्वोत्तम होती थी। तोड़ेदार बन्दूकों के अलावा लोहे का उपयोग सब प्रकार के कवच, ढाल, हथियार, बन्दूक तथा तोप के गोले आदि में होता था।

चिकित्सा एवं खगोल शास्त्र

सल्तनत काल में आयुर्विज्ञान तथा खगोल विद्या जैसे कुछ विज्ञान विषयों में अनुसंधान को सुल्तानों तथा अमीरों का संरक्षण प्राप्त था। वे इन कार्यों के लिए प्रोत्साहन देते थे।

बरनी ने अपनी तारीख-ए-फिरोजशाही में चिकित्सकों और खगोल शास्त्रियों की एक लम्बी तालिका प्रस्तुत की है। मौलाना बदरुद्दीन, मौलाना सदरुद्दीन तथा अजीमुद्दीन मध्यकालीन युग के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। मच्छेन्द्र प्रसिद्ध वैद्य थे और जोग मशहूर शल्य चिकित्सक थे। मध्यकाल में ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि देश में अनेक जर्राह या शल्य चिकित्सक थे। वे केवल शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) ही नहीं करते थे, बल्कि कृत्रिम अंग भी बनाकर लगा सकते थे। वे काटकर पथरी निकाल देते थे। मोतियाबिन्द को समाप्त कर डालते थे।

छूरा तलवार कवच

कृषि

देश की आबादी में ज्यादातर लोग किसान थे। वे कड़ी मेहनत करते थे। देश के विभिन्न भागों में आए दिन अकाल पड़ने और युद्ध होने से किसानों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उस समय किसानों का जीवन स्तर ऊँचा नहीं था। गाँव के अधिकारी कभी-कभी अपने पद का दुरुपयोग करते थे और साधारण किसानों को अपने हिस्से की भी मालगुजारी (राजस्व) अदा करने के लिए मजबूर करते थे।

व्यापार व उद्योग

मुस्लिम विजय ने देश के उद्योग तथा वाणिज्य व्यापार में बाधा नहीं डाली। गाँव तथा शहरांे में कारीगरों एवं शिल्पियों ने अपने पुराने पेशे को बरकरार रखा था। उनके औजार भी वही थे। कुछ विशेष प्रकार के नये काम करने वाले कारीगर वर्ग भी उत्पन्न हुए, जैसे बर्तन पर कलई करने वाले, घोड़े की नाल व रकाब बनाने वाले, कागज़ बनाने वाले आदि।

इसके अतिरिक्त कई शाही कारखाने भी थे, जो फारस देश की तकनीक के अनुसार दिल्ली के सुल्तानों द्वारा स्थापित किये गये थे। इन कारखानों में राज्य, राजपरिवार तथा दरबारी लोगों की जरूरत की चीजें बनायी जाती थीं।

मुद्रा के क्षेत्र में भी सुधार हुए। सुल्तानों ने चाँदी के टंके और ताँबे के जीतल नामक मुद्राएँ चलायीं। इसी के साथ व्यापार का विकास शुरू हुआ जिससे शहर और शहरी जीवन का और विकास हुआ। बंगाल और गुजरात के शहर अपने उत्तम कपड़ों और सोने तथा चाँदी के काम के लिए प्रसिद्ध थे। बंगाल का सोनार गाँव और ढाका कच्चे रेशम और मलमल के लिए विख्यात थे।

वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण तकनीकी परिवर्तन 13वीं-14वीं शताब्दी में मुसलमानों द्वारा भारत में लाये चरखे द्वारा हुआ। चरखे का चलन आरम्भ होने से कपड़े के उत्पादन में बहुत सुधार हुआ। लाल सागर और फारस की खाड़ी के आस-पास के देशों के साथ होने वाले व्यापार में भारतीय कपड़े की धाक पहले ही जम चुकी थी। पेड़-पौधों और खनिज स्रोतों से प्राप्त विभिन्न रंगों से रंगाई का कार्य किया जाता था। उस काल में भारतीय कपड़े चीन को भी निर्यात किये जाते थे।

इस काल में अन्तरराष्ट्रीय व्यापार जल और थल दोनों मार्गों से किया जाता था। भारत कुछ वस्तुओं का निर्यात करता था। इसमें चर्म व धातु से बनी वस्तुएँ तथा फारसी डिजाइन आधारित गलीचे प्रमुख थे।भारत पश्चिमी एशिया से उच्च कोटि के कुछ कपड़े (साटन आदि), काँच के बर्तन, बहुमूल्य धातुएँ, घोड़े तथा चीन से कच्चा रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन आयात करता था।

यातायात

दिल्ली सल्तनत के सुदृढ़ होने से यातायात एवं संचार का विकास हुआ। उस समय आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों का ज्ञान नहीं था। लोग परिवहन के साधनों के रूप में कुलियों, जानवरों तथा चक्के वाली गाड़ियों का प्रयोग करते थे। परम्परागत बैलगाड़ी का इस्तेमाल उन दिनों खूब होता था। बैलों पर काठी के स्थान पर गद्दे रखकर माल ढोया जाता था। सवारी के लिए घोड़े, टट्टू, खच्चर और कभी कभी गधों, ऊँटों का इस्तेमाल भी किया जाता था। नदियों में नावों तथा सागर में पाल वाले जलयानों का उपयोग किया जाता था।

शब्दावली

सूफी - ईश्वर की भक्ति उपासना में व्यक्तिगत प्रेम-भावना पर अधिक बल देने वाले मुसलमान संत।

पीर - सूफी सम्प्रदाय के धर्म उपदेशक

जर्राह - शल्य चिकित्सक (चीर-फाड़ करने वाला डॉक्टर या सर्जन)।

जीतल - सल्तनत काल में प्रचलित ताँबे का सिक्का।

आयात - बाहर के देशों में बनी वस्तुओं को अपने देश में मँगाना।

निर्यात - अपने देश में बनी वस्तुओं को दूसरे देशांे में भेजना।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) सल्तनत काल के फारसी तथा हिन्दी के कवियों और लेखकों के नाम लिखिए।

(ख) सल्तनत काल में बनी प्रमुख इमारतों की विशेषताएं लिखिए।

(ग) सूफी मत की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

(घ) भक्ति काल के प्रमुख संतों के नाम बताइए।

(ङ) सल्तनत काल में उद्योग एवं व्यापार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(च) सल्तनत काल में कहाँ की तलवारें प्रसिद्ध थीं ?

(छ) सल्तनत कालीन प्रशासन का वर्णन कीजिए।

(ज) सन्त एवं समाज सुधारकों ने भक्ति आंदोलन क्यों चलाया।

(छ) दिल्ली सल्तनत में सुल्तान का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। क्यों?

2. निम्नलिखित वाक्यों के समक्ष सत्य अथवा असत्य लिखिए-

क. सल्तनत काल में सुल्तान का स्थान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था। ....

ख. युद्ध में सेना और धन की आवश्यकता नहीं होती है। ....

ग. सुल्तान सेना का सबसे बड़ा अधिकारी होता था। ....

घ. पद्मावत की रचना मलिक मोहम्मद जायसी ने की थी। ....

ड. सल्तनत काल में किसानों का जीवन स्तर बहुत ऊँचा था। ....

3. टिप्पणी लिखिए-

क. टंका और जीतल

ख. इक्तादार

ग. मुकद्दम या चैधरी

4. सही जोड़े मिलाइए-

क. मच्छेन्द्र	प्रसिद्ध विद्वान
ख. जोग	चिकित्सक
ग. बरनी	सूफी सन्त
घ. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती	शल्य चिकित्सक

प्रोजेक्ट कार्य

स्थापत्य कला की दृष्टि से सल्तनत काल में बनी इमारतों की विशेषताएँ गुम्बद, मीनार व मेहराब हैं। इनके चित्र अपनी अभ्यास-पुस्तिका में बनाकर रंग भरिए।

पाठ-7

दक्षिण के राज्य

मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल के अंतिम दिनांे में सल्तनत का दक्षिणी भारत पर अधिकार कमजोर हो गया परिणामस्वरूप सल्तनत के अधीन प्रान्तों के इक्तादारों ने अपने को स्वतंत्र कराने के प्रयास शुरू कर दिए जिससे दक्षिण में बहमनी तथा विजयनगर जैसे राज्यों की स्थापना हुई।

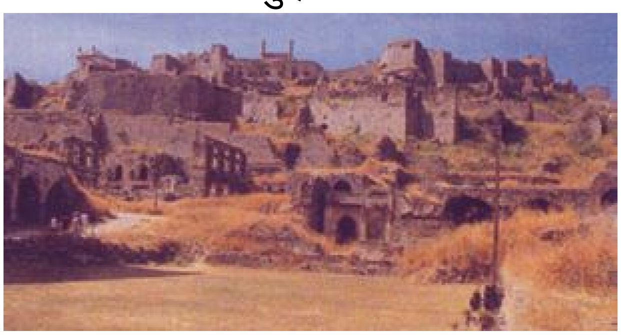

गोलकुण्डा का किला

बहमनी राज्य

मुहम्मद बिन तुगलक के एक अधिकारी हसन गंगू ने बहमनी राज्य की नींव डाली। सन् 1347 ई0 में हसन ने सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह करके दौलताबाद पर अपना अधिकार कर लिया और बहमनी राज्य को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया। उसने बहमन शाह की उपाधि धारण की और वह इस राजवंश का पहला शासक बना। उसने अपने राज्य को चार प्रान्तों में बाँटा - गुलबर्ग, दौलताबाद, बरार तथा बीदर। उसने गुलबर्ग को अपनी

राजधानी बनाया। कृष्णा नदी तक का सम्पूर्ण उत्तरी दक्खन बहमनी राज्य के अन्तर्गत था।

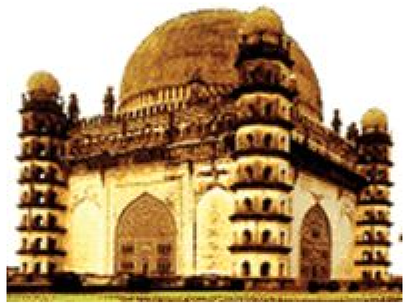

गोल गुम्बद, बीजापुर

दौलताबाद का किला

इस वंश का महानतम शासक फिरोजशाह था। वह बड़ा योग्य, न्यायप्रिय, विद्यानुरागी एवं आश्रयदाता था। अनेक शासकों ने बहमनी राज्य पर शासन किया किन्तु ये शासक अधिकतर युद्धों तथा आपसी झगड़ों में फँसे रहे। बहमनी राज्य का प्रसिद्ध प्रशासक वहाँ का वज़ीर महमूद गवाँ था। उसके पश्चात् बहमनी राज्य का विघटन शुरू हो गया।

बहमनी राज्य टूटकर पाँच राज्यों में बँट गया - अहमदनगर, गोलकुण्डा, बीजापुर, बरार और बीदर।

विजयनगर साम्राज्य

बहमनी राज्य के दक्षिण में विजयनगर का राज्य था। हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों ने इस राज्य की नींव डाली। उन्होंने भी सल्तनत की घटती हुई शक्ति का अनुभव किया। इन्होंने होयसल राज्य (आधुनिक मैसूर) के क्षेत्र को जीता और सन् 1336 ई0 में अपने को विजयनगर राज्य का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। उन्होंने हस्तिनावती (आधुनिक हम्पी) को अपनी राजधानी बनाया। कृष्णदेव राय विजयनगर राज्य के महत्वपूर्ण शासक थे।

बीदर का किला

यदि बहमनी और विजयनगर में मित्रता का सम्बंध होता तो वे शक्तिशाली राज्य बन सकते थे पर दुर्भाग्य से उनमें सदैव युद्ध होता रहता था। इसके कई कारण थे-

कृष्णदेव राय

दोनों राज्य रायचूर दोआब को अपने राज्य का हिस्सा मानते थे। यह 'कृष्णा और तुंगभद्रा' नदियों के बीच में स्थित उपजाऊ भू-भाग था जो दोनों राज्यों के बीच में स्थित था।
बहमनी राज्य के गोलकुण्डा क्षेत्र में हीरे की खानें थीं और विजयनगर के शासक गोलकुण्डा को जीतना चाहते थे।

रथ मंदिर, हम्पी

दोनों राज्यों के शासक बड़े महत्वाकांक्षी थे और सम्पूर्ण प्रायद्वीप पर अपना अधिकार चाहते थे।

ये युद्ध इन्हीं दो बड़े राज्यों तक सीमित नहीं रहे। पूर्वी समुद्रतट पर उड़ीसा, आंध्र और मदुरई आदि बहुत से छोटे-छोटे राज्य थे। इन राज्यों पर लगातार बहमनी या विजयनगर के शासक आक्रमण करते रहे। विजयनगर ने सन् 1370 ई0 में मदुरई को जीत लिया। पश्चिमी किनारे पर भी विजयनगर क्रियाशील रहा। रेवातिद्वीप (आधुनिक गोवा) एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था जिस पर उसने अधिकार कर लिया। इस बीच बहमनी राज्य अपने उत्तरी पड़ोसी राज्यों-मालवा और गुजरात से युद्ध करने में लगा हुआ था।

ये सभी राज्य शक्तिशाली बन गए क्योंकि इनके धन प्राप्त करने के दो साधन थे। पहला भूमि का लगान था। रायचूर जैसे उपजाऊ क्षेत्र में इस साधन से बहुत बड़ी मात्रा में धन प्राप्त होता था।

दूसरा साधन व्यापार था। गुजरात और बंगाल को समुद्र पार के देशों से व्यापार में बड़ा लाभ होता था। वे पश्चिमी एशिया, पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों और चीन के साथ व्यापार करते थे। बहमनी और विजयनगर भी इस व्यापार में भाग लेते थे। राजस्थान और मालवा भी आंतरिक व्यापार से वैभवशाली बन गए। व्यापार का माल देश के विभिन्न भागों में ले जाया जाता था। अतः व्यापारी प्रायः इन क्षेत्रों में यात्राएँ किया करते थे जिससे इन क्षेत्रों में संस्कृति का आदान-प्रदान हुआ और इन राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला और नवीन धार्मिक विचारों का विकास हुआ

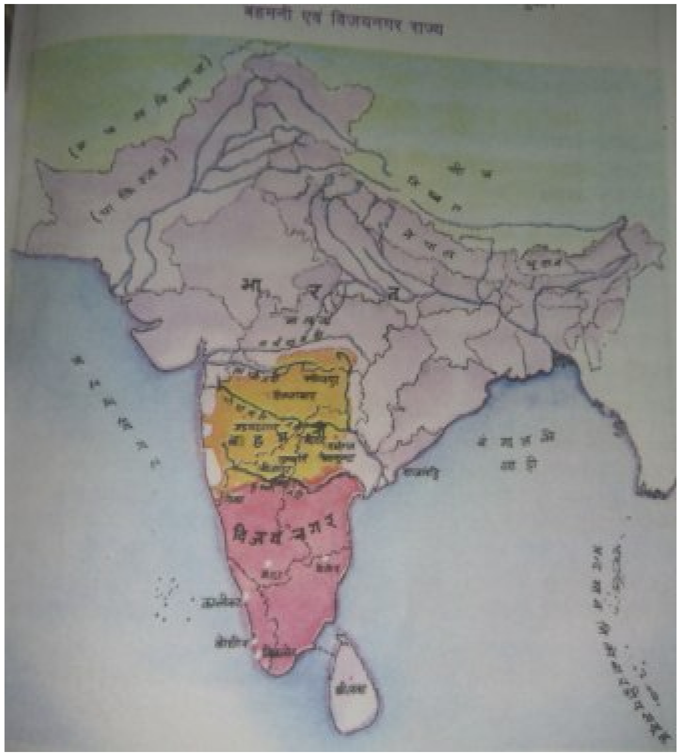

और भी जानिए

-
- फिरोज शाह बहमनी ने खगोलशास्त्र को प्रोत्साहन दिया और दौलताबाद में एक वेधशाला बनवायी।
- ईरानी यात्री अब्दुर्रज़्ज़ाक 1442 ई0 से 1443 ई0 तक विजयनगर में रहा।
- इतालवी यात्री डोमिंगो पाएस, कृष्णदेव राय के राज्य दरबार में अनेक वर्षों तक रहा।
- प्रथम बार तोपखाने का प्रयोग बहमनी और विजयनगर के युद्ध में हुआ था।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) बहमनी वंश का संस्थापक कौन था ?

(ख) बहमनी राज्य टूटकर कौन-कौन से राज्यों में बँट गया ?

(ग) विजयनगर साम्राज्य की नींव किसने रखी थी ?

(घ) बहमनी एवं विजयनगर राज्यों में किन कारणों से युद्ध होता रहता था ?

(ङ) कृष्णदेव राय के बारे में आप क्या जानते हैं?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) हसन गंगू (बहमन शाह) ने .... को राजधानी बनाया।

(ख) विजयनगर साम्राज्य की राजधानी .... थी।

(ग) विजयनगर साम्राज्य का प्रमुख शासक .... था।

(घ) रायचूर दोआब कृष्णा और .... नदियों के बीच का क्षेत्र था।

3. सही जोड़े मिलाइए-

(क)	(ख)
क. होयसल राज्य	आधुनिक गोवा
ख. हस्तिनावती	आधुनिक हम्पी
ग. रेवातिद्वीप	आधुनिक मैसूर

प्रोजेक्ट वर्क

भारत का मानचित्र देखकर वर्तमान दक्षिण भारत के किन्हीं चार राज्यों व उनकी राजधानियों की सुमेलित सूची बनाइए।

DQH7HH

पाठ-8

मुगल साम्राज्य की स्थापना (1526 ई0-1556 ई0)

दिल्ली सल्तनत की शक्ति शनैः-शनैः क्षीण हो रही थी। फलस्वरूप देश की राजनैतिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई थी। अनेक राज्यों का उदय हो गया था। इनमें कोई ऐसा राज्य नहीं था जो देश की रक्षा के लिए अन्य राज्यों को एकता के सूत्र में बाँध सकता और उनका नेतृत्व कर सकता। राजनैतिक एकता के अभाव में बाबर को भारत पर आक्रमण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

बाबर (1526 ई0-1530 ई0)

बाबर

बाबर के पिता तैमूर तथा माता चंगेज खाँ के वंश के थे। बाबर का पिता उमर शेख मिर्जा मध्य एशिया की छोटी सी रियासत फरगना का शासक था। यह एक उपजाऊ प्रदेश था। हरे-भरे चरागाह, उत्तम जलवायु एवं फलों के बागान यहाँ की मुख्य विशेषता थी। अपने पिता की मृत्यु के बाद बाबर फरगना का शासक बना। उस समय उसकी आयु ग्यारह वर्ष के लगभग थी। सिंहासन पर बैठते ही बाबर को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

वह अपने पूर्वज तैमूर के राज्य समरकन्द को भी जीतना चाहता था। उसने काबुल पर अपना अधिकार जमाया और वहाँ से वह भारत की ओर आकर्षित हुआ।

बाबर का भारत पर आक्रमण

इब्राहिम लोदी के विरोधी बाबर की सहायता से अपना स्वतन्त्र साम्राज्य स्थापित करने की योजना बनाने लगे। उधर बाबर स्वयं भारत पर अधिकार करना चाहता था। इसके लिए उसने अपनी सेना को भली-भाँति तैयार किया। उसने अपना तोपखाना भी सुसज्जित कराया। इसी समय पंजाब के गर्वनर दौलत खाँ लोदी ने उसे दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।

1526 ई0 में पानीपत के मैदान में बाबर का सामना इब्राहिम लोदी से हुआ। बाबर के पास तोपें थीं जो भारत के शासकों के पास नहीं थीं। उसके पास कुशल घुड़सवार भी थे। उसकी सेना छोटी थी परन्तु अच्छी तरह प्रशिक्षित थी। बाबर एवं उसकी सेना को अनेक युद्धों के अनुभव थे। उसने बड़ी कुशलता से अपनी सेना का संचालन किया, बाबर की विजय हुई। इब्राहिम लोदी लड़ाई में मारा गया। इसी के साथ लोदी वंश का अंत हो गया और भारत में एक नए वंश मुगलवंश की स्थापना हुई।

बाबर और राजपूत-चित्तौड़ के महाराणा संग्राम सिंह बाबर के सबसे शक्तिशाली शत्रु थे। ये राणा सांगा के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। बाबर ने स्वयं राणा सांगा के बारे में लिखा था कि ‘‘राणा सांगा ने अपनी वीरता के बल पर भारत में उच्च स्थान प्राप्त किया था।

खानवा का युद्ध-1527 ई0 को राणा सांगा और बाबर के मध्य खानवा का युद्ध हुआ। युद्ध में बाबर की विजय हुई। इस युद्ध के परिणामस्वरूप -

राजपूतों की शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रभाव समाप्त हो गया।

मुगल वंश की नींव सुदृढ़ हो गई।

राजपूतों का दिल्ली पर अधिकार करने का सपना अधूरा रह गया।

इसके बाद बाबर ने चन्देरी के शासक मेदिनीराय को चन्देरी के युद्ध (1528 ई0) में तथा अफगान सरदारों को घाघरा (1529 ई0) के युद्ध में पराजित कर भारत में मुगल

साम्राज्य को सुदृढ़ बनाया।

बाबर का चरित्र

बाबर को कलम और तलवार दोनों का सिपाही कहा जाता है। सैनिक कार्यों के साथ-साथ वह साहित्य के प्रति रुचि रखता था। उसे तुर्की एवं फारसी भाषा तथा साहित्य का अच्छा ज्ञान था।

बाबर स्वयं भी उच्च कोटि का साहित्यकार था। उसने अपनी आत्मकथा लिखी। यह तुर्की भाषा में है और तुजुक-ए-बाबरी नाम से प्रसिद्ध है। इसके फारसी अनुवाद को 'बाबरनामा' कहते हैं, जिसे अब्दुर्ररहीम खानखाना ने किया था।

बाबर को बगीचों का बहुत शौक था। उसने आगरा तथा लाहौर के आस-पास कुछ बगीचे लगवाए।

26 दिसंबर 1530 को बाबर की मृत्यु हो गई।

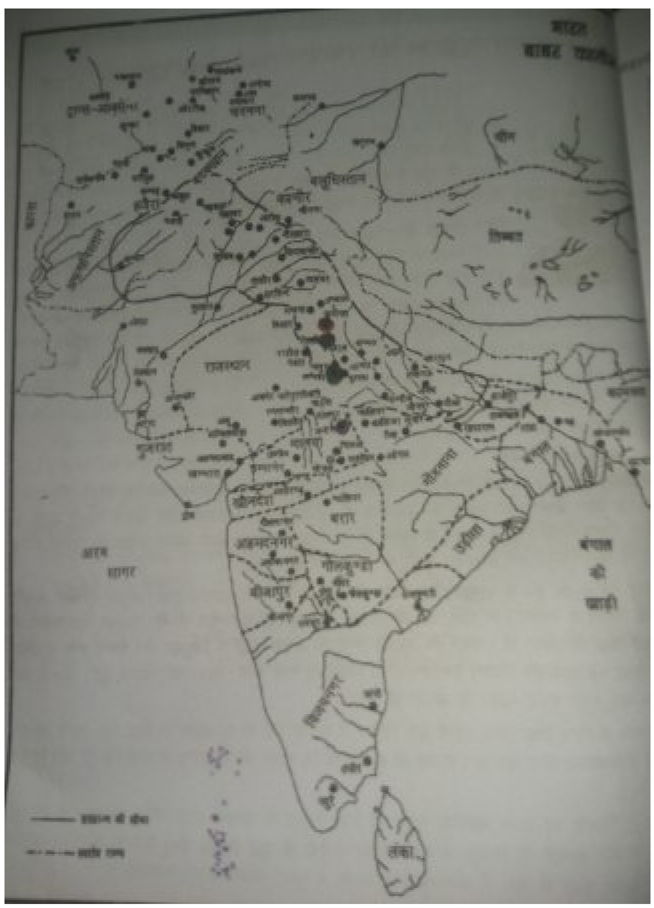

हुमायूँ (1530-1540 ई0 तथा 1555-1556ई0)

बाबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र हुमायूँ 1530 ई0 में मुगल सिंहासन पर बैठा। सिंहासन पर बैठते ही हुमायूँ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसकी सबसे बड़ी कठिनाई उसके शत्रु थे जिनमें पश्चिम में गुजरात के शासक बहादुरशाह और पूर्वी भारत का शेरशाह मुख्य थे। ये दोनों भारत में अपनी शक्ति को बढ़ा रहे थे और मुगल शासक हुमायूँ को भारत से भगाने के लिए प्रयत्नशील थे। इन्हीं के साथ हुमायूँ के सगे सम्बन्धी भी उसके लिये कठिनाई उत्पन्न कर रहे थे। उन्होंने प्रायः उसके शत्रुओं का ही साथ दिया।

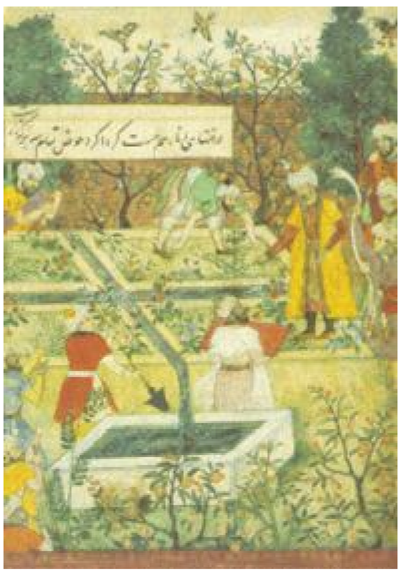

बाबर बगीचे में, बाबरनामा

बाबर का

चाँदी का दिरहम

हुमायूँ (1530-1540 ई0 तथा 1555-1556ई0)

हुमायूँ और बहादुरशाह

बहादुरशाह गुजरात का शासक था। बहादुरशाह दिल्ली का साम्राज्य प्राप्त करना चाहता था। उसने सन् 1535 ई0 में चित्तौड़ पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन कर लिया। अतः हुमायूँ एवं बहादुरशाह के बीच युद्ध की सम्भावना बढ़ने लगी। हुमायूँ से बचते हुए बहादुरशाह ने पुर्तगाली द्वीप दिउ में शरण ली। हुमायूँ गुजरात विजय कर अपनी राजधानी वापस चला गया। इस मौके का लाभ उठाकर बहादुरशाह ने पुर्तगालियों की मदद से गुजरात पर पुनः अधिकार कर लिया। हुमायूँ की विजय के विरुद्ध जनविद्रोह के चलते मुगलों के हाथ से गुजरात निकल गया।

हुमायँू और शेरशाह

हुमायूँ

1538ई0 में हुमायूँ ने शेरशाह से चुनार जीत लिया। तत्पश्चात् शेरशाह ने गौड़ (बंगाल) पर विजय प्राप्त की और बंगाल पर अधिकार कर लिया। शेरशाह के बढ़ते हुए प्रभाव से हुमायूँ सशंकित था। हुमायूँ मुंगेर के पास गंगा को पार करके शेरशाह की ओर बढ़ा । 1539ई0 में चौसा नामक स्थान पर हुमायूँ तथा शेरशाह के मध्य भीषण युद्ध हुआ। युद्ध में परास्त हुमायूँ ने किसी तरह अपनी जान बचायी।

अपनी पराजय का बदला लेने के लिए हुमायूँ ने अपनी सेना के साथ कन्नौज नामक स्थान पर शेरशाह से मुकाबला किया। इस युद्ध में हुमायूँ की पराजय हुई। शेरशाह ने आगरा तथा दिल्ली पर अपना अधिकार कर लिया तथा वह, शेरशाह सूरी के नाम से भारत का शासक बना। हुमायूँ सिन्ध होते हुए फारस चला गया।

हुमायूँ की वापसी (1555 ई0)

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली

शेरशाह द्वारा स्थापित साम्राज्य शेरशाह की मृत्यु के बाद दिन प्रति दिन कमजोर होता गया। हुमायूँ ने दिल्ली को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयास शुरू कर दिये। फारस के शासक की मदद से हुमायूँ ने कंधार, पंजाब, आगरा और दिल्ली पर कब्जा कर लिया। हुमायूँ ने दिल्ली में एक मदरसा तथा ग्वालियर में तराशे हुए पत्थरों का किला बनवाया। 1556 ई0 में जब वह शेर-ए-मंडल पुस्तकालय की सीढ़ियों से उतर रहा था, तभी लड़खड़ा कर गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी। भारत में मुग़ल वंश की नींव बाबर ने डाली थी जिसके आधार पर मुग़लों ने भारत में दो सौ वर्षों तक राज किया।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) बाबर के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

(ख) भारत के इतिहास में 1526 ई0 में हुए पानीपत के युद्ध का महत्त्व बताइए।

(ग) पानीपत के युद्ध में बाबर की विजय के क्या कारण थे ?

(घ) खानवा युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

(ङ) हुमायूँ तथा शेरशाह के मध्य हुए युद्धों का वर्णन कीजिए।

(च) हुमायूँ ने पुनः अपने साम्राज्य को किस प्रकार प्राप्त किया ?

2. निम्नलिखित कथनों में सही कथन के सामने सही तथा गलत कथन के सामने गलत का निशान लगाइए-

क. बहादुरशाह हुमायूँ का मित्र था। ( )

ख. हुमायूँ की मृत्यु चैसा के मैदान में हुई। ( )

ग. चैसा के युद्ध में हुमायूँ की विजय हुई। ( )

3. स्तम्भ 'क' तथा स्तम्भ 'ख' में दिये हुए तथ्यों को सुमेलित कीजिए-

क	ख
हुमायूँ की मृत्यु	हुमायूँ तथा शेरशाह
चैसा का युद्ध	1539 ई0
गुजरात का शासक	1556 ई0
कन्नौज का युद्ध	बहादुरशाह

4. खाली स्थान भरिए-

(क) भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना .... ने की थी।

(ख) बाबर और राणा साँगा के बीच .... नामक स्थान पर युद्ध हुआ।

(ग) बाबर ने अपनी आत्मकथा .... भाषा में लिखी।

5. पाठ के आधार पर निम्नलिखित तालिका पूर्ण कीजिए-

सन्	युद्ध	सन्	युद्ध
1526 ई0	....	1527 ई0	....
1528 ई0	....	1529 ई0	....

प्रॉजेक्ट वर्क -

पाठ के आधार पर बाबर के जीवन चरित्र एवं उपलब्धियों पर आधारित चार्ट बनाइए, और कक्षा में टाँगिए।

पाठ 9

शेरशाह (1540ई0-1545ई0)

शेरशाह सूरी का शासनकाल मात्र 5 वर्ष का ही था इतने अल्प समय मंे उसके द्वारा किए गए सुध्ारों एवं प्रजा की भलाई के लिए किए गए कार्यों ने आगामी शासकों के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य किया।

शेरशाह के बचपन का नाम फरीद था। उसने अपने मालिक को बचाने के लिए शेर को मार डाला था। तभी से फरीद का नाम शेरखाँ पड़ गया। जौनपुर में उसने अरबी, फारसी, इतिहास तथा साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया। शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात फरीद अपने पिता की जागीर की देखभाल करने सासाराम वापस आ गया। थोड़े ही दिनों में वह जनता में लोकप्रिय हो गया। जागीर की देखभाल करने के अनुभव ने उसे शासक बनने पर सफल एवं लोकप्रिय बनाया। कुछ समय के पश्चात उसने बिहार के शासक के यहाँ नौकरी कर ली। वह बाबर की सेना में भी भर्ती हुआ था। इस कारण उसे मुगलों के सैन्य संगठन का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ।

धीरे-धीरे शेरखाँ ने बिहार में अपना प्रभाव स्थापित कर लिया और सम्पूर्ण बिहार का शासक बन गया। चौसा के युद्ध में हुमायूँ को हरा कर वह 1540 ई0 में शेरशाह सूरी के नाम से भारत का सुल्तान बना।

अलाउद्दीन खिलजी की सैन्य संगठन एवं लगान सम्बन्धी नीतियों से वह काफी प्रभावित हुआ था। अतः उसने अपने राज्य की व्यवस्था सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये।

राजस्व सम्बन्धी सुधार

- उसने भूमि की विविधता के आधार पर अलग-अलग लगान निर्धारित किया।
- उपजों की किस्मों के आधार पर कर निर्धारण किया जाता था।
- भूमि की नाप पटवारी द्वारा रस्सी से की जाती थी। नाप की इकाई 'गज़' थी।
- किसान भूमि का विवरण सरकार को लिखित रूप में देते थे जिसे कबूलियत कहा जाता था। इससे किसानों का सम्पर्क सीधे सरकार से होने से उनका उत्पीड़न बंद हो गया।
- नगद रूप में कर देने का आदेश था।
- अकाल अथवा संकट के कारण फसल का नुकसान होने पर सरकार द्वारा इसकी क्षतिपूर्ति की जाती थी।
- उसने राज्य और किसानों के बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित किया। इसे "रैय्यतवाड़ी व्यवस्था" कहते थे।

शेरशाह का चाँदी का सिक्का

सैन्य संगठन एवं चुस्त प्रशासनिक व्यवस्था

- सैनिक शक्ति बढ़ाने के लिए अपनी सेना का संगठन किया।
- डाक व्यवस्था के लिए डाक चौकी होती थी। यहाँ से डाक घोड़े द्वारा पहुँचायी जाती थी।

- अधिकारियों को नियमित रूप से वेतन दिया जाता था।
- कोई भी व्यक्ति सीधे शेरशाह से मिल सकता था।

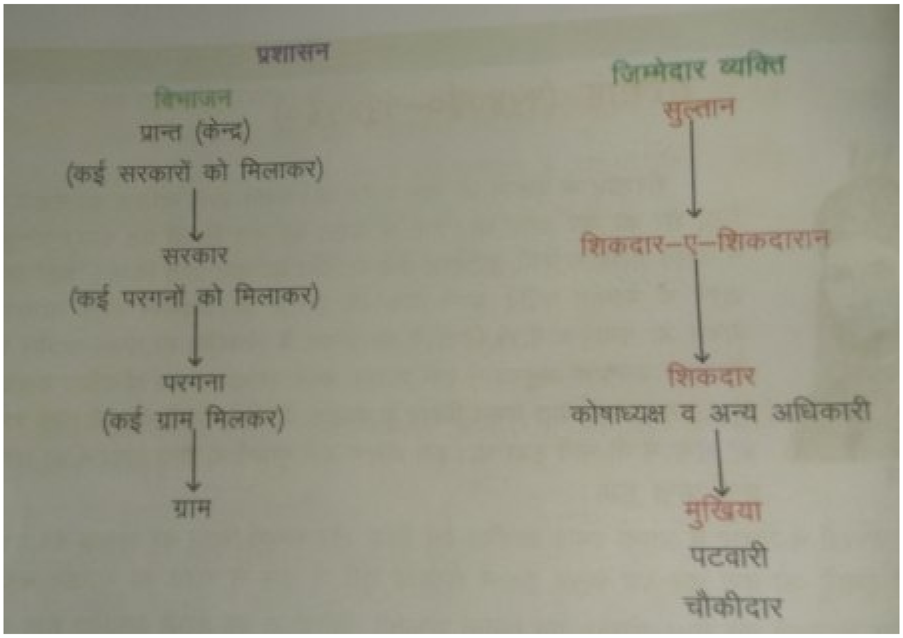

प्रजा हित के कार्य

सोनार गाँव (बंगाल) से पेशावर को जोड़ने वाली सड़क बनवाई जिसे ग्राण्ड-ट्रंक-रोड कहते हैं। इससे यातायात और संचार व्यवस्था में गति आई।

बुरहानपुर तथा जौनपुर को दिल्ली से जोड़ दिया गया। इससे व्यापार को बढ़ावा मिला।

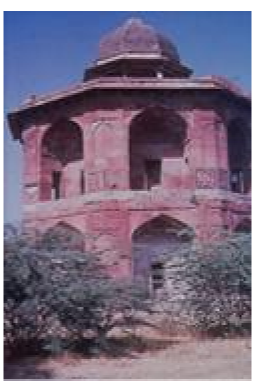

शेर-ए-मंडल पुस्तकालय

सड़कों के दोनों ओर वृक्ष लगवाए, विश्राम के लिए सराय बनवाईं तथा पानी के लिए कुएँ खुदवाए।

उसने शिक्षा के विकास के लिए कई मदरसे व मकतब भी खुलवाए।

शेरपुर (दिल्ली के निकट) नामक नगर यमुना के किनारे बसाया।

शेर-ए-मंडल शेरशाह द्वारा दिल्ली के पुराने किले में बनवाया गया था जिसको हुमायूँ ने बाद में पुस्तकालय का रूप दे दिया था।

सूरवंश का पतन

1545 ई0 में कालिंजर के युद्ध में वह घायल हो गया तथा कुछ दिनों के बाद उसकी मृत्यु हो गयी। शेरशाह की मृत्यु के पश्चात उसके

उत्तराधिकारियों ने 10 वर्षों तक शासन किया लेकिन ये उत्तराधिकारी इतने योग्य नहीं थे कि वे शेरशाह द्वारा स्थापित साम्राज्य की देखभाल कर सकते। अन्ततः उनके हाथ से साम्राज्य निकल गया तथा उसके वंश का पतन हो गया।

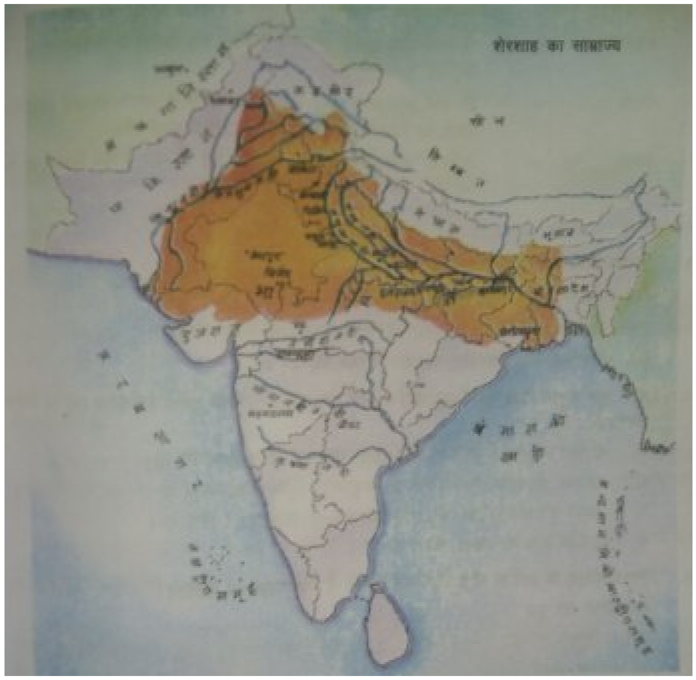

शेरशाह सूरी ने यद्यपि मात्र 5 वर्ष के लिए शासन किया परन्तु उसने एक ऐसा सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था का ढाँचा तैयार किया जिससे बाद में मुगलों को मुगल साम्राज्य की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में लाभ मिला।

सासाराम में स्थित शेरशाह का मकबरा स्थापत्य कला का सुन्दर नमूना है। यह उसने अपने जीवन काल में निर्मित कराया था।

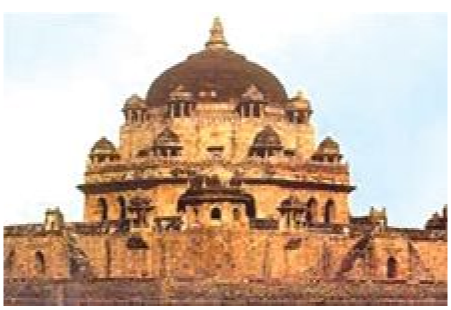

शेरशाह का मकबरा

- शब्दावली

कबूलियत - किसानों द्वारा अपनी भूमि एवं उस पर देय लगान का विवरण सरकार को लिखित रूप में देना।

पट्टा - किसानों द्वारा प्राप्त उनके जमीन के विवरण के आधार पर उन्हें पट्टा दिया जाता था जिसमें

लगान की दर भी लिखी होती थी।

सराय - यात्रियों, डाक कर्मियों तथा अधिकारियों के ठहरने एवं विश्राम के लिए स्थान।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) शेरशाह दिल्ली का शासक कैसे बना ?

(ख) शेरशाह द्वारा किये गए राजस्व सम्बन्धी सुधारांे का वर्णन कीजिए।

(ग) प्रजा की भलाई के लिए शेरशाह ने क्या किया ?

(घ) शेरशाह की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में आप क्या जानते हैं ?

2. नीचे कुछ कथन दिये गये हैं जो सही हों उन पर सही तथा गलत पर गलत का निशान लगाइए-

क. शेरशाह ने पत्र ले जाने के लिए डाक चैकियों की स्थापना की थी।

ख. सरकार की तरफ से किसानों को कबूलियत दिया जाता था।

ग. परगने का सबसे बड़ा अधिकारी शिकदार-ए-शिकदारान होता था।

घ. भूमि के नाप की इकाई मीटर थी।

3. निम्नलिखित के बारे में नीचे दिए गए स्थान में एक वाक्य में लिखिए।

(क) चैसा का युद्ध सन्
....

(ख) शेर-ए-मंडल
....
....

(ग) सासाराम
....
....

प्रोजेक्ट वर्क

वर्तमान समय की डाक व्यवस्था शेरशाह की डाक व्यवस्था से किस प्रकार अलग है ? पता करें और लिखें।

सड़कों से होने वाले लाभ पर आठ पंक्तियाँ लिखिए।

पाठ-10

अकबर का युग (1556-1605 ई0)

बाबर ने भारत में मुगल वंश की नींव रखी परन्तु उसे स्थायित्व प्रदान करने का कार्य अकबर ने किया। गुप्त वंश के लगभग 1000 वर्ष बाद अकबर ने भारत को पुनः एकता के सूत्र में बाँधा। अकबर एक महान विजेता होने के साथ ही प्रजा के हित में कार्य करने वाला शासक था।

अकबर का पूरा नाम जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर था। उनके पिता का नाम हुमायँू तथा माता का नाम हमीदा बानो बेगम था। पिता की मृत्यु के समय अकबर केवल तेरह वर्ष का था, लगभग आपकी उम्र का। हुमायूँ के विश्वास पात्र बैरम खाँ ने अकबर का राज्याभिषेक किया। अकबर अपने संरक्षक बैरम खाँ की देख-रेख में राज-काज करने लगा।

अकबर

पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई0)

अफगान राजा के हिन्दू सेनापति हेमू ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया जिसे मुक्त कराने के लिए 1556 ई0 में अकबर और हेमू के बीच पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ। हेमू की सेना पराजित हुई और पंजाब, आगरा तथा दिल्ली अकबर के अधिकार में हो गये।

साम्राज्य विस्तार

अकबर अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। इसके लिए उसने सीधे संघर्ष करने, वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने, अधीनता स्वीकार करने वालों को शासन में पद देने तथा

मित्रता करने की नीति अपनायी।

अकबर राजपूतों के साथ मित्रता का महत्व समझता था। अतः उसने राजपूत राजपरिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाया।

अकबर राजपूतों के साथ मित्रता का महत्त्व समझता था। अतः उसने राजपूत राजपरिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाया।

अकबर ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए अन्य विजय भी कीं। अरब, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापार की दृष्टि से गुजरात और बंगाल प्रान्त बहुत महत्त्वपूर्ण थे, जिन पर अकबर ने अपना अधिकार कर लिया। इससे राज्य की आमदनी बढ़ी। दक्षिण में अकबर का अहमदनगर की रानी चाँदबीबी से युद्ध हुआ। अकबर ने अहमदनगर के कुछ भागों को अपने अधिकार में कर लिया। उसने गोंडवाना (मध्य प्रदेश) की शासिका दुर्गावती को हराया। इस तरह अकबर ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो कश्मीर से अहमदनगर तथा काबुल से बंगाल तक फैला हुआ था।

कबर ने आमेर के राजपूत राजा, राजा भारमल की पुत्री से विवाह किया।
ाज खुशी का दिन है। अकबर से हमारा रिश्ता जुड़ गया।
हाँ, आप सही कहते हैं, महाराज।
अकबर का यह विवाह हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच सद्भावना को बढ़ाने की एक कोशिश थी, इससे उसकी धार्मिक सहिष्णु
का भी पता चलता है।

यह सुनकर मुझे खुशी हुई, मानसिंह।
यह जरूरी है कि हिन्दू मुझ पर विश्वास करें।
झुकाने से इनकार कर दिया।
... और जल्दी ही अकबर की सेना और राणा का सामना सन् १५७६ में हल्दीघाटी के मैदान में हुआ।

अकबर ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए अन्य विजय भी कीं। अरब, यूरोप, दक्षिण–पूर्व एशिया से व्यापार की दृष्टि से गुजरात और बंगाल प्रान्त बहुत महत्वपूर्ण थे, जिन पर अकबर ने अपना अधिकार कर लिया। इससे राज्य की आमदनी बढ़ी। दक्षिण में अकबर का अहमदनगर की रानी चाँदबीबी से युद्ध हुआ। अकबर ने अहमदनगर के कुछ भागों को अपने अधिकार में कर लिया। उसने गोंडवाना (मध्य प्रदेश) की शासिका दुर्गावती को हराया।

← चाँदबीबी अपनी सेना को मुगल सेना पर आक्रमण का आदेश देते हुए

इस तरह अकबर ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो कश्मीर से अहमदनगर तथा काबुल से बंगाल तक फैला हुआ था।

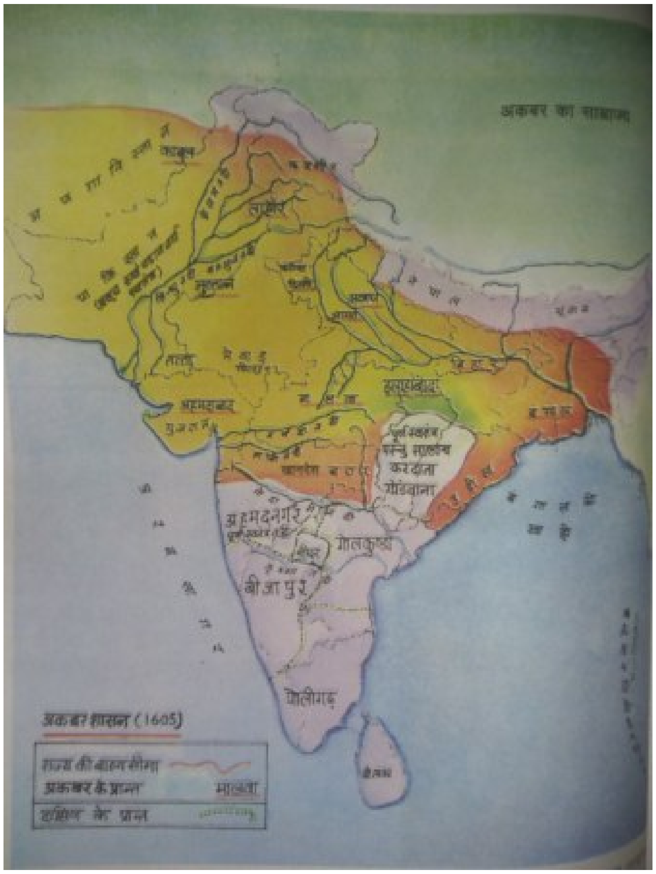

सोचिए और बताइए कि अकबर से पूर्व उसके साम्राज्य से बड़ा किस राजा/वंश का साम्राज्य था।

....
...............................।

शासन व्यवस्था

अकबर ने साम्राज्य के प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए साम्राज्य को कई स्तरों में बाँट रखा था। प्रशासन के कार्यों की देख-रेख के लिए केन्द्र से लेकर गाँव तक जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति की थी।

मनसबदारी व्यवस्था

अकबर बिना सुदृढ़ सेना के न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था, और न ही उस पर अपना अधिकार बनाये रख सकता था। इसके लिए अकबर को अपने सैनिक-अधिकारियों

और सिपाहियों को सुगठित करना था। उसने इन दोनों लक्ष्यों की पूर्ति मनसबदारी प्रणाली से की।

शासन का काम चलाने वाले कई अधिकारी और कर्मचारी होते हैं। मुग़ल काल में उन्हें मनसबदार कहा जाता था। पूरे मुग़ल साम्राज्य में हज़ारों छोटे-बड़े मनसबदार यानी शासकीय अधिकारी व कर्मचारी थे।

मनसबदार साम्राज्य में बादशाह के कानून और आदेश लागू करते थे। बादशाह के खिलाफ अगर कोई विद्रोह करे तो मनसबदार विद्रोह दबाते थे। मुग़ल साम्राज्य की रक्षा करना और दूसरे क्षेत्रों में मुगल वंश का राज्य फैलाना भी मनसबदारों का काम था।

उन दिनों मुग़ल अमीरों यानी बड़े मनसबदारों को जितना वेतन मिलता था, उतना दुनिया के किसी भी अन्य राज्य के अधिकारियों को नहीं मिलता था। तभी तो मुग़ल अमीर बड़ी शान-शौकत से रहते थे।

अकबर काल का प्रशासनिक ढाँचा

साम्राज्य के अंग जिम्मेदारी कार्य

(क)केन्द्र बादशाह सेना, प्रशासन व न्याय

दीवान वित्तीय नियंत्रण

(ख)प्रान्तीय सूबेदार कानून, फौजदारी

प्रान्तीय दीवान राजस्व वसूली, आय-व्यय विवरण

कोतवाल नगर का प्रशासन

(ग)परगना शिकदार कानून एवं व्यवस्था

आमिल राजस्व वसूली

कानूनगो उपज एवं राजस्व का विवरण

फोतदार कोष की व्यवस्था

(घ)गाँव मुकद्दम (प्रधान) कानून एवं व्यवस्था

पटवारी राजस्व का विवरण

चौकीदार सुरक्षा का दायित्व

अकबर द्वारा निश्चित प्रशासनिक ढाँचा आने वाले मुगलों के प्रशासनिक ढाँचे का आधार बना। आज भी उत्तर प्रदेश में कई पदनाम व प्रशासनिक क्षेत्र इन नामों से जाने जाते हैं।

अकबर का वित्तीय-प्रबन्धन

राज्य की आय के दो प्रधान साधन थे। भूमि का लगान तथा व्यापार पर कर। प्रत्येक गाँव का लगान निश्चित कर दिया गया था। किसानों से उपज का एक तिहाई भाग लगान के रूप में वसूल किया जाता था। किसी भी भूमि में एक निश्चित उपज न होने के कारण अकबर लगान का प्रबन्ध समय-समय पर कराने के पक्ष में था। उसने भूमि की नाप कराकर लगान का लेखा बनाने का कार्य राजा टोडरमल को सौंपा। लगान की इस व्यवस्था से किसानों को सुविधा हुई। उनको अब मालूम रहता था कि उपज का कितना भाग उनको लगान में देना है।

अकबर कालीन सिक्के

अकबर कालीन सोने का सिक्का

अकबर कालीन चौकोर चाँदी का सिक्का

कृषि एवं भू-राजस्व प्रबन्धन

कृषि मुगल बादशाहों की समृद्धि का आधार थी। कृषि उपज की वृद्धि के लिए विशेष ध्यान दिया गया। इस समय एक ही खेत से विभिन्न फसलों का उत्पादन किया जाता था। कृषि क्षेत्र

का विस्तार किया गया। भू-प्रबन्धन में हमें प्राचीन भारत से लेकर मध्यकाल तक एकरूपता दिखाई देती है। भू-कर निर्धारण के लिए पूरे राज्य की पैमाइश की गई। भूमि की पैमाइश 'गज-ए-इलाही' द्वारा की जाती थी। यह पूर्ववर्ती गज-ए-सिकंदरी का परिवर्तित रूप था। खेत के माप के लिए बीघा का प्रयोग होता था। एक बीघा साठ (60) गज लम्बा व साठ (60) गज चौड़ा होता था।

अकबर: सामाजिक सामन्जस्य के प्रयास

अकबर जानता था कि हिन्दुओं के सहयोग के बिना वह न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था और न ही साम्राज्य पर अपना अधिकार बनाये रख सकता था। इसके लिए उसने अनेक हिन्दुओं को मनसबदार बनाया इनमें अधिकांश राजपूत राजा थे जिनसे अकबर ने वैवाहिक सम्बन्ध बनाये तथा व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित किये।

अकबर की धार्मिक सहिष्णुता का परिचय फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना के निर्माण से पता चलता है जिसमें वह सभी धर्मों के गुरुओं से उनके धर्म की अच्छी बातों को सुनता और उन पर चर्चा करता। उसने इस्लाम, हिन्दू, फारसी, जैन, ईसाई आदि धर्मों की अच्छी बातों को लेकर एक नए धार्मिक मार्ग दीन-ए-इलाही की रूपरेखा बनाई। इसका उद्देश्य एकता स्थापित करना था। अकबर ने सुलहकुल की नीति अपनायी जिससे इतने बड़े राज्य का काम शान्तिपूर्ण ढंग से चल सके तथा सब लोगों का समर्थन मिलता रहे। इस नीति को अकबर के बाद आने वाले मुगल बादशाहों ने भी अपनाया। इस नीति पर हम भक्ति एवं सूफी आन्दोलनों का स्पष्ट प्रभाव देख सकते हैं।

इस नीति का पालन करते हुए राजमहल में अकबर ने हिन्दू, पारसी आदि धर्मों की कुछ रीतियाँ माननी शुरू कर दीं। गीता, महाभारत, अथर्ववेद, बाइबिल, कुरान, पंचतंत्र, सिंहासनबत्तीसी व विज्ञान की भी कई पुस्तकों का फारसी भाषा मंे अनुवाद कराया गया ताकि फारसी बोलने वाले मुसलमान उन्हें पढ़कर समझ सकें।

अकबर ने हिन्दुओं पर से यात्रा तथा जजिया कर हटा दिया। उसने गैर मुसलमानों के धर्म परिवर्तन की प्रथा को समाप्त किया। इन कार्यों से उसने एक ऐसे साम्राज्य की आधारशिला रखी जो बिना किसी भेदभाव के सभी लोगों के समान अधिकारों पर आधारित था। इस प्रकार अकबर के शासनकाल में राज्य अनिवार्य रूप से धर्म निरपेक्ष, सामाजिक विषयों में उदार और चेतना तथा सांस्कृतिक एकता को प्रोत्साहन देने वाला बन गया है।

साहित्य

अकबर सदैव विद्वानों से विचार-विमर्श करता था। इस समय की राजभाषा फारसी थी। इस समय अबुल फजल, फैजी, बदायूँनी उच्चकोटि के लेखक तथा साहित्यकार थे। अबुल फजल ने 'अकबरनामा' की रचना की। महाभारत तथा रामायण का फारसी में अनुवाद किया गया। अब्दुर्रहीम खानखाना के हिन्दी में लिखे दोहे आज भी लोकप्रिय हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना भी इसी समय की। इस समय हमारे देश में कागज पर लिखने का कार्य आरम्भ हो गया था। यद्यपि इसकी शुरुआत चीन में हुई। प्रमुख संगीतकार तानसेन अकबर के प्रमुख दरबारियों में थे।

और भी जानिए

अकबर के नवरत्न

अकबर विद्वानों का आश्रयदाता था। उसके दरबार में अनेक प्रसिद्ध विद्वान थे। मुल्ला दो प्याजा, हकीम हुमाम, अब्दुर्रहीम खानखाना, अबुल फज़ल, तानसेन, राजा मानसिंह, राजा टोडरमल, फैजी एवं राजा बीरबल उसके दरबार के 'नवरत्न' थे।

कला

अकबर ने आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी नामक नगर का निर्माण कराया और इसे कुछ वर्षों के लिए अपनी राजधानी बनाया। इस नगर में उसने भव्य इमारतों का निर्माण करवाया।

नीचे दिए गए चित्रों को देखकर इन इमारतों के बारे में जानिए।

अकबर द्वारा बनवाया गया एक महल

हवा लेने के लिए बना हवा महल

फतेहपुर सीकरी

दीवान-ए-आम, आगरा का लालकिला

बुलन्द दरवाजा, फतेहपुर सीकरी

(यह अकबर ने अपनी गुजरात

विजय स्मारक के रूप में बनवाया था)

दीवान-ए-खास

सलीम चिश्ती की दरगाह, आगरा

(अकबर द्वारा निर्मित, किन्तु

शाहजहाँ द्वारा संगमरमर की इमारत में परिवर्तित)

अकबर अपने दीवान-ए-आम में राज्य के लोगों से मुलाकात करता था तथा दीवान-ए-खास में

अपने मंत्रियों से शासन सम्बन्धी मंत्रणा करता था।

जयपुर में भी 'हवा लेने के लिए' पंचमहल की तरह एक इमारत है, उसका नाम लिखिए

....

..........................।

शब्दावली -

इबादतखाना - प्रार्थना गृह

पंचतंत्र - नीति कथाओं की पुस्तक

संरक्षक - नाबालिग की देखभाल के लिये नियुक्त व्यक्ति

दीन-ए-इलाही - अकबर द्वारा चलाया गया धार्मिक मार्ग। दीन-ए-इलाही का अर्थ है एक ईश्वर की उपासना का धर्म।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

(क) अकबर के संरक्षक का नाम क्या था?

(ख) पानीपत का द्वितीय युद्ध कब, कहाँ और किसके मध्य हुआ ?

(ग) अकबर ने अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए क्या नीति अपनाई ?

(घ) हल्दी घाटी का युद्ध कब, कहाँ और किसके मध्य हुआ ?

(ङ) गुजरात और बंगाल विजय से राज्य को क्या लाभ हुआ ?

(च) चाँदबीबी कौन थी?

(छ) अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता बढ़ाने के लिए क्या किया ?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प के सामने (झ) का निशान लगाइए-**

(क) हल्दी घाटी का युद्ध हुआ-

1. चाँदबीबी एवं मुगलों के बीच 2. शेरशाह एवं हुमायूँ के बीच

3. मुगल एवं अफगानों के बीच 4. अकबर एवं महाराणा प्रताप के बीच

(ख) फतेहपुर सीकरी का निर्माण कराया-

1. हुमायूँ ने 2. शेरशाह ने 3. अकबर ने 4. खुसरो ने

गतिविधि- 1 रुपया, 2 रुपये, 5 रुपये व 10 रूपये के सिक्कों को अपनी पुस्तिका में छापिए।

प्रोजेक्ट वर्क

पाठ में दिए गए मानचित्र को देखकर अकबर के साम्राज्य के प्रमुख राज्यों की सूची बनाइए तथा भारत के रेखा मानचित्र में उसका साम्राज्य लाल रंग से दिखाइए।

पाठ-11

जहाँगीर एवं शाहजहाँ

जहाँगीर एक न्यायप्रिय शासक था और अपने इस उत्तरदायित्व को ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य मानता था। वह सुशिक्षित, सुसभ्य एवं प्रजापालक था, उसने अपने पिता से प्राप्त साम्राज्य को सुरक्षित और सम्पन्न रखा।

जहाँगीर

जहाँगीर (1605-1627ई0)

जहाँगीर अकबर का पुत्र था। उसके बचपन का नाम सलीम था। अकबर के नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना से सलीम ने तुर्की तथा फारसी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। अकबर की मृत्यु के बाद सलीम का राज्याभिषेक नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर के नाम से हुआ।

विद्रोह एवं दमन

गद्दी पर बैठते ही जहाँगीर को सर्वप्रथम अपने पुत्र खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जहाँगीर ने खुसरो को आगरे के किले में नजरबंद कर लिया किन्तु खुसरो कैद से

भागकर लाहौर पहुँचा। वहाँ उसने सिखों के पंचम गुरु अर्जुनदेव से अपनी सेना के लिए आर्थिक सहयोग लिया लेकिन खुसरो की सेना परास्त हो गयी। खुसरो की सहायता के कारण गुरु अर्जनदेव को मृत्युदण्ड दिया गया। सिख गुरु की फाँसी जहाँगीर के लिए नीति विरुद्ध कार्यवाही सिद्ध हुई, क्योंकि इससे सिखों का, जो तब तक एक शान्तिप्रिय समुदाय थे, मन खट्टा हो गया और वे साम्राज्य के शत्रुओं के रूप में परिवर्तित हो गये।

जहाँगीर की सबसे बड़ी सफलता मेवाड़ के राजपूतों की विजय थी। जहाँगीर ने मेवाड़ पर आक्रमण के लिए अपने पुत्र खुर्रम (शाहजहाँ) को भेजा। खुर्रम ने वहाँ के राणा अमरसिंह को संधि करने के लिए विवश किया। दक्षिण भारत में अहमद नगर पर जहाँगीर के पुत्र खुर्रम ने आक्रमण करके मुगल साम्राज्य का अंग बना लिया। इस उपलब्धि के कारण ही जहाँगीर ने खुर्रम को 'शाहजहाँ' की उपाधि प्रदान की। जहाँगीर ने अकबर की सुलहनीति का अनुसरण करके मेवाड़ को उदार शर्तें देकर राजपूतों की राजभक्ति प्राप्त कर ली जो औरंगजेब की अनीतियों के पहले तक मुग़ल साम्राज्य के प्रति बनी रही।

जहाँगीर ने कई शक्तिशाली सरदारों एवं राजपूतों को ऊँची पदवी दी जिससे उसका साम्राज्य सुदृढ़ हो।

जहाँगीर: एक व्यक्तित्व

जहाँगीर ने "सब लोगों के हृदयों पर विजय पाने" का प्रयत्न किया। उसने अपने विरोधियों को सामान्य रूप से क्षमादान कर दिया, बंदियों को मुक्त किया और न्याय की प्रसिद्ध जंजीर लगवायी जिसे कोई भी बजाकर सीधे बादशाह से फरियाद कर सकता था। उसने कई घोषणाएँ भी करवायीं जिससे उसके राज्य के लोगों में अच्छे आचरण की प्रवृत्ति का विकास हो।

जहाँगीर कला एवं साहित्य का प्रेमी था। वह स्वयं विद्वान था। उसने फारसी में 'तुजुके जहाँगीरी' नामक आत्मकथा लिखी। उसे उद्यान लगाने का भी शौक था। जहाँगीर चित्रकला का बड़ा कुशल पारखी था। वह एक ही चित्र में विभिन्न चित्रकारों द्वारा बनाये गये मुख, शरीर तथा पैरों को अलग-अलग पहचान सकता था।

जहाँगीर के शासन काल में पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक स्थिति मजबूत ही रखी। उसके काल में अंग्रेजों तथा मुग़लों के मध्य नवीन सम्बन्धों का विकास हुआ। जहाँगीर पुर्तगालियों और अंग्रेजों को नजरअंदाज नहीं कर सका क्योंकि इन दोनों की नौसेनाएँ सुदृढ़ थीं।

इंग्लैण्ड के सम्राट ने व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए हॉकिन्स को तथा उसके बाद सर टॉमस रो को आधिकारिक राजदूत बनाकर भारत भेजा। उसने जहाँगीर से अंग्रेजों के लिए भारत में व्यापार करने की आज्ञा प्राप्त की। जहाँगीर अंग्रेजों के जहाजी बेड़े से पहले से ही प्रभावित था। अतः उसने अंग्रेजों को भारत में व्यापार करने की आज्ञा दे दी। अंग्रेजों द्वारा भारत में ब्रिटिश राज्य स्थापित करने का यह प्रथम चरण था।

जहाँगीर को मदिरा पान की बुरी आदत थी जिससे उसके चरित्र के उत्तम पहलू धीरे-धीरे नष्ट हो गये तथा उसके स्वभाव में असंगति आ गयी जो उसके पतन का कारण बनी। सन् 1627 ई0 में जहाँगीर की मृत्यु हो गयी।

जहाँगीर के काल में नूरजहाँ का प्रभाव

नूरजहाँ का बचपन का नाम मेहरुन्निसा था। उसका पिता गयासबेग तेहरान का निवासी था। उसका विवाह शेर अफ़गन नामक एक ईरानी के साथ हुआ था। उसकी बुद्धि एवं सुन्दरता के कारण उसे जहाँगीर द्वारा नूरजहाँ की उपाधि दी गयी।

नूरजहाँ

जहाँगीर के शासनकाल में नूरजहाँ की भूमिका महत्वपूर्ण थी। नूरजहाँ योग्य महिला थी। उसने राज्य के कार्यों में जहाँगीर को पूरा सहयोग किया एवं बादशाह के व्यसनों पर

नियंत्रण किया। नूरजहाँ बड़ी बलवती और साहसी महिला थी। वह जहाँगीर के साथ शिकार को जाती, शेरों को स्वयं मारती तथा युद्ध में भी सक्रिय योगदान देती थी। वह एक सुशिक्षित तथा सुसंस्कृत महिला थी। कला में उसकी विशेष रुचि थी।

शाहजहाँ (1628-1658ई0)

मुगलों का एक विशाल साम्राज्य था। इतने विशाल साम्राज्य की व्यवस्था के लिए बराबर सजग रहना पड़ता था। विरोधियों के दमन के लिए प्रायः बादशाह या उनके सूबेदार जाया करते थे।शहजादा खुर्रम 1628 ई0 में शाहजहाँ के नाम से आगरा के सिंहासन पर बैठा। शाहजहाँ के राज्याभिषेक के समय बुन्देलखण्ड का शासक जुझार सिंह उनसे मिलने आगरा गया और मित्रता बनाने के अवसर पाकर जुझार ंिसह ने गोंडवाना पर चढ़ाई कर दी। बादशाह ने इस विद्रोह को शीघ्र ही दबा दिया।

दक्षिणी विजय के अभियान के अन्तर्गत सबसे पहले मुगल सेनाओं ने 1633 ई0 में अहमदनगर पर आक्रमण किया और उसे साम्राज्य में मिला लिया। इसके बाद शाहजहाँ के पुत्र औरंगजेब के नेतृत्व में बीजापुर और गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। बीजापुर और गोलकुण्डा के सुल्तानों ने आत्मसमर्पण कर मुगलों के साथ शान्ति समझौता कर लिया। बाद में शाहजहाँ ने पुर्तगालियों पर भी विजय प्राप्त कर ली। सन् 1666 ई0 में शाहजहाँ की मृत्यु हो गयी।

शाहजहाँ की उपलब्धि

मुगल स्थापत्य कला हिन्दू एवं मुस्लिम स्थापत्य कला का मिश्रण है। शाहजहाँ की शानो शौकत का प्रमाण उसके द्वारा बनवाई गई इमारतें है। शाहजहाँ ने दिल्ली में एक नए किले

का निर्माण कराया, जिसे 'शाहजहाँनाबाद' कहा गया। यही वर्तमान में दिल्ली का लालकिला कहलाता है।आगरा में यमुना नदी के किनारे ताजमहल, उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की मृत्यु पर उसकी स्मृति में बनवाया था। यह सफेद संगमरमर का बना है। प्रेम के प्रतीक के रूप में आज यह पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। पता करके लिखिए कि संसार में और कौन-कौन से आश्चर्य हैं और कहाँ स्थित हैं।

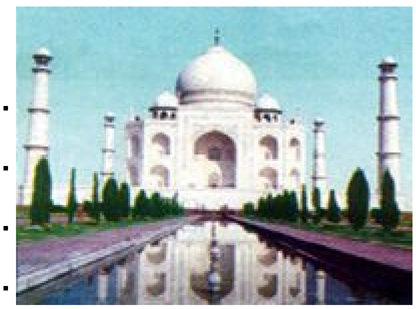

....

....

....

....

....

....

....

....

....

.........।

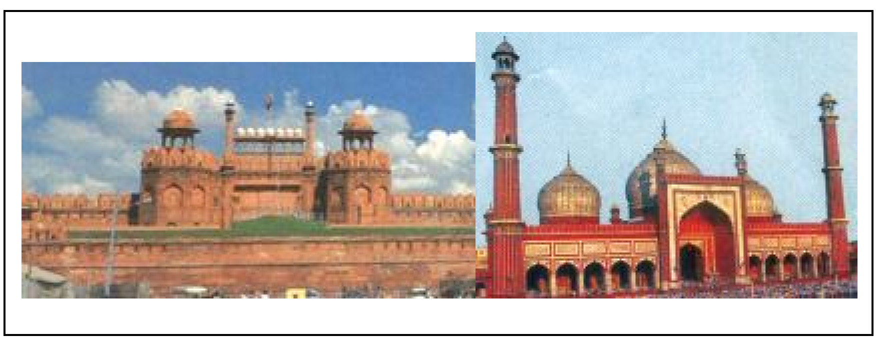

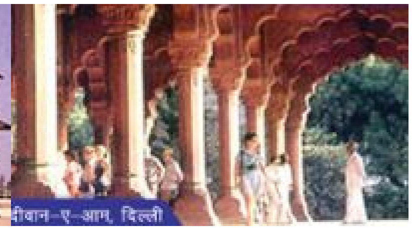

शाहजहाँ अपने मंत्रियों से दीवान-ए-खास में शासन सम्बन्धी मंत्रणा करता था तथा दीवान-ए-आम में राज्य के लोगों से मुलाकात करता था।

उसने दिल्ली के लाल किले में दीवान-ए-आम तथा दीवान-ए-खास बनवाये जो अपनी सुन्दरता में बेजोड़ हैं। शाहजहाँ ने दिल्ली में स्थित जामा मस्जिद भी बनवायी।दीवान-ए-खास में अन्दर कीमती चाँदी की छत थी तथा उसमें संगमरमर, सोने और बहुमूल्य पत्थरों की मिलीजुली सजावट थी। शाहजहाँ ने आगरा में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया। आगरा की जामा मस्जिद को मस्जिद-ए-जहाँनामा भी कहा जाता है।बहुमूल्य रत्नों से जड़ित मयूर िसंहासन (तख़्ते ताउस) शाहजहाँ ने बनवाया था। विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर भी इसमें लगवाया गया था। सिंहासन सुनहरे रंग में एक खाट के रूप में था तथा मीनाकारी किए हुए पन्ने के बारह खम्भों पर आधारित था। प्रत्येक स्तम्भ पर रत्नों से जड़े दो मयूर थे। प्रत्येक जोड़े पक्षियों के बीच हीरे, पन्ने, लाल मणियों तथा मोतियों से आच्छादित एक वृक्ष था मयूर सिंहासन को सन् 1739 ई0 में नादिरशाह लूटकर ईरान ले गया।

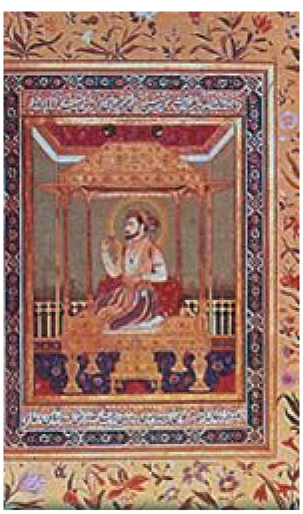

शाहजहाँ मयूर सिंहासन पर बैठे हुए

साहित्य

शाहजहाँ के समय में फारसी, संस्कृत तथा हिन्दी सभी भाषाओं में उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे गये। उसका पुत्र दारा शिकोह संस्कृत का विद्वान था। उसने उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद किया।

> और भी जानिए
>
> अकबर के काल में भवन निर्माण की सामग्री के रूप में लाल बलुआ पत्थर तथा अलंकरण हेतु संगमरमर का प्रयोग होता था।
>
> शाहजहाँ के काल में संगमरमर भवन निर्माण की आधार सामग्री हो गयी। अलंकरण पच्चीकारी के माध्यम से होने लगा। संगमरमर पर रत्नों की जड़ाई को 'पच्चीकारी' कहते हैं।

शब्दावली

मनसबदार - मुगल अधिकारियों को दी जाने वाली पदवी

मकबरा - बादशाहों की कब्र के ऊपर बना स्मारक

पैमाइश - भू-सर्वेक्षण के लिए की जाने वाली भवनों, खेतों, जमीनों आदि का नाप

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) जहाँगीर के बचपन का क्या नाम था ?

(ख) जहाँगीर ने खुर्रम को कौन सी उपाधि प्रदान की और क्यों ?

(ग) सर टॉमस रो कौन था ? वह भारत क्यों आया ?

(घ) शाहजहाँ का काल स्थापत्य निर्माण के लिए याद किया जाता है ? उल्लेख कीजिए।

2. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही और गलत का चिह्न लगाइए-

क. जहाँगीर ने बादशाह तक अपनी फरियाद पहुँचाने के लिए न्याय की जंजीर लटकवाई।

ख. शाहजहाँ के राज्याभिषेक के समय बुन्देलखण्ड का शासक जुझार ंिसंह उनसे मिलने आगरा नहीं गया।

ग. बहुमूल्य रत्नों से जड़ित मयूर सिंहासन को शाहजहाँ ने बनवाया था।

घ. मयूर सिंहासन (तख्ते ताउस) जहाँगीर ने बनवाया था।

प्रोजेक्ट वर्क

अध्यापक की सहायता से अपने जनपद के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण इमारतों, स्थलों का पता लगाइए व उनके बारे में निम्नलिखित बिन्दुओं पर अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए-

- इन इमारतों को किसने बनवाया ?
- इन्हें बनाने में किन चीजों का इस्तेमाल किया गया है ?
- इनकी देख-भाल कौन करता है ?
- यदि आपको ऐसी इमारतों की देख-भाल व सुरक्षा की जिम्मेदारी दी जाए तो आप क्या करेंगे ?

पाठ-12

औरंगज़ेब

औरंगज़ेब मुगलवंश का अन्तिम शक्तिशाली शासक था, उसने मुगल साम्राज्य को दक्षिण तक विस्तार दिया। औरंगज़ेब विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहा, परन्तु इसी समय मुगलवंश पतनोन्मुख हो गया था।

औरंगज़ेब (1658 ई0-1707 ई0)

औरंगज़ेब

शाहजहाँ के बाद औरंगज़ेब 1658 ई0 में सिंहासन पर बैठा। उसने शासन की बागडोर सँभालने के बाद तड़क-भड़क का परित्याग करके सादगी का जीवन अपनाया। उसने मदिरा, भाँग आदि के सार्वजनिक सेवन पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा अनैतिकता को रोकने व जन आचरण पर नजर रखने हेतु मुहतस्सिब नियुक्त किए। उसने दरबारी नृत्य, संगीत पर भी रोक लगाई किन्तु संगीत को राज्य से प्रतिबंधित नहीं किया। वह स्वयं एक सिद्धहस्त वीणावादक था। समारोहों के समय हरम में संगीत का आयोजन परम्परागत ढंग से होता रहा।

क्या पिछली कक्षा में आपने किसी ऐसे शासक के बारे में पढ़ा है जो वीणा बजाता था ?

मुस्लिमों से ज़कात (धार्मिक कर) लिया जा रहा था। गैर मुस्लिमों से ”ज़जिया“ की पुनः वसूली प्रारम्भ की गई ।

औरंगज़ेब को शासन ग्रहण करते ही अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ा। मुग़ल राज्य में अधिकारियों की संख्या बढ़ती जा रही थी, जिनके लिए पर्याप्त जागीरें तथा वेतन की व्यवस्था होना आवश्यक था। इसके अलावा लगान भी कम मिल रहा था क्योंकि जागीरदार तबादले की आशंका से जागीरों के अन्दर ही खेती बढ़ाने में रुचि नहीं रखते थे। औरंगज़ेब की स्थिति एक ऐसे वैद्य के समान थी जिसके पास एक अनार हो और सौ बीमार हों।

इस स्थिति से निपटने के लिए एक विकल्प था- दूसरे राज्यों को अपने राज्य में मिलाकर अपने राज्य का विस्तार करना। इसी सोच में उसने अहोम (असम) राज्य, बीजापुर और गोलकुण्डा को अपने अधिकार में ले लिया पर जितना लगान इन राज्यों को मिलाने पर मिलता था, उतना ही नये अमीरों पर खर्च करना पड़ता। समय-समय पर उनके विद्रोहों को शान्त करने के लिए धन, समय व ऊर्जा भी व्यय करनी पड़ती।

औरंगज़ेब को जाटों, बुन्देलों, सिखों, सतनामियों और उत्तर पश्चिम सीमा क्षेत्रों के पठानों के विद्रोह के साथ ही राजपूतों एवं मराठों के साथ भी लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ा। औरंगजेब और जाटों का संघर्ष 1669 में प्रारम्भ हुआ तथा 1691 में उसने जाटों का दमन किया किन्तु यह विद्रोह पूर्ण रूप से शान्त नहीं हुआ और जाटों का संघर्ष चलता रहा।

इसके अतिरिक्त मेवात तथा नारनौल के सतनामियों ने भी समय-समय पर विद्रोह किये।

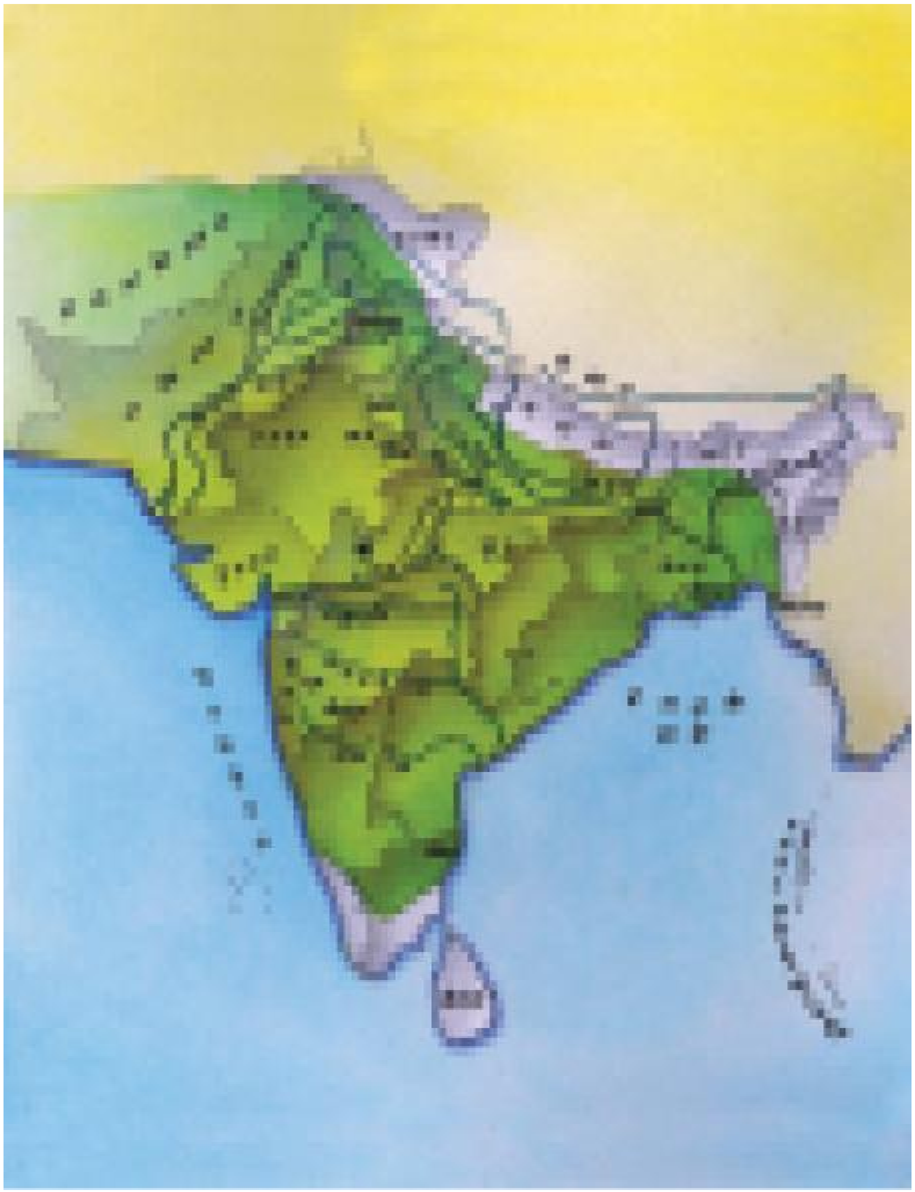

औरंगज़ेब का साम्राज्य

उसके समय तक मुग़ल तथा सिखों के मध्य सम्बन्ध काफी बिगड़ गये। सिखों की शक्ति निरन्तर बढ़ती जा रही थी जिसको रोकने के लिए उसने पंजाब के मुग़ल अधिकारियों को आदेश दिये। मुग़लों की सेना तथा सिखों के गुरु गोविन्द सिंह के नेतृत्व में युद्ध हुआ जिसमें सिख पराजित हुए। इसके साथ ही औरंगज़ेब को पठानों से भी जूझना पड़ा, जो अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील थे तथा अंग्रेजों ने भी इन्हें समाप्त करने का संकल्प किया। उसने कूटनीति तथा दमनकारी नीति अपनाकर सन् 1678 तक

पठानों का विद्रोह समाप्त कर दिया।औरंगज़ेब को राजपूतों का भी सामना करना पड़ा यद्यपि उसे स्वयं राजगद्दी प्राप्त करने में अनेक राजपूत सरदारों का सहयोग प्राप्त हुआ था। उसने राजपूत राजा जयसिंह तथा जसवंत सिंह आदि को उच्च पद तथा मनसब प्रदान किये किन्तु मारवाड़ के शासक जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद उस राज्य के उत्तराधिकार के पद को लेकर औरंगज़ेब तथा राजपूतों के सम्बन्ध खराब हो गये। अतः राजपूत मुग़लों के विरुद्ध हो गये जिसका मुग़ल साम्राज्य पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। मुगल सेना को शिवाजी से भी टक्कर लेनी पड़ी। शिवाजी ने कई बार मुगलों की विशाल सेनाओं को हराया। इन टक्करों में शिवाजी छापामार युद्ध का सहारा लेते थे। पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों ने भी औरंगजेब के समक्ष समस्याएँ उत्पन्न की।पुर्तगालियों ने बंगाल की खाड़ी में जहाजों को लूटना प्रारम्भ कर दिया तथा चटगाँव (बांग्लादेश) को अपना केन्द्र बनाया। अतः वहाँ मुग़ल सेना भेजी गयी जिसने चटगाँव को अपने अधिकार में कर अन्य भागों को भी मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया। पश्चिमी समुद्री तटों पर अंग्रेज भी उपद्रव कर रहे थे। अतः औरंगजेब ने उनके इस उपद्रव को भी समाप्त कर दिया।

मुगल साम्राज्य का पतन

औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ। मुगल दरबार सरदारों के बीच आपसी झगड़ों और षड्यंत्रों का अड्डा बन गया और शीघ्र ही महत्वाकांक्षी तथा प्रान्तीय शासक स्वतंत्र रूप में कार्य करने लगे। साम्राज्य की कमजोरी उस समय विश्व के सामने स्पष्ट हो गई जब सन् 1739 में नादिरशाह ने मुग़ल सम्राट को बंदी बना लिया तथा दिल्ली को खुले आम लूटा।मुग़ल काल में वाणिज्य तथा व्यापार का विकास हुआ परन्तु इस काल में मुग़ल सरदारों की विलासिता भी अधिक बढ़ गयी।प्रशासनिक स्तर पर व्यापक असंतोष और भेद-भाव फैला। इससे जागीरदारी व्यवस्था में गम्भीर संकट पैदा हो गया। अधिकतर सरदारों का यह प्रयास रहता था कि वे अधिक आमदनी वाली जागीर हथिया लें और इस कारण मुग़ल प्रशासन व्यवस्था में भ्रष्टाचार बढ़ता गया।सरदार स्वाधीनता की कल्पना करने लगे। मुग़ल प्रशासन बहुत हद तक केन्द्रित था और इसकी सफलता सम्राट की योग्यता पर निर्भर करती थी। योग्य सम्राटों के अभाव में वजीरों, सरदारों तथा मनसबदारों ने उनका स्थान लेने की चेष्टा की जो कि मुग़ल साम्राज्य के पतन का एक कारण बना।राजनीतिक क्षेत्र में औरंगज़ेब ने कई गंभीर गलतियाँ कीं। उसने मराठों एवं राजपूतों को मित्र बनाने की बजाय उन्हें अपना दुश्मन बना लिया।औरंगज़ेब

की मृत्यु तक मुग़ल राज्य दक्षिण तक फैल चुका था। पूरे साम्राज्य का नियंत्रण उत्तर भारत से ही होता था। बहुत दूर होने के कारण दक्षिण भाग पर प्रभावशाली नियंत्रण रखना सम्भव नहीं था। इसके कारण दक्षिण भारत के राज्य अपने को स्वतंत्र कराने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। मुग़ल साम्राज्य के पतन का कारण यूरोपियों का भारत में आगमन भी था। पहले उन्होंने भारत से व्यापार करने के लिए मुग़लों से इजाज़त माँगी परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने भारतीय राजनीति में दख़ल देना शुरू कर दिया और भारतीय राज्यों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने लग गए। धीरे-धीरे उन्होंने भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना की और 200 वर्षों तक भारत में राज्य किया।इसके अलावा नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली का आक्रमण भी मुग़ल साम्राज्य के पतन का कारण बना।

नादिरशाह फारस (ईरान) का शासक था। उसे ईरान का नेपोलियन भी कहा जाता था। भारत की अपार धन सम्पदा से आकर्षित होकर 1739 ई0 में मुगल बादशाह मोहम्मद शाह के शासन काल में उसने भारत पर आक्रमण किया। नादिरशाह भारत का कोहिनूर हीरा एवं तख्त-ए-ताउस सहित अनेक कीमती सामानों को लूटकर अपने साथ ले गया। वर्तमान समय में कोहिनूर हीरा ब्रिटेन की महारानी के मुकुट में जड़ा है।

मुगल साम्राज्य के पतन के मुख्य बिन्दु:

मुगल साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे-

- उत्तराधिकार के लिए होने वाले युद्ध में अपार धन एवं शक्ति नष्ट होती थी।
- सम्राट के कमजोर होने से प्रांतीय गवर्नर शक्तिशाली बन जाते थे और वे सम्राट के विरुद्ध विद्रोह कर देते थे।
- मुगल शासन के अंत तक राजकोष में न तो अधिक धन बचा था न ही जागीरें। अधिकारियों को वेतन देना कठिन हो गया, जमींदार असंतुष्ट होने लगे। अतः इनका सरदारों से संघर्ष आरम्भ हो गया।
- मुगलों का जीवन उच्चकोटि के शान-शौकत में व्यतीत होता था। इसके लिए वे काफी धन व्यय करते थे। इससे उनका सामाजिक और चारित्रिक पतन हो गया।
- इन सब कारणों से अठारहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य का पतन हो गया।

और भी जानिए

- औरंगज़ेब ने अपने शासन के पचास वर्षों में से लगभग आधा समय दक्षिण के युद्धों में व्यतीत किया।
- औरंगज़ेब ने शासन सँभालते ही जनता पर से लगभग 80 करों को हटा लिया था।
- औरंगज़ेब ने मुगल सिक्कांे पर से कलमा लिखा जाना बन्द करवा दिया था।

शब्दावली

कलमा-अल्लाह एक है और मुहम्मद उसके रसूल हैं।

नौरोज-वर्ष का पहला दिन (पारसियों का)

हरम-महल का वह हिस्सा जहाँ रानियाँ रहती थीं।

फरमान-शासन द्वारा जारी किया गया आदेश।

अभ्यास

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) औरंगज़ेब ने मुहतस्सिब की नियुक्ति क्यों की थी ?

(ख) मुगल साम्राज्य के पतन में किस सीमा तक औरंगज़ेब उत्तरदायी था ?

(ग) मुगलों के पतन के कारण के रूप में आर्थिक संकट का वर्णन

मुगल वंश(कुल .... वर्ष)

बाबर (संस्थापक)

(1526-1530ई0)(...... वर्ष)

हुमायूँ

(1530-1540 ई0 तथा

1555-1556 ई0)(...... वर्ष)

अकबर

(1556-1605 ई0)(...... वर्ष)

कीजिए।

(घ) राजपूतों के प्रति औरंगज़ेब की नीति के विषय में लिखिए।

2.प्रश्नांे के नीचे कुछ विकल्प दिये गये हैं जो सही हों उस पर सही (□) का निशान लगाइए-

क.सतनामियों ने किसके समय में विद्रोह किया -

जहाँगीर

(1605-1627ई0)(...... वर्ष)

शाहजहाँ

(1628-1658 ई0)(...... वर्ष)औरंगज़ेब

(1658-1707 ई0)(...... वर्ष)

अकबर, औरंगज़ेब, शाहजहाँ, जहाँगीर

ख.महाराजा जसवन्त सिंह का किस मुगल शासक से सम्बन्ध था-

औरंगज़ेब, अकबर, जहाँगीर, दाराशिकोह

प्रोजेक्ट कार्य -

अपनी पुस्तक में दिए गए मुगल शासकों में से किस शासक के कार्य आपको सबसे अच्छे लगे और क्यों ? अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

वर्तमान में यदि किन्हीं दो देशों के बीच युद्ध होता है तो वहाँ की जनता तथा शेष विश्व पर इसका क्या असर पड़ेगा ? सोचिए और अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

पाठ-13

मराठा राज्य का उदय एवं भारत में यूरोपियों का आगमन

मराठा शक्ति का उदय किसी एक व्यक्ति अथवा विशेष व्यक्ति समूह का कार्य न था, बल्कि इसका आधार महाराष्ट्र के सम्पूर्ण निवासी थे, जिन्होंने जाति, भाषा, धर्म, साहित्य और निवास स्थान की एकता के आधार पर राष्ट्रीयता की भावना को जन्म दिया।

औरंगज़ेब की प्रशासकीय अव्यवस्था के कारण केवल उत्तर भारत में ही नहीं वरन् दक्षिण भारत की मुस्लिम रियासतों में भी गहरा असन्तोष था। सोयी हुई मराठा जाति को रामदास, तुकाराम, श्री एकनाथ जैसे सन्तों ने एक भाषा, एक ही प्रकार के रीति-रिवाज और एक सी जीवन पद्धति की भावना उत्पन्न करके एक सूत्र में बाँध दिया। मराठों में राष्ट्रीय भावना का संचार करने के लिए शिवाजी के रूप में मराठों को एक वीर योद्धा तथा नेता मिल गया। शिवाजी ने मराठों को संगठित करके दक्षिण में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

शिवाजी (1674-1680ई0)

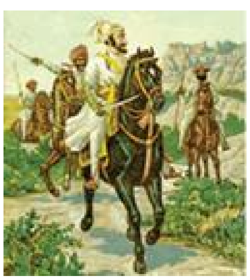

शिवाजी अपने सैनिकों के साथ

मराठा साम्राज्य के प्रथम शासक शिवाजी थे। शिवाजी का जन्म 6 अप्रैल 1627 ई0 को शिवनेर के दुर्ग में हुआ था। इनके पिता का नाम शाहजी भोंसले और माता का नाम जीजाबाई था। शाहजी भोंसले पहले अहमदनगर के निजाम तथा बाद में बीजापुर के दरबार में नौकरी करते थे। शिवाजी के पालन-पोषण का पूरा दायित्व उनकी माता जीजाबाई पर था। शाहजी ने शिवाजी को अपनी एक जागीर पुणे दे रखी थी। शिवाजी साहसी थे और सोचते थे कि वह दूसरे राजाओं की सेवा क्यों करें। खुद का राज्य क्यों न बना लें। मराठों का अलग राज्य बनाने

का उद्देश्य लेकर शिवाजी 18 साल की उम्र से ही सेना इकट्ठी करने लगे। धीरे-धीरे अपनी शक्ति संगठित करके एक स्वतंत्र राज्य बनाने के उद्देश्य से शिवाजी ने आस-पास के क्षेत्रों पर आक्रमण करके उन्हें जीत लिया। उन्होंने पूना के आसपास के कई पहाड़ी किलों को जीता और नये दुर्गों का निर्माण भी कराया, जैसे- रायगढ़ का दुर्ग।

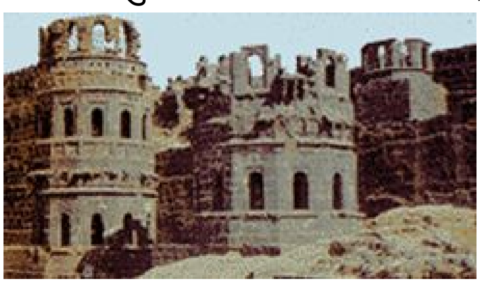

रायगढ़ का दुर्ग

शिवाजी को स्वतंत्र राज्य की स्थापना करने में दक्षिण के बीजापुर और अहमदनगर के सुल्तानों तथा दिल्ली के मुगल बादशाह से संघर्ष करना पड़ा। शिवाजी को मारने के लिए बीजापुर के सुल्तान ने अपने एक प्रमुख सेनापति अफजल खाँ को एक विशाल सेना के साथ भेजा। अफजल खाँ ने शिवाजी को मारने के लिए, चालाकी से उन्हें अपने तम्बू में बुलाया। आइए अब आगे की कहानी पढ़ें।

शिवाजी ... नियंत्रित करने के लिए मुगल बादशाह औरंगजेब ने सूबेदार शाइस्ता खाँ को भेजा। शिवाजी ने उसे परास्त कर दिया। इसके बाद औरंगजेब ने जयसिंह को शिवाजी के पास भेजा। जयसिंह के समझाने बुझाने पर औरंगजेब से संधि करने के लिए शिवाजी औरंगजेब के दरबार में गए।

वहाँ शिवाजी के स्वतंत्र व्यवहार से वह असंतुष्ट हो गया और उसने शिवाजी को कैद कर लिया। शिवाजी औरंगजेब की इस कैद से एक योजना बनाकर निकल गये। इसके बाद उन्होंने १६७० ई॰ में सूरत पर आक्रमण कर बहुत सी सम्पत्ति इकट्ठी कर ली। शिवाजी का रायगढ़ में एक पंडित गंगाभट्ट के द्वारा विधिवत राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की। शिवाजी का राज्य उत्तर में रामनगर (सूरत में स्थित) से लेकर दक्षिण में कारवार तक समुद्र तट के किनारे-किनारे फैला हुआ था। १६८० ई॰ में शिवाजी की मृत्यु हो गयी।

शिवाजी का शासन प्रबन्ध

- शिवाजी एक कुशल सैनिक, योग्य सेनापति तथा लोकप्रिय शासक थे। शिवाजी ने अपनी योग्यता के आधार पर मराठों को संगठित किया तथा दक्षिण की राजनीतिक सूझ के चलते पृथक **'मराठा राज्य'** की स्थापना की।
- शिवाजी ने अपने राज्य की व्यवस्था के लिए आठ मंत्री नियुक्त किये। इन्हें **अष्ट प्रधान** कहा जाता था। प्रत्येक मंत्री सीधे राजा के प्रति उत्तरदायी था। पेशवा का पद सबसे महत्वपूर्ण होता था। वित्त व्यवस्था व सामान्य प्रशासन पेशवा ही देखता था।
- स्वराज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिए शिवाजी ने एक नियमित और स्थायी अनुशासित सेना की व्यवस्था की। उन्हें नगद वेतन दिया जाता था। उन्होंने एक बड़ा जहाजी बेड़ा भी बनाया।
- मराठा राज्य की आय का प्रमुख स्रोत भूमि पर लगने वाला कर था। इसके अतिरिक्त शिवाजी ने अपने राज्य के पड़ोस के मुगल क्षेत्रों से **'चौथ'** (लगान का चौथा हिस्सा) और **'सरदेशमुखी'** नामक कर वसूल करना ...

अष्ट प्रधान

१. पेशवा (प्रधानमंत्री)
२. अमात्य (मजुमदार)
३. मन्त्री
४. सचिव
५. सुमन्त (दबीर)
६. सेनापति
७. पण्डित राव
८. न्यायाधीश

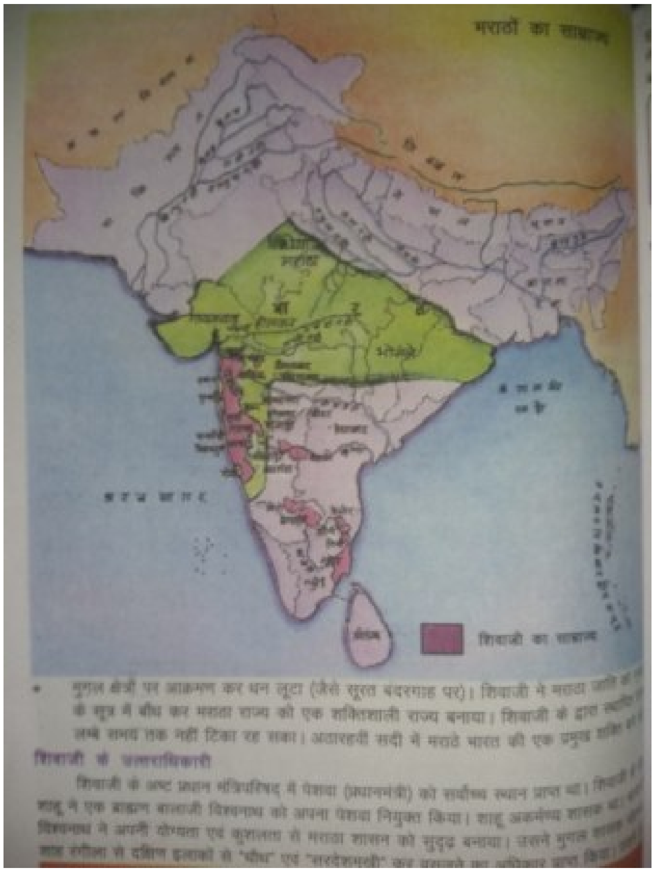

इलाकों पर पुनः अधिकार किया जिन पर मुग़लों का अधिकार हो गया था। सैनिक और आर्थिक दृष्टि से मराठों ने अपनी शक्ति को बहुत बढ़ा लिया और अब वे मुगल सेना का सामना भली भाँति कर सकते थे। मुगल बादशाह औरंगज़ेब को मराठों ने लगातार गोरिल्ला या छापामार युद्धों में व्यस्त रखा।

छापामार युद्ध प्रणाली-सेना की छोटी टुकड़ी जिसमें सैनिकों की संख्या कम होती थी। ये शत्रु से आमने सामने युद्ध न करके पहाड़ियों व जंगलों में छिपकर उन पर पीछे से हमला करके भाग जाते। इस प्रणाली को छापामार युद्ध प्रणाली कहते थे। शिवाजी ने मुगलों से लड़ने के लिए छापामार युद्ध प्रणाली का प्रयोग किया था। इसे गोरिल्ला युद्ध प्रणाली भी कहते थे।

मराठा संगठन

बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना। इस प्रकार पेशवा पद के वंशानुगत होने की परम्परा प्रारम्भ हुई। बाजीराव प्रथम एक कुशल सेनापति,

महत्वाकांक्षी तथा उच्चकोटि का कूटनीतिज्ञ था। उसने मालवा एवं गुजरात पर आधिपत्य स्थापित करके मराठा साम्राज्य का विस्तार किया।बाजीराव प्रथम की सबसे बड़ी उपलब्धि मराठा संगठन का निर्माण था। उन्होंने मुग़ल विजित प्रदेशों को मराठा सरदारों में बाँट दिया। ये प्रमुख मराठा सरदार थे नागपुर के राघोजी भोंसले, बड़ौदा के पिल्ली जी गायकवाड़, इंदौर के मल्हर राव होल्कर और ग्वालियर के रामजी सिन्धिया।बाजीराव प्रथम ने इनको अपने-अपने क्षेत्रों में सम्पूर्ण स्वतंत्रता दी। वे अपने-अपने क्षेत्रों में अपने अनुसार कर लगाने के लिए स्वतंत्र थे लेकिन उन्हें एक निश्चित रकम पेशवा को भेंट करनी पड़ती थी। इन मराठा सरदारों को पेशवा के अधीन रहकर कार्य करना होता था और समय पड़ने पर पेशवा के नेतृत्व में सैनिक अभियान में जाना पड़ता था। इस प्रकार मराठा सरदारों का यह समूह मराठा संगठन कहलाया जिसका मुखिया पेशवा था।बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बालाजी बाजीराव द्वितीय पेशवा बना। उसने मालवा, गुजरात, बुंदेलखण्ड, बंगाल, उड़ीसा, बीजापुर तथा औरंगाबाद के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार दक्षिण में मराठों का दबदबा बढ़ गया। राजपूत, जाट, रुहेले अफगान भी मराठों की शक्ति से आतंकित हो गये थे।

नीचे दी गई तालिका को पूरा कीजिए: -

यूद्ध	वर्ष	किन-किन के बीच	परिणाम
पानीपत का प्रथम युद्ध			
पानीपत का द्वितीय युद्ध			

पानीपत का तीसरा युद्ध

मराठों ने पंजाब पर भी आक्रमण कर उसे जीत लिया। जिस पर अफगानिस्तान के शासक अहमदशाह अब्दाली का अधिकार था। अब्दाली ने रुहेले अफगानों की सहायता से पंजाब पर पुनः अधिकार करके दिल्ली की ओर प्रस्थान किया जहाँ सन् 1761 में पानीपत के मैदान में मराठों और अब्दाली की सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। मराठों को जाट, राजपूत एवं सिख सरदारों का सहयोग नहीं मिला और अहमदशाह अब्दाली विजयी रहा। अहमदशाह

अब्दाली की जीत का एक कारण ऊँटों पर रखी घूमने वाली तोपें भी थीं जिन्होंने मराठों को काफी नुकसान पहुँचाया।

पानीपत का युद्ध मराठों के लिए घातक सिद्ध हुआ क्योंकि पंजाब के आक्रमण से अहमदशाह अब्दाली का भारत आगमन हुआ। इस युद्ध में पहली बार मराठों ने छापामार युद्ध पद्धति के स्थान पर खुले रूप से मैदान में युद्ध के तरीकों को अपनाया, जिसके वे अभ्यस्त नहीं थे। अतः युद्ध में उच्च कोटि के मराठे सैनिकों एवं पेशवाओं को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। मराठों के पतन से अंग्रेजों को भी साम्राज्य विस्तार का सुअवसर प्राप्त हो गया।

अठारहवीं शताब्दी में भारत की स्थिति

अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में भारत के विभिन्न भागों में देशी और विदेशी शक्तियों के अनेक छोटे-बड़े राज्य स्थापित होने लगे थे। बंगाल, अवध और दक्षिण आदि प्रदेशों ने अपनी स्वतंत्रता स्थापित कर ली। भारत के उत्तर-पश्चिम की ओर से विदेशी आक्रमण होने लगे। सन् 1739 में नादिरशाह के आक्रमण ने कमजोर मुगल साम्राज्य की जड़े हिला दीं थी और सन् 1761 में अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण ने मराठों के अस्तित्व को लगभग समाप्त ही कर दिया। इस समय कोई एक ऐसी शक्ति नहीं थी जो विशाल भारत को एकजुट रख सकती। मुगलों के पतन, मराठों की हार तथा छोटे-छोटे राज्यों के आपस की लड़ाई ने यूरोपीय कम्पनियों को शीघ्र ही सर्वश्रेष्ठ बना दिया। विदेशी व्यापारी कम्पनियों ने भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया था।

किस मुगल शासक ने विदेशी कम्पनियों को भारत में व्यापार करने की इजाजत दी थी। लिखिए

....।

इस समय तक कौन-कौन सी विदेशी कम्पनियाँ भारत में आ चुकी थीं। उनके नाम लिखिए ....।

जिस समय यूरोप में पुनर्जागरण आन्दोलन जोर पकड़ रहा था, भारतीय समाज लोकवाद और भक्तिवाद के गहरे सागर में डूबा हुआ था। वह दूसरे देशों में हो रहे विकासों को नजरअन्दाज कर रहा था। मुगल सम्राट एवं उच्च वर्ग करोड़ों रुपये ऐश्वर्य सामग्री बनाने व जुटाने में खर्च कर देते थे। उन्होंने घरेलू औद्योगिक व्यापार को सुदृढ़ बनाने की बजाय विदेशों से भोग-विलास की वस्तुएँ मँगवाना उचित समझा।

जहाँ यूरोप में किताबें मुद्रणालय में छपती थीं, भारत में किताबें अभी तक हाथों से लिखी जाती थीं जिसका उदाहरण हमें बाबरनामा एवं अकबरनामा जैसी हस्तलिखित पुस्तकों से मिलता है।

उधर यूरोप में जहाँ प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा था तथा लड़ाई के लिए नये-नये हथियार, बन्दूक, हल्की तोपें आदि का निर्माण हो रहा था, भारतीय अभी भी पैदल सेना, हाथी, तलवार, भालों तथा भारी-भरकम तोपों का इस्तेमाल कर रहे थे।

यद्यपि अठारहवीं सदी में भारत में व्यापार और वस्तु निर्माण का विस्तार होता रहा परन्तु यूरोप की तुलना में भारत न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बल्कि अन्य मामलों में भी पिछड़ा ही रहा। उदाहरण के लिए - माल का ज्यादातर निर्माण छोटे पैमाने पर ही किया जाता रहा। मशीनों का कोई इस्तेमाल नहीं किया गया और कारीगर सरल से सरल औजारों से ही कार्य करते रहे। नतीजा यह हुआ कि कोई भी कारीगर चाहे जितना ही कुशल क्यों न रहा हो उसकी उत्पादक क्षमता निम्न कोटि की ही रही। पश्चिम की तरह यहाँ के कारीगर तरक्की करके व्यापारी और उद्यमी नहीं बन सके।

सोलहवीं शताब्दी तक इस तरह के यंत्र यूरोप में बन चुके थे जिसके आधार पर यूरोपीय नाविक देश-विदेश की यात्रा करने में सफल रहे।

इसके अलावा दुनिया में यूरोपीय नाविक नये-नये देशों की खोज कर रहे थे तथा भारत में विदेशी यात्री व विदेशी व्यापारी आ रहे थे। शक्तिशाली मुगल भारतीय नौसेना को सुदृढ़ बनाने के बजाय यूरोपीय जहाजों पर निर्भर रहे। उधर यूरोपीय देशों ने शक्तिशाली नौसेना तथा सुसंगठित व्यापारी बेड़े के कारण भारत के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बनाये तथा इसका उन्होंने भरपूर लाभ उठाया।

मुगलों ने विदेशी व्यापार के महत्व को समझ लिया था। इस कारण उन्होंने यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों को संरक्षण एवं प्रोत्साहन प्रदान किया। राष्ट्र के आर्थिक विकास में वे नौसेना के महत्व को नहीं समझ सके। इस कारण भारतीय व्यापारी एवं निर्माता शक्तिशाली नौसेना तथा सुसंगठित व्यापारी बेड़े के अभाव में विदेशों से होने वाले व्यापार के मुनाफे का अधिक लाभ नहीं उठा सके।

इस प्रकार विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्रों में भारत अन्य देशों से पिछड़ता गया। मुगल शासक वर्ग ने उन्हीं बातों में दिलचस्पी रखी जो उनके तात्कालिक महत्व तथा विलास की थी। भविष्य को निर्धारित करने वाली बातों के प्रति उनकी कोई रुचि नहीं थी। इसके दूरगामी परिणाम हुए और भारत आने वाले 200 वर्षों तक विदेशी ताकतों की जंजीरों में जकड़ा रहा।

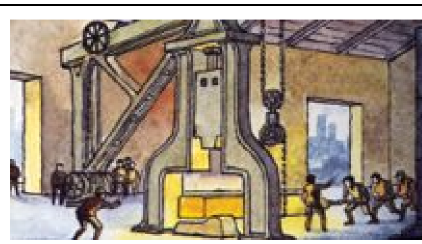

कारखाने में काम करते हुए लोग

कारखाने में तोप का निर्माण	
विदेशी सुसंगठित व्यापारी बेड़े	यूरोपीय सैनिकों द्वारा बन्दूक का इस्तेमाल

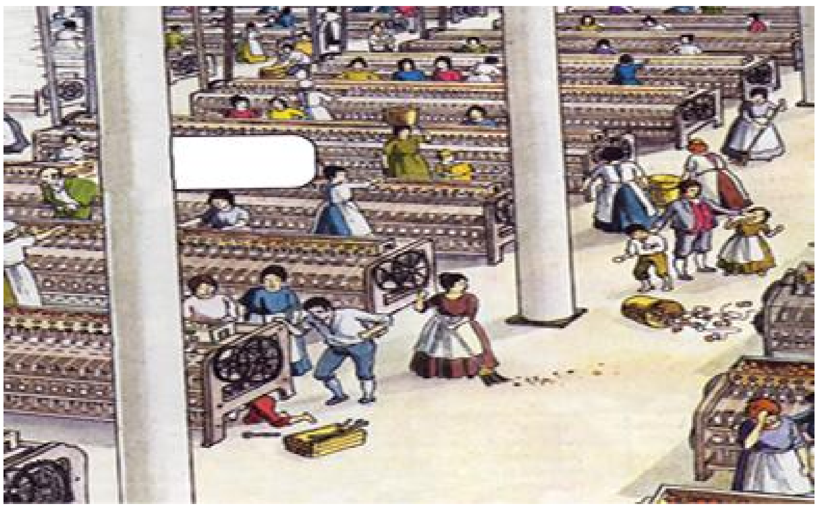

सूत कातने का कारखाना

शब्दावली

चैथ - मुगल राज्य को दिए जाने वाले कुल लगान का एक चैथाई भाग जिसको मराठे अतिरिक्त कर के रूप में मराठा राज्य के बाहर के क्षेत्रों से वसूलते थे।

सरदेशमुखी - सम्पूर्ण आय का दसवाँ भाग जिसको मराठे सारे क्षेत्र से वसूल करते थे।

अष्टप्रधान - आठ मंत्रियों की एक समिति जो शासन कार्यों में मराठा शासक को सलाह देने का कार्य करती थी।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

(क) शिवाजी का जन्म कब और कहाँ हुआ था।

(ख) शिवाजी के माता-पिता का नाम बताइए।

(ग) शिवाजी का राज्याभिषेक कहाँ हुआ था।

(घ) दक्षिण में मराठा शक्ति के उदय का वर्णन कीजिए।

(ङ) शिवाजी के शासन प्रबन्ध के विषय में लिखिए।

(च) पानीपत की तीसरी लड़ाई क्यों हुई ? इसके क्या परिणाम हुए ?

2. निम्नलिखित कथनों में सही कथन के सामने सही का तथा गलत कथन के सामने गलत (×) का निशान लगाइए-

क. मराठों ने छापामार युद्ध प्रणाली अपनायी ।

ख. अफजल खाँ मुगलों का एक प्रमुख सरदार था।

ग. शिवाजी का रामनगर में राज्याभिषेक हुआ।

घ. शिवाजी ने शाइस्ता खाँ को बघनख से मारा।

3. सही जोड़े बनाइए-

नादिरशाह का आक्रमण	1680 ई0
अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण	1739 ई0
शिवाजी की मृत्यु	1670 ई0
सूरत पर आक्रमण	1761 ई0

प्रोजेक्ट वर्क

पाठ के आधार पर छत्रपति शिवाजी के जीवन चरित्र व उपलब्धियों पर आधारित एक चार्ट बनाइए।

DZSDJV

पाठ 14

मुगलकालीन समाज एवं संस्कृति

मुगलों के शासनकाल में देश में सामाजिकए राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। भारत के विभिन्न भागों तथा अलग.अलग धर्मों और नस्लों के लोगों ने अनेक प्रकार से सांस्कृतिक विकास में योगदान दिया जिससे एक नई राष्ट्रीय संस्कृति का विकास हुआ।

सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति

भारत में मुगलों के आगमन से सामाजिक जीवन पद्धतियों में बदलाव आया। जातीय व्यवस्था के अन्दर ही नयी जातियों और उपजातियों का उदय हुआ। मुगल काल में सम्राट और उसका परिवार सर्वोपरि था। उसके उपरान्त दूसरे वर्ग में उलेमाए ;पवित्रए धार्मिक व्यक्तिद्ध सैय्यदए शेख आदि थे। द्वितीय वर्ग में ही मुस्लिम अमीरए अधीनस्थ राज्यों के शासकए जमींदारए जागीरदार आदि थे। मध्यम वर्ग में अध्यापकए हकीमए ज्योतिषीए कविए व्यवसायीए कोतवालए चौकीदारए काजीए चौधरी आदि थे। तत्पश्चात भूमिहीन कृषकए श्रमिकए दरिद्रए निःसहाय दास आदि की श्रेणी थी।

हिन्दू समाज जातियों और उपजातियों में विभाजित था। समाज में ब्राह्मणों का स्थान प्रमुख था। मुगल शासन में इस वर्ग के लोगों को अनुदान, उपहार और राजाश्रय प्राप्त था। तत्पश्चात क्षत्रियों का वर्ग था। उनको प्रशासन और सेना में महत्वपूर्ण पदों पर योग्यता के अनुसार स्थान मिला। तृतीय वर्ग में वैश्य थे। व्यापारिक समुदाय में उनकी महत्वपूर्ण स्थिति थी। समाज के निम्न स्तर के लोग चौथे वर्ग में थे। इसमें पेशेवर समूह भी सम्मिलित थे।

मुगलों के आगमन से पर्दा-प्रथा अधिक व्यापक हुई। स्त्रियाँ पुनर्विवाह या पिता की सम्पत्ति में हिस्से का दावा नहीं कर सकती थीं।

इस काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता शासक वर्ग के शानो-शौकत के जीवन तथा दूसरी ओर किसानों, दस्तकारों तथा श्रमिकों के गरीबी भरे जीवन के बीच का अन्तर था। मुगल काल की सम्पन्नता का आधार किसानों एवं श्रमिकों की मेहनत थी और उन्हीं के घर दरिद्रता बसती थी।

सांस्कृतिक समन्वय

मुगल शासन के अधीन भारत में स्थापत्य, चित्रकारी, साहित्य एवं संगीत का विकास हुआ। इस दृष्टि से मुगल काल को गुप्त काल के बाद उत्तर भारत का दूसरा स्वर्ण काल कहा जा सकता है। मुगल अपने साथ तुर्क-ईरानी संस्कृति लाये थे जिनका भारतीय परम्पराओं के साथ मिश्रण हुआ।

स्थापत्य

मुगलों ने भव्य किलों, आकर्षक राजमहलों, दरवाजों, इमारतों, मस्जिदों, बावलियों आदि का निर्माण करवाया।

 मुगल शहंशाहों ने कई किले बनवाये जिसमें मुगल तथा भारतीय शैलियों का मिश्रण दिखाई देता है। इन किलों में अधिकतर लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है।

महलों में स्थानीय, गुजराती, बंगाली तथा फारसी शिल्पकला का मिश्रण देखने को मिलता है।

शाहजहाँ द्वारा बंगला शैली में निर्मित आगरा किले का एक छज्जा

जोधाबाई महल का छज्जा, गुजरात शैली

इनमें छज्जों और सुन्दर छतरियों का इस्तेमाल किया गया है। इनकी दीवारों और छतों की सजावट में फारसी या मध्य एशियाई प्रभाव देखा जा सकता है।

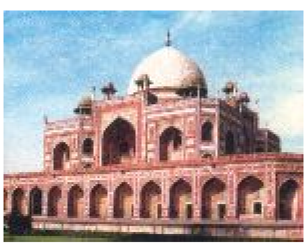

हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली

- कई इमारतों में सफेद तथा लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग किया गया है।

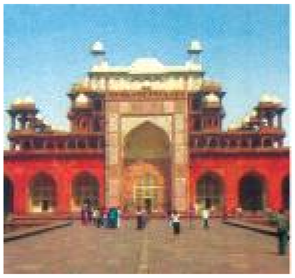

अकबर का मकबरा, सिकन्दरा

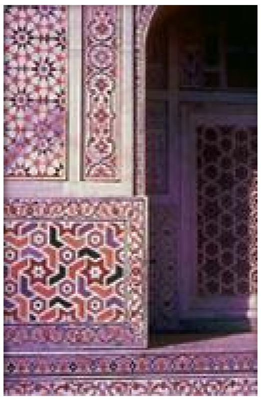

 मुगल शहंशाहों ने इमारतों को सजाने के लिए अर्द्धबहुमूल्य पत्थर जैसे नीलमणि, फिरोजा आदि का प्रयोग फूल-पत्तियों की आकृतियों तथा ज्यामितीय आकारों को बनाने के लिए किया। सजावट की इस पद्धति को "पिएत्रा ड्यूरा" (एक प्रकार की नक्काशी) कहते हैं।

पिएत्रा ड्यूरा, ताजमहल

कुछ इमारतों में अरबी भाषा में कुरान की आयतें देखने को भी मिलती हैं।

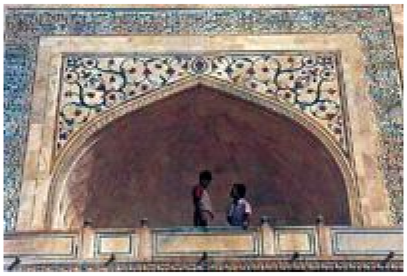

कुरान की लिखी आयतें, ताजमहल

पिएत्रा ड्यूरा, एतमादुद्दौला का मकबरा

इनकी इमारतों की विशेषता इनके विशाल गुम्बद, मेहराब, दरवाजे तथा ऊँचे चबूतरे हैं। मुग़लों के गुम्बदों की विशेषता है दो गुम्बदों का प्रयोग। एक बड़े गुम्बद के अन्दर एक छोटा गुम्बद जैसा कि ताजमहल का गुम्बद।

हवा के लिए बनाए गए पंचमहल की सपाट छत को सहारा देने के लिए विभिन्न स्तम्भों का, जो विभिन्न प्रकार के मन्दिरों के निर्माण में प्रयोग किये जाते थे, इस्तेमाल किया गया है।

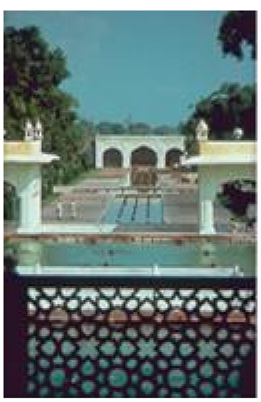

शालीमार बगीचा, लाहौर

मुगलों ने जलस्रोतों से युक्त कई सुनियोजित बगीचे भी लगवाए। जगह-जगह सुन्दर फव्वारे भी थे। कुछ मुगल बगीचे जैसे- कश्मीर में निशातबाग, पंजाब का पिंजौर बाग

और लाहौर का शालीमार बाग प्रसिद्ध हैं। बहते पानी का उपयोग करना मुगलकाल की विशेषता थी।

चित्रकारी

चित्रकारी के क्षेत्र में मुगलों ने विशिष्ट योगदान दिया। उन्होंने भारतीय जीवन से जुड़े प्रसंग तथा प्राकृतिक दृश्यों का चित्रकारी में समावेश किया जैसे दरबार, शिकार तथा युद्ध के दृश्यों का। उन्होंने फारसी कथाओं को चित्रित करने के अलावा महाभारत के फारसी अनुवाद, ऐतिहासिक रचना अकबरनामा तथा दूसरी पुस्तकों को चित्रों से सजाया। उन्होंने भारतीय रंगों जैसे मयूरी नीले रंग तथा लाल रंग का अधिक प्रयोग किया। मुगलों ने अपनी चित्रकारी में ईरानी शैली के सपाटपन के स्थान पर भारतीय कूँची की गोलाई का प्रयोग किया जिससे त्रि-आयामी चित्र बनने लगे। □

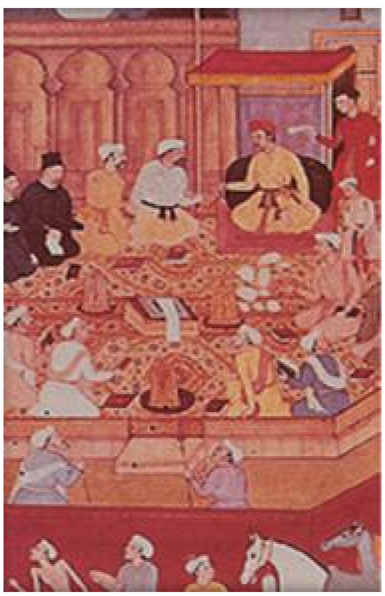

दरबार दृश्य, अकबरनामा

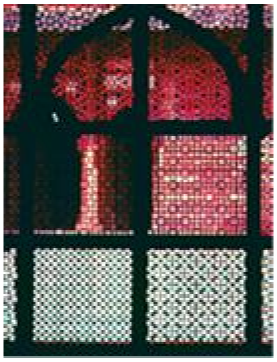

संगमरमर की जाली का प्रयोग मुगल काल की देन है।

‘तैमूर घराने के राजकुमार’ शीर्षक से बनाया गया चित्र हुमायूँ के काल की अनुपम देन है। यह चित्र 1.15 वर्ग मीटर कपड़े पर बनाया गया है। ऐसा माना जाता है कि यह मंगोल परम्परा की देन है, जिसमें तम्बुओं पर वे चित्र बनाया करते थे।

 अकबर के अधीन पुर्तगाली पादरियों ने दरबार में यूरोपीय चित्रकारी का समावेश किया। उनके चित्रों में दूर दिखने वाली आकृतियों को छोटा दर्शाने के सिद्धांत को अपनाया गया। इससे आकृतियाँ अपने सही परिप्रेक्ष्य में सामने आती थीं।

जहाँगीर के काल में चित्रकारी विकास की बुलन्दियों तक पहुँची। जहाँगीर के शासनकाल में मनुष्य की एकल आकृतियों और पशुओं की आकृतियों के चित्रण में विशेष प्रगति हुई।

राजस्थानी शैली की चित्रकारी में पश्चिम भारतीय या जैन शैली की पूर्ववर्ती परम्पराओं का मिश्रण, चित्रकारी की मुगल शैलियों के साथ किया गया। इसमें पुराने विषयों का भी समावेश किया गया है। इस प्रकार इस शैली की चित्रकारी में शिकार के दृश्यों के अलावा, राधा-कृष्ण की प्रेमलीला, बारहमासा अर्थात् वर्ष के विभिन्न मौसम और रागों के चित्रण को भी स्थान दिया गया। पहाड़ी शैली में भी इन परम्पराओं को जारी रखा।

मंसूर द्वारा बनाया गया जेब्रा का चित्र

संगीत

संगीत सांस्कृतिक जीवन का एक और क्षेत्र था जिसमें हिन्दुओं और मुसलमानों ने एक-दूसरे से सहयोग किया। अकबर ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक तानसेन का संरक्षक था। तानसेन को कई नए रागों की रचना का श्रेय दिया जाता है।

आइने-ए-अकबरी में 36 संगीतकारों के नाम हैं। औरंगज़ेब दरबार द्वारा आयोजित संगीत को पसन्द नहीं करता था परन्तु वह कुशल वीणा वादक था। भारतीय शास्त्रीय

संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकों की रचना औरंगज़ेब के शासन काल में हुई।

साहित्य का विकास

मुगल शासक साहित्य प्रेमी थे। उन्होंने विद्वानों और साहित्यकारों को राजकीय संरक्षण दिया। इस काल में भी फारसी ही राजभाषा थी। बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी तुर्की में लिखी। इस काल में गुलबदन बेगम, अबुलफजल, बदायूँनी, मुहम्मद कामगार, अब्दुल हमीद लाहौरी आदि ने फारसी में रचनाएँ लिखीं। अकबर ने अथर्ववेद, महाभारत, हरिवंश पुराण तथा रामायण का फारसी में अनुवाद कराया। शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह फारसी और संस्कृत का विद्वान था। उसके सहयोग से उपनिषद और भगवद्गीता का फारसी में अनुवाद किया गया।

अकबर के समय में हिन्दी कविता का सर्वाधिक विकास हुआ। मलिक मुहम्मद जायसी, अब्दुर्रहीम खानखाना, नन्ददास उसके काल के प्रमुख कवि थे। महाभारत का अनुवाद बदायूँनी द्वारा ‘रज्मनामा’ नाम से किया गया। इसी काल में स्थानीय कवि भी उभरे जैसे तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई।

यातायात

मध्यकाल में यातायात के लिए दो साधन प्रयुक्त होते थे। माल व सामान सड़क मार्ग से आता-जाता था। इन मार्गों पर दोनों तरफ छायादार वृक्षों की कतार होती थी। यात्रियों की सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर सराय या विश्राम गृह होते थे। व्यापार हेतु जल मार्ग का भी प्रयोग किया जाता था। कश्मीर, बंगाल, ंिसंध, वर्तमान उत्तर प्रदेश तथा पंजाब में नदी या जल मार्ग अधिक प्रयुक्त होता था।

व्यापार

सत्रहवीं शताब्दी के बाद में भारत में व्यापार प्रसार के कई कारण थे। इनमें सबसे महत्वपूर्ण शासन के अन्तर्गत देश की राजनीतिक एकता तथा बड़े क्षेत्र में शांति और व्यवस्था की स्थापना थी। मुगलों ने सड़क और सरायों के निर्माण की ओर भी ध्यान दिया जिससे यातायात में बहुत सुविधा हो गई। साम्राज्य में किसी भी वस्तु के आयात के लिए समान कर निर्धारित किए गए। मुगलों ने शुद्ध चाँदी के रुपयों का प्रचलन आरम्भ किया जिसकी सारे भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी मान्यता थी। इससे भारत के व्यापार को और भी बढ़ावा मिला।

इस काल में भारत में महत्वपूर्ण व्यवसाय था कपड़े बनाना। सूती कपड़े तैयार करने के केन्द्र देश भर में थे। इनमें प्रमुख थे- गुजरात में पाटन, उत्तर प्रदेश में बनारस और जौनपुर, बिहार में पटना और उड़ीसा एवं बंगाल के बहुत से गाँव। ढाका जिला विशेष रूप से अपने मलमल के महीन कपड़े के लिए प्रसिद्ध था। कपड़ों के रंगने का व्यवसाय भी उन्नत था। शॉल तथा गलीचा बुनने के व्यवसायों ने अकबर के संरक्षण में उन्नति की।

एक और कारण जिससे भारत का व्यापार बढ़ा, वह था सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में अंग्रेज तथा डच व्यापारियों का भारत आना। भारत के व्यापारियों ने इनका स्वागत किया क्योंकि इनसे समुद्र व्यापार पर पुर्तगालियों के एकाधिकार को समाप्त करने में सहायता मिली और भारत का यूरोपीय बाजारों के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित हो गया।

कालीकट, मछलीपट्टम, हुगली, श्रीपुरा, चटगाँव इस समय के समृद्ध बंदरगाह थे। यहाँ से भारतीय माल अफ्रीका के समुद्र तट, दमिश्क और सिकंदरिया तथा यूरोप के विभिन्न देशों को ले जाया जाता था। साथ ही यह माल चीन, लंका, इण्डोनेशिया एवं भारतीय टापुओं को जाता था। इन वस्तुओं में गुड़, चीनी, मक्खन, रुई, रुई से निर्मित वस्तुएँ, अनाज, तेल, बाजरा, ज्वार, चावल, नील, सुगंधित पदार्थ, कपूर, लौंग, नारियल, चंदन की लकड़ी, अफीम, कालीमिर्च, लहसुन प्रमुख थीं।

इसी प्रकार सोना मुख्यतः द्वीपसमूहों- चीन, जापान, मोरक्को आदि से तथा मूँगा व अन्य रत्न फारस व अरब के राज्यों से आते थे। पारा लिस्बन से, सीसा, ऊनी वस्त्र,

सिल्क, साटन के कपड़े यूरोप से आते थे।

जहाँ तक थल मार्ग के व्यापार की बात है, मध्य-एशिया, तिब्बत एवं अफगानिस्तान से मेवे तथा फल, हींग, कस्तूरी, सोना, ताँबा, सीसा, शहद, सोहागा, मोम, पक्षी एवं घोड़े आयात किए जाते थे।

इसी तरह देश के भीतर आन्तरिक व्यापार भी उन्नत था। प्रत्येक गाँव में एक छोटा बाजार होता था। कस्बे के बड़े बाजार समय-समय पर लगते थे। फेरी लगाने वाले भी अच्छा व्यापार करते थे। बंजारे दूरस्थ प्रदेशों तथा सेनाओं की आपूर्ति का काम करते थे। कई बार हमें बड़े काफिलों का उल्लेख मिलता है, जिसमें माल 40,000 बैलों के ऊपर लदा रहता था।

सेना, राजस्व, व्यापार तथा कृषि कार्य में सल्तनत काल एवं मुगल काल में क्या अन्तर दिखाई देता है ? चर्चा कीजिए।

मुगलकाल-मूल्यांकन

संस्कृति

मुगल शासकों ने भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक समन्वय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस दिशा में भक्ति और सूफी सन्तों के उपदेशों का भी जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सूफी सन्तों ने मानव को शान्ति व भाईचारे का सन्देश दिया। इससे हिन्दू-मुस्लिम एक दूसरे के निकट आये। सूफी संतों में शेख सलीम चिश्ती, मखदूम शेख, अब्दुलकादिर, शाह हुसैन, शेख अब्दुलहक, शेख मुहम्मद गौरी, शेख अहमदसर और शाहवली उल्लाह मुख्य हैं।

इस काल के भक्ति सन्तों में सर्वप्रथम गुरु नानक देव हैं। उन्होंने महान सूफी सन्त शेख फरीद के साथ सत्संग किया। नानक ने जातीय भेद-भाव तथा बाह्य आडम्बर समाप्त

करने का प्रयास किया। इसी काल में तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, मलूकदास, दादू दयाल, रज्जबदार तथा चैतन्य महाप्रभु आदि भक्ति सन्त हुए। इसी काल में चैतन्य, कबीर जैसे सन्तों ने देश के विभिन्न भागों में इस्लाम और हिन्दू धर्म के बीच अनिवार्य एकता पर बल दिया और धार्मिक पुस्तकों के शाब्दिक अर्थों के बजाय प्रेम तथा भक्ति पर आधारित धर्म पर बल दिया।

मुगल बादशाह सभी धर्मावलम्बियों को एक समान देखते थे। हुमायँू सूफी सन्तों से धार्मिक विचार-विमर्श करते थे। अकबर ने प्रशासन में योग्यतानुसार सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व दिया। अकबर ने अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की। अधिकांश मुगल बादशाहों ने हिन्दू मन्दिरों और मठों को अनुदान दिया।

मुगल शासकों ने संस्कृत साहित्य का फारसी में अनुवाद कराके, स्थानीय भाषाओं के साहित्य को संरक्षण देकर, धार्मिक सहिष्णुता की अधिक उदार नीति अपनाकर और दरबार तथा सेना में हिन्दुओं को महत्वपूर्ण पद देकर हिन्दुओं और मुसलमानों में पारस्परिक समझ पैदा करने की कोशिश की।

सूफी सन्तों के आगमन ने धीरे-धीरे हिन्दू धर्म तथा इस्लाम के मूलभूत सिद्धान्तों की बेहतर समझ पैदा की और यह बताया कि दोनों में काफी कुछ समानता है। इससे पारस्परिक सद्भावना और सहिष्णुता की भावना का विकास हुआ। उन्होंने क्षेत्रीय भाषा और साहित्य के विकास में भी योगदान दिया।

प्राचीन भारत में विदेशी धर्म प्रचारक भारत में धर्म प्रचार के लिए आए तथा भारतीय धर्म-प्रचारक भी विदेशों में भेजे गये थे। मुगल काल में भी बाहर से विदेशी धर्म प्रचारक भारत में आए।

तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी

मध्यकालीन भारत में वार्षिक कैलेण्डर के निर्धारण, प्रमुख पर्वों, त्योहारों, ग्रहणों एवं ज्योतिष, ग्रहों व नक्षत्रों के निर्धारण में खगोल की उपयोगिता थी। शेर-ए-मंडल की तीसरी मंजिल पर हुमायूँ की विकसित वेधशाला एवं पुस्तकालय थे। ग्रहों एवं ज्योतिष में उसका व्यक्तिगत ज्ञान अत्यधिक था। अकबर के काल में बनारस की वेधशाला का निर्माण उसके निर्देशानुसार हुआ था। अकबर ने एक नवीन कैलेण्डर का निर्माण किया, जिसे इलाही नाम दिया गया। इसकी शुरुआत उसके शासन-काल के प्रथम दिन से मानी गयी।

इतिहासकारों के अनुसार तुर्क और मुगल शासकों का समुद्र से कोई सम्बन्ध नहीं था। मुगलों ने विदेश व्यापार को महत्व दिया। इसलिए यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों को संरक्षण और समर्थन भी दिया, परंतु वह राष्ट्र के विकास में नौसैनिक शक्ति की महत्ता को नहीं समझ सके। भारतीय शिल्पी जहाज़ निर्माण जैसे क्षेत्रों में यूरोपीय शिल्पियों की नकल करते थे। यद्यपि भारतीय कारीगर काफी कुशल थे तथापि उनकी यांत्रिक क्षेत्र में सोच विकसित नहीं हुई थी।

भारत का नौसैनिक क्षेत्र में पिछड़ा होना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसके पिछड़ेपन का सूचक था। तोपखाने के क्षेत्र में यूरोपीय भारतीयों से श्रेष्ठ थे। मुगल सेना के पास भारी तोपें होती थी जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना कठिन होता था तथा उनके पास कुछ हल्की तोपें भी हुआ करती थीं। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर ने मुगल तोपखाने के लिए कहा है कि हल्की तोपें रकाब-तोपों की तरह थीं और बहुत अच्छी थीं।

यूरोप में सत्रहवीं शताब्दी में बंदूक का इस्तेमाल होने लगा था जबकि भारत में अठारहवीं शताब्दी में बंदूक का प्रयोग आरम्भ हुआ।

मुगल सेना द्वारा प्रयोग किया गया सिर का लौह टोप

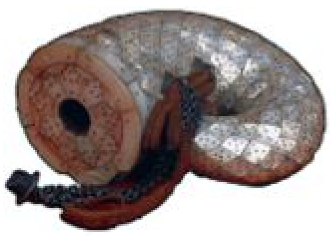

बारुद रखने का मुगलकालीन बर्तन

आर्थिक स्थिति

मुगल काल में आर्थिक विकास में और अधिक प्रगति हुई। व्यापार और वस्तु निर्माण का विस्तार हुआ। खेती-बाड़ी में भी सुधार हुए परन्तु यूरोप की तुलना में भारत न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बल्कि अन्य मामलों में भी पिछड़ा ही रहा। माल का ज्यादातर निर्माण छोटे पैमाने पर ही किया जाता था। मशीनों का कोई इस्तेमाल नहीं किया गया और कारीगर सरल से सरल औजारों से ही काम करते रहे। नतीजा यह हुआ

कि कोई कारीगर चाहे जितना भी कुशल रहा हो उसकी उत्पादक क्षमता निम्न कोटि की ही रही।

सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में 'ददनी' प्रथा का चलन हुआ, जिसके अनुसार देशी-विदेशी दोनों व्यापारी कारीगरों को काम करने के लिए थोड़ी-बहुत पूँजी दे दिया करते थे और जब वे माल तैयार कर लेते थे तो उनसे ले लेते थे। इससे कारीगर इन लोगों के और भी मोहताज़ हो गए।

इन्हीं परिस्थितियों में अंग्रेजों ने भारत को जीतने और उसे एक उपनिवेश बना देने में कामयाबी हासिल की, और अब भारत पूरब का कारखाना होने की बजाय पश्चिम के लिए कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बन गया।

और भी जानिए

- उस समय भारत में छापेखाने का आविष्कार नहीं हुआ था किन्तु मुगलकालीन लेखनकला उच्चकोटि की थी। इस समय आठ प्रकार की सुलेखन शैली का प्रचलन था।
- मुगलकालीन शासकों ने मदरसों एवं मकतबों के माध्यम से शिक्षा पर भी जोर दिया।
- अकबर ने गणित, खगोलविद्या, आयुर्विज्ञान, दर्शन और तर्कशास्त्र जैसे विषयों के अध्ययन के प्रसार के लिए उल्लेखनीय योगदान दिया।
- मुगल काल तक भारत में आलू, कद्दू, टमाटर, मटर, हरी मिर्च, अमरूद, सीताफल उगते ही नहीं थे। ये सब दक्षिण अमेरिका की सब्जियाँ व फल हैं जो मुगल काल के अन्त में यूरोप के व्यापारी भारत लाए लेकिन सेम, पालक, शकरकन्द, तोरई, करेला, लौकी, भिण्डी तथा बैंगन जैसी स़ब्जियाँ और केला, आम, तरबूज, बेर, अंगूर, अनार जैसे फल खूब होते थे।

शब्दावली

छापाखाना-प्रेस

ज्योतिष-ग्रहों एवं नक्षत्रों के आधार पर की जाने वाली भविष्यवाणी।

स्थापत्यकला-इमारतों आदि के निर्माण की कला।

दरगाह-सूफी सन्तों की कब्र पर बना स्मारक।

□ अभ्यास

1.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क)मुगल काल को 'स्वर्णयुग' क्यों कहा जाता है ?

(ख)मुगलों के समय फारसी और हिन्दी साहित्य में क्या विकास हुआ ?

(ग)मुगलकालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डालिए।

(घ)मुगलकाल में सामाजिक सांस्कृतिक समन्वय के विषय पर संक्षेप में लिखिए।

(ङ)शाहजहाँ कालीन प्रमुख इमारतों का वर्णन कीजिए।

(च)दारा शिकोह द्वारा फारसी में अनूदित पुस्तकों का नाम बताइए।

2.सही जोड़े मिलाइए-

(क)बुलन्द दरवाजाआगरा

(ख)ताजमहलफतेहपुर सीकरी

(ग)तुज़ुके जहाँगीरीअबुल फजल

(घ)अकबरनामामहाभारत

(ङ)रज्मनामाजहाँगीर

3.नीचे दी गयी तालिका में उन मुगल शासकों के नाम लिखिए जिनके सिक्के गोल, चौकौर अथवा दोनों तरह के थे।

गोलसिक्के

चौकोर सिक्के

गोल एवं चौकोर सिक्के

प्रोजेक्ट कार्य

पता लगाइए कि इस समय भारत के प्रमुख बन्दरगाह कौन-कौन से हैं और यह किन प्रदेशों में स्थित हैं ? इसकी सुमेलित सूची अपनी अभ्यास-पुस्तिका में बनाइए।
यदि आपको कभी घूमने का अवसर मिले तो आप दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी व जयपुर में से किस स्थान पर जाना पसन्द करेंगे और क्यों ?

महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं तिथियाँ

622 ई0-हिजरी सन् का प्रारम्भ

1025 ई0-महमूद गजनवी का सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण

1191 ई0-तराइन का प्रथम युद्ध

1192 ई0-तराइन का दूसरा युद्ध

1206 ई0-मोहम्मद गौरी की मृत्यु, कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा गुलाम वंश की स्थापना

1210 ई0-इल्तुतमिश का राज्यारोहण

1236 ई0-इल्तुतमिश की मृत्यु, रजिया का राज्यारोहण

1290 ई0-खिलजी वंश की स्थापना

1296 ई0-अलाउद्दीन खिलजी का राज्यारोहण

1320 ई0-तुगलक वंश की स्थापना

1325 ई0-मोहम्मद बिन तुगलक का राज्यारोहण

1398 ई0-तैमूर का भारत पर आक्रमण

1451 ई0-लोदी राजवंश की स्थापना

1526 ई0-पानीपत का प्रथम युद्ध व मुगल साम्राज्य की स्थापना

1527 ई0-खानवा का युद्ध

1530 ई0-बाबर की मृत्यु, हुमायूँ का राज्यारोहण

1539 ई0-चौसा का युद्ध

1540 ई0-शेरशाह भारत का सुल्तान बना

1556 ई0-हुमायूँ की मृत्यु, अकबर का राज्यारोहण, पानीपत का द्वितीय युद्ध

1576 ई0-हल्दीघाटी का युद्ध

1605 ई0-अकबर की मृत्यु, जहाँगीर का राज्यारोहण

1628 ई0-शाहजहाँ का राज्यारोहण

1658 ई0-औरगंज़ेब का राज्यारोहण

1674 ई0-शिवाजी का राज्याभिषेक

1707 ई0-औरंगज़ेब की मृत्यु

1739 ई0-नादिरशाह का आक्रमण

1761 ई0-पानीपत का तृतीय युद्ध

नागरिक शास्त्र

E129LI

पाठ-1

हमारा संविधान(Our Constitution)

क्या आप बता सकते हैं कि स्वतंत्रता से पूर्व भारत में किसका शासन था ? आजादी से पूर्व भारत में अंग्रेजों का राज था। अंग्रेज ही तय करते थे कि भारत के लोगों के लिए कानून कैसे बनेंगे और कौन उन्हें लागू करेगा ? यहाँ का शासन उस तरह चलता था, जिस तरह इंग्लैण्ड की सरकार उसे चलाना चाहती थी। उसी समय से कई भारतीय सोच रहे थे कि यह बात ठीक नहीं है। किसी दूसरे देश के लोग हमारे लिए कानून व नियम कैसे बना सकते हैं ? उन्होंने इस बात के लिए स्वतंत्रता संघर्ष शुरू किया कि भारत के लोगों को स्वयं अपने कानून बनाने और अपना शासन चलाने का हक मिल सके।

कैसे बना हमारा संविधान

जवाहर लाल नेहरू संविधान पर हस्ताक्षर करते हुए

इतने बड़े देश के लिए ये सब बातें सोचना कोई आसान काम नहीं था। कोई एक व्यक्ति इस काम को अकेला कर भी नहीं सकता था। भारत के हर प्रान्त के पुरुषों एवं महिलाओं ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी इसलिए यह भी जरूरी था कि नियम, कानून बनाने में हर प्रान्त के पुरुषों एवं महिलाओं यानी सभी लोगों का हाथ हो। इस काम को करने के लिए सन् 1946 में एक संविधान सभा बनाई गई। इसमें 389 लोग थे जो भारत के हर प्रान्त से आए थे। कुछ लोग जिनके नाम आपने सुने होंगे, वे थे सरोजनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, मौलाना अबुल कलाम आजाद, जवाहरलाल नेहरू, एच.वी. कामथ। इस सभा के अध्यक्ष थे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद। संविधान सभा की एक प्रारूप समिति ;क्तंजि ब्वउउपजजममद्ध भी बनी जिसने संविधान लिखने का काम किया। इस समिति के अध्यक्ष थे डॉ. बी.आर. अम्बेडकर। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के बाद ही अपने देश में लोगों द्वारा चुनी गई सरकार का शासन शुरू हुआ, इसीलिए हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है।

डॉ0 भीमरॉव अम्बेडकर ने लन्दन में गोलमेज सम्मेलन में भी प्रतिभाग किया था। वे मानते थे कि दलितों के सामाजिक उत्थान के लिए उनकी राजनैतिक भागीदारी आवश्यक है इसलिए उन्होंने दलितों के लिए अलग से निर्वाचन की माँग की जिसके फलस्वरूप विधान मण्डलों में दलितों के स्थान आरक्षित कर दिए गए।

आपने शायद कभी किसी को यह कहते सुना होगा कि 'भारत एक लोकतांत्रिक देश है।' इसका मतलब यह है कि सरकार बनाने और बदलने में सभी लोगों की भागीदारी होनी चाहिए। दूसरी बात यह है कि लोकतांत्रिक देश में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितने भी ऊँचे पद पर हो, अपने मन से काम नहीं कर सकता। यहाँ तक कि पूरी सरकार भी अपनी मनमानी नहीं कर सकती। जिस देश में लोकतांत्रिक सरकार होती है, वहाँ एक संविधान होता है। संविधान में देश के कामकाज के बारे में बहुत सारी बातें लिखी होती हैं। देश के प्रत्येक नागरिक को संविधान के अनुसार ही काम करना पड़ता है। संविधान में यह भी लिखा है कि यदि कोई भी गैर-

संवैधानिक, यानी संविधान में लिखी बातों के खिलाफ काम करता है, तो इसके बारे में क्या किया जाना चाहिए।

हमारा संविधान

भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा एवं लिखित संविधान है। इसमें आवश्यकता पड़ने पर संशोधन एवं परिवर्तन किया जा सकता है। मूल संविधान में कुल 22 भाग 395 अनुच्छेद व 8 अनुसूचियाँ थीं। वर्तमान में अनुसूचियों की संख्या बढ़कर 12 हो गई है।

आइए जानें हमारे संविधान में है क्या ?

सबसे पहले हमारे संविधान में प्रस्तावना है जिसमें संविधान के उद्देश्य दिए गए हैं- अपने संविधान को समझने से पहले इसकी प्रस्तावना में दिए गए उद्देश्यों पर विचार करें जो निम्नवत् हैं-

प्रभुत्वसम्पन्न राज्य

भारत की सरकार आन्तरिक एवं बाहरी मामलों में अपनी इच्छानुसार आचरण एवं कार्य करने को पूर्ण स्वतन्त्र है इसलिए भारत को प्रभुत्वसम्पन्न राज्य कहा गया है।

लोकतन्त्रात्मक गणराज्य

भारत की सरकार जनता के लिए तथा जनता द्वारा चुनी जाती है इसलिए इसे लोकतन्त्रात्मक कहा जाता है। भारत का राष्ट्राध्यक्ष वंशानुगत न होकर निर्वाचित होता है इसलिए भारत को गणराज्य कहा गया है।

पंथ निरपेक्ष

राज्य किसी विशेष धर्म को राज्य धर्म के रूप में मान्यता नहीं प्रदान करता है वरन् सभी धर्मों के साथ समान आदर करता है।

लोकतंत्रात्मक गणराज्य

भारत की सरकार जनता के लिए तथा जनता द्वारा चुनी जाती है इसलिए इसे लोकतंत्रात्मक कहा जाता है। भारत का राष्ट्राध्यक्ष (राष्ट्रपति) वंशानुगत न होकर निर्वाचित होता है इसलिए भारत को गणराज्य कहा गया है।

मानव अधिकार

मानव अधिकार जन्म से ही प्रारम्भ हो जाते हैं और जीवन भर साथ रहते हैं। चाहे व्यक्ति किसी भी सामाजिक, आर्थिक स्तर, जाति व धर्म से सम्बन्ध रखता हो। 10 दिसम्बर, 1948 को संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की। पूरा विश्व 10 दिसम्बर को मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाता है। भारत में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए 1993 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन किया गया।

हमारे मौलिक अधिकार (Fundamental Rights)

अपने गाँव, शहर, टोले, मोहल्ले में हम सभी छोटे-बड़ों से अपनी बातें कहते रहते हैं। ऐसे ही हम देश-प्रदेश में कहीं भी आते-जाते रहते हैं। इन सबके लिए कोई रोका-टोकी नहीं होती। सोचिए, ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि सभी मनुष्यों को जन्म से ही कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं जिन्हें मानव अधिकार कहते हैं। इनमें से छः अधिकार मौलिक अधिकार के रूप में हमारे संविधान में दिए गए हैं जो निम्नवत् हैं -

1. समानता का अधिकार

संविधान के अनुसार भारतीय नागरिकों के साथ समान रूप से व्यवहार किया जाएगा। किसी भी व्यक्ति को उसके जन्म स्थान के आधार पर, स्त्री या पुरुष होने के आधार पर, किसी विशेष जाति के होने के आधार पर, किसी धर्म के होने के आधार पर, सार्वजनिक जगहों जैसे-दुकानों, होटलों या सिनेमाघरों में जाने से रोका नहीं जा सकता है। इसी प्रकार सरकारी नौकरी में सभी को समान अवसर प्रदान किया गया है । छुआ-छूत (अस्पृश्यता) को अपराध्ा घोषित किया गया है। सेना अथवा विद्या संबंधी उपाधि को छोड़कर अन्य उपाधियों का अंत कर दिया गया है।

2. स्वतन्त्रता का अधिकार

(क) भारत के सभी नागरिकों को विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है।

(ख) भारत के सभी नागरिकों को शांतिपूर्वक सम्मेलन करने की स्वतंत्रता प्राप्त है।

(ग) देश के नागरिकों को समिति या यूनियन बनाकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने की आजादी है।

(घ) भारत के हर नागरिक को अपनी इच्छानुसार कहीं भी आने-जाने की स्वतंत्रता प्राप्त है।

(ङ) भारत के नागरिक को भारत में कहीं भी रहने एवं बसने की स्वतंत्रता है।

(च) भारत का कोई भी नागरिक हो, अपनी इच्छा के अनुसार रोजगार कर सकता है।

दोषसिद्धि से संरक्षण, जीवन जीने की एवं निजी स्वतंत्रता- किसी भी व्यक्ति को बिना अपराध साबित हुए दंड नहीं दिया जा सकता और एक ही अपराध के लिए एक बार से अधिक दंड नहीं दिया जा सकता। उसे अपने विरुद्ध गवाही देने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।

जीवन जीने की एवं निजी स्वतन्त्रता- भारत में रह रहे सभी लोगों को जीने का अधिकार है। कोई भी उनकी जान नहीं ले सकता। लोगों के जीवन की रक्षा करना सरकार का कर्त्तव्य है। कोई व्यक्ति जब कोई कानून तोड़ता है या अपराध करता है तो उसे पुलिस पकड़ सकती है। पर जब तक जुर्म साबित नहीं हो जाता, तब तक उसे जेल की सजा नहीं

दी जा सकती। गिरफ्तारी के समय अपने जुर्म की जानकारी लेना और गिरफ्तारी के 24 घंटे के अन्दर मजिस्टे्ट के सामने पेश किए जाना भी हमारा एक मौलिक अधिकार है।

शिक्षा का अधिकार -

वर्ष 2002 में संविधान के 86वें संशोधन द्वारा अनुच्छेद 21ए में शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार में जोड़ दिया गया है जिसके अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराना सरकार का कर्तव्य है।

इस अधिकार को प्रभावी बनाने के लिए संसद द्वारा निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 (आर.टी.ई. 2009) पारित किया गया है। राष्ट्रपति के अनुमोदन के साथ ही अब देश के हर एक बच्चे को शिक्षा का मौलिक अधिकार कानूनी रूप से प्राप्त हो गया है।

3. शोषण के विरुद्ध अधिकार

इस अधिकार का मतलब है कि किसी व्यक्ति से जोर जबरदस्ती से काम नहीं लिया जा सकता। यदि कोई व्यक्ति एक काम छोड़ कर दूसरा काम करना चाहता है तो उसे रोका नहीं जा सकता। साथ ही बेगार लेने पर रोक है। किसी भी व्यक्ति को बिना मजदूरी, नियत से कम मजदूरी या खराब परिस्थितियों में जबरदस्ती काम करने को मजबूर नहीं किया जा सकता। साथ ही 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से मजदूरी नहीं करायी जा सकती है। बँधुआ मजदूरी की प्रथा में मजदूर के इस मौलिक अधिकार का हनन होता है क्योंकि उसे मजबूर होकर एक ही जमींदार या ठेकेदार के पास काम करना पड़ता है।

नन्हा रामू

राम कुमार के पास छपाई के लिए एक प्रेस था। प्रेस में कागज काटने वाली मशीनें भी थीं। उसने प्रेस में एक 14 साल के बच्चे रामू को 'हेल्पर' की नौकरी पर रखा था। एक दिन रामकुमार ने रामू से कहा कि रात में प्रेस बंद होने पर कागज काटने वाली मशीन की सफाई कर देना। रामू जब रात में उस मशीन की सफाई कर रहा था तो धार वाली छुरी अचानक गिर पड़ी और रामू की उंगलियाँ कट गयीं। रामू के चिल्लाने पर पड़ोसी कारखाने के लोगों ने रामू को अस्पताल पहुँचाया और इलाज कराकर उसकी जान बचाई। वहीं किसी व्यक्ति ने प्रेस के मालिक रामकुमार की शिकायत अपने क्षेत्र के श्रम प्रवर्तन अधिकारी (लेबर इनफोर्समेन्ट ऑफिसर) से कर दी। जहाँ उसे बाल मजदूरी (प्रतिबन्ध एवं नियन्त्रण) अधिनियम 1986 के तहत बालश्रम कराने के अपराध में जेल की सजा हो गई।

क्या तुम जानते हो ?

- 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम करवाना कानूनन अपराध है।
- कानून की मनाही के बावजूद बच्चों से काम करवाने वाले व्यक्ति को तीन महीने से एक साल तक की कैद हो सकती है। उसे 10,000/- से लेकर 20,000/- रु0 तक का जुर्माना भी हो सकता है।
- बाल मजदूरी के खिलाफ शिकायत अपने क्षेत्र के थाना, श्रम प्रवर्तन अधिकारी या मजिस्टे्ट के कोर्ट में भी की जा सकती है।

- सरकार द्वारा बच्चों को मुफ्त दोपहर का भोजन, किताबें, बैग और ड्रेस के साथ निःशुल्क शिक्षा एवं छात्रवृत्ति दी जा रही है। अतः माता-पिता का यह दायित्व है कि वे अपने बच्चों से श्रम न कराकर उन्हें स्कूल भेजें।

4. धर्म की स्वतन्त्रता का अधिकार

भारत में सभी को अपने धर्म का पालन करने की स्वतन्त्रता है। किसी को भी व्यक्तिगत रूप से अपने रीति-रिवाजों का पालन करने से नहीं रोका जा सकता है। सभी को अपने धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करने की स्वतन्त्रता है। आपने देखा होगा कि हम सभी होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस, लोहड़ी जैसे त्योहारों को कितने आनन्द के साथ मनाते हैं।

5. संस्कृति एवं शिक्षा का अधिकार

भारत के प्रत्येक नागरिक को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति को सुरक्षित रखने का अधिकार है। जिस धर्म या समाज के लोग कम संख्या में हैं उन्हें भी कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं। उन्हें अपने समाज में शैक्षिक संस्थाएँ खोलने का और अपनी भाषा एवं संस्कृति को आगे बढ़ाने का अधिकार है।

6.सांविधानिक उपचारों का अधिकार

कहीं पर यदि मौलिक अधिकारों का हनन हो रहा हो तो सीधे उच्चतम या उच्च न्यायालय में मुकदमा करने का अधिकार भी एक मौलिक अधिकार है। सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह भारतीय नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करे। यदि वह ऐसा नहीं करती तो उसके विरुद्ध लोकहित का मुकदमा किया जा सकता है।

लोकहित का मुकदमा-

जिनके मौलिक अधिकारों का हनन किया जा रहा है, उनकी ओर से कोई भी व्यक्ति लोकहित में मुकदमा कर सकता है।

संविधान में जहाँ नागरिकों के मूल अधिकार दिए गए हैं, वहीं देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए आपातकाल की व्यवस्था भी की गई है। देश में वाह्य आक्रमण, युद्ध अथवा सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में आपातकाल लागू किया जा सकता है। आपातकाल के दौरान राष्ट्रहित में नागरिकों के कुछ मूल अधिकार स्थगित भी किए जा सकते हैं।

राज्य की नीति निदेशक तत्व

संविधान में सरकार को नीतियाँ बनाने के लिए कुछ निर्देश दिए गए हैं जिन्हें नीति निदेशक तत्व कहते हैं। राज्य नीति निदेशक तत्वों का पालन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करेगा किन्तु इसके लागू न होने पर राज्य के विरुद्ध न्यायालय की शरण नहीं ली जा सकती। कुछ नीति निदेशक तत्व निम्नवत् दिए गए हैं -

सरकार को ऐसी नीति बनानी चाहिए जिससे सभी को काम करने का अधिकार मिले। काम के लिए अच्छा एवं स्वस्थ वातावरण मिले। आराम एवं सम्मान से रहने लायक वेतन और उद्योगों के संचालन में मजदूरों की भी भागीदारी हो।

बच्चों को अपने विकास के लिए स्वतंत्र और सम्मान भरा वातावरण मिले।

नीतियाँ ऐसी हों जिससे समान काम के लिए समान मजदूरी मिले। स्त्री एवं पुरुषों के वेतन या मजदूरी में किसी प्रकार का भेद-भाव न किया जाए।

ऐसी नीतियाँ न बनाई जाएँ जिससे कुछ लोगों के पास अधिक धन हो जाए और अन्य लोग निर्धन बने रहें।

सभी पुरुषों और स्त्रियों को पर्याप्त रोजगार दिलाने के लिए नीति बनाई जाए।

किसी को भी ऐसा काम करने पर मजबूर न होना पड़े जिससे उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता हो।
निःशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराना, जिससे गरीबों को न्याय प्राप्त हो सके।
पर्यावरण, वन एवं वन्य जीवों की रक्षा का प्रयास करना।
राज्य को निर्देशित किया गया है कि वह कार्यपालिका को न्यायपालिका से पृथक रखे।
अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा हेतु प्रयास करना।

हमारे मौलिक कर्तव्य

अभी तक आपने अपने मौलिक अधिकारों को जाना है परन्तु हमारे मौलिक कर्तव्य भी हैं। इन मौलिक कर्तव्यों को 1976 में संविधान में जोड़ा गया, जिसके अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -
संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान का आदर करे।
स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोएँ और उनका पालन करे।
भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।
देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।
भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भाव से परे हो। ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।
भारतीय संस्कृति के गौरव को समझे और उसका सम्मान करे।
प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य-जीव हैं, रक्षा करे और उनका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दया-भाव रखे।
वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद, ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।
सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।
व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू

ले।

हर माता-पिता या संरक्षक 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के अपने बच्चों या अपने पाल्य को शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करे। यह कर्तव्य 2002 में संविधान में जोड़ा गया। वर्तमान में मौलिक कर्तव्यों की संख्या 11 है।

मूल अधिकार एवं कर्तव्य परस्पर जुड़े हुए है हमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर वाले विकल्प के सामने वाले गोले को काला कीजिए -

(क) संविधान सभा के अध्यक्ष थे -

(अ) डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद (ब) डॉ0 भीमराव अम्बेडकर

(स) सरोजनी नायडू (द) एच0बी0 कामथ

(ख) मौलिक अधिकारों की संख्या है -

(अ) 10 (ब) 8

(स) 6 (द) 5

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) संविधान सभा के बारे में लिखिए।

(ख) संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि भारत एक पंथ निरपेक्ष राज्य है, इसका क्या अभिप्राय है ?

(ग) भारत लोकतंत्रात्मक राज्य होने के साथ गणराज्य भी है ? स्पष्ट कीजिए।

(घ) नागरिकों के लिए मौलिक अधिकार क्यों जरूरी हैं ?

(ङ) समानता के अधिकार से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

(च) नीति निदेशक तत्व राज्य के लिए क्यों जरूरी हैं ?

(छ) मौलिक अधिकार और नीति निदेशक तत्वों में कोई एक अन्तर बताइए।

(ज) संविधान में प्रदत्त 'स्वतंत्रता के अधिकार' के अंतर्गत नागरिकों को किस प्रकार की स्वतंत्रताएँ दी गई हैं ?

(झ) संविधान में दिए गए किन्हीं दो मौलिक कर्तव्यों को लिखिए।

(´)   हमारे देश के लिए संविधान क्यों महत्वपूर्ण है ?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष .... थे।

(ख) संविधान के द्वारा भारतीय नागरिकों को .... मौलिक कर्तव्य दिए गए हैं।

(ग) मौलिक अधिकारों के हनन पर भारतीय नागरिक...................... की शरण में जा सकता है।

4. अधिकार और कर्तव्य परस्पर जुड़े हैं। उदाहरण देकर समझाइए।

प्रोजेक्ट वर्क

अपने पास-पड़ोस में जाकर पता कीजिए कि 14 साल से कम आयु के कितने बच्चे मजदूरी करते हैं। यह भी पता कीजिए कि वे किस प्रकार के काम करते हैं और उनमें से कितने बच्चे विद्यालय जाते हैं। इस अनुभव को विद्यालय में साझा करें।

पाठ 2

व्यवस्थापिका-कानून बनाना

हमारे संविधान में कहा गया है कि भारत अर्थात इंडिया 'राज्यों का संघ' ;न्दपवद व ि्जंजमेद्ध होगा। इसका अर्थ यह है कि भारतीय संघ का पूरा क्षेत्र सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से मिलकर बना है।

अपने शिक्षक की सहायता से भारत का राजनैतिक मानचित्र देखकर अपने देश के राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों की सूची अपनी अभ्यास-पुस्तिका में बनाइए।

भारत में संघ (केन्द्र) तथा राज्य सरकारों के अधिकार संविधान द्वारा निश्चित किए गए हैं। चूँकि भारत राज्यों का संघ है इसलिए संघ और राज्य के काम बँटे हुए हैं। संघ सरकार जो कानून बनाती है वह पूरे देश के लिए बनाती है। वह ऐसे मामलों (विषयों) पर कानून बनाती है जो किसी एक राज्य के लिए न होकर सभी राज्यों के लिए होते हैं।

संघ एवं राज्यों के बीच विधायी शक्तियों का विभाजन तीन सूचियों में किया गया है जो भारतीय संघीय व्यवस्था का प्रमुख लक्षण है। ये तीनों सूचियाँ इस प्रकार हैं -

संघ सूची

राज्य सूची

समवर्ती सूची

संघ सूची - इस सूची के विषयों पर विधि (कानून) बनाने का अधिकार संसद को प्राप्त है, जिनमें से कुछ प्रमुख विषय हैं-

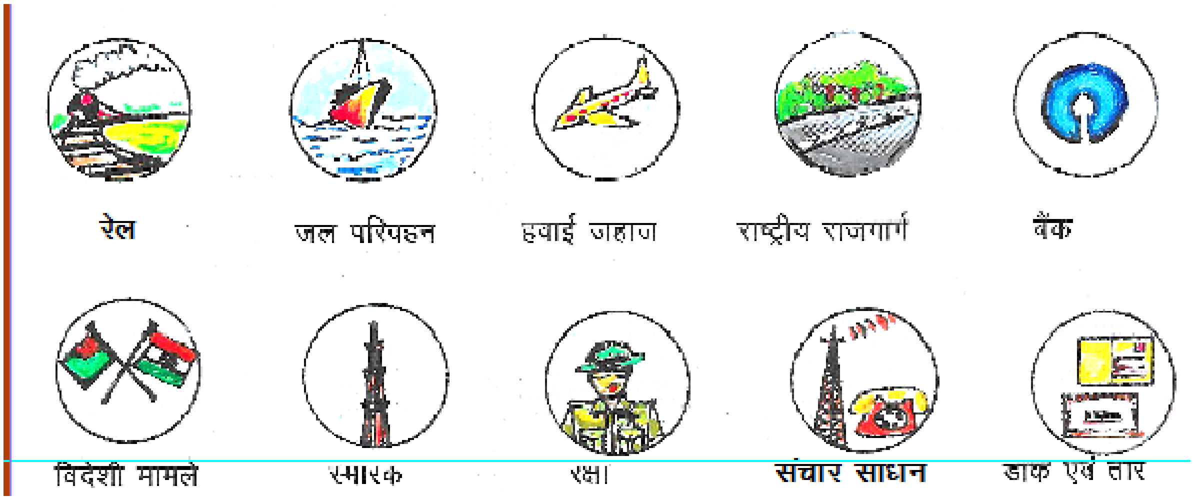

राज्य सूची- इस सूची के विषयों पर कानून बनाने का अधिकार राज्य विधानमंडल को प्राप्त है, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं-

राज्य सूची के कतिपय विषय

समवर्ती सूची- कुछ ऐसे भी विषय हैं जिन पर संसद और राज्य विधानमंडल दोनों ही कानून बना सकते हैं। इन्हें समवर्ती सूची के अन्तर्गत रखा गया है। इस सूची में दिए गए कुछ विषय निम्नवत् हैं-

समवर्ती सूची के कतिपय विषय

यदि समवर्ती सूची के किसी एक ही विषय पर संघ और राज्य के कानूनों में मतभेद होता है तो संघ के कानून को मान्यता दी जाती है।

संविधान में यह भी व्यवस्था की गई है कि यदि भविष्य में किसी नए विषय पर कानून बनाना हो तो उस विषय पर कानून बनाने का अधिकार संसद को ही होगा।

समवर्ती सूची के कतिपय विषय

चिकित्सा अन्य व्यवसाय शादी मीडिया किताबें

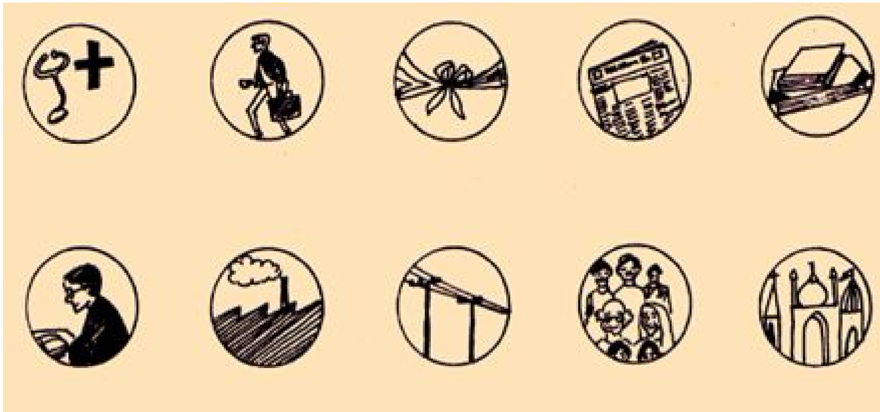

शिक्षा उद्योग बिजली परिवार धार्मिक संस्थाएँ

सरकार के अंग

	केन्द्र	राज्य	कार्य
व्यवस्थापिका कार्यपालिका न्यायपालिका	संसद केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् उच्चतम न्यायालय	विधानमंडल राज्य मंत्रिपरिषद् उच्च न्यायालय	कानून बनाना कानून लागू करना कानून का पालन कराना

संसद

संघ (केन्द्र) की व्यवस्थापिका को संसद कहते हैं। संसद का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है- देश के लिए कानून का निर्माण करना। भारतीय संसद, राष्ट्रपति और दो सदनों-लोक सभा और राज्य सभा से मिलकर बनती है।

संसद भवन

लोकसभा

लोक सभा संसद का ‘निम्न सदन’ ;स्वूमत भ्वनेमद्ध है। लोक सभा के सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं। लोक सभा के चुनाव के लिए पूरे देश को अनेक निर्वाचन क्षेत्रों में बाँट दिया है। हर हिस्से को ‘लोक सभा चुनाव क्षेत्र’ कहते हैं।

हर चुनाव क्षेत्र से एक सदस्य चुनकर लोक सभा में आते हैं। लोक सभा की अधिकतम संख्या 552 हो सकती है। वर्तमान में 543 निर्वाचित सदस्य हैं और 2 सदस्य आंग्ल भारतीय समुदाय से मनोनीत हैं। चुनाव में उस क्षेत्र में रहने वाले 18 साल या उससे ऊपर की आयु वाले लोग वोट डालते हैं। चुनाव लड़ने वालों मंे जो सबसे ज्यादा वोट पाता है वही लोक सभा का सदस्य बनता है। आपने चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को भाषण देते या नारे लगाते हुए देखा होगा।

योग्यताएँ

लोकसभा का सदस्य बनने के लिए निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए -

भारत का नागरिक हो व मतदाता सूची में उसका नाम हो।
25 साल या उससे अधिक आयु हो।
किसी सरकारी लाभ के पद पर न हो।
पागल या दिवालिया न हो।

लोक सभा का कार्यकाल

लोक सभा के सदस्य 5 वर्ष के लिए चुने जाते हैं लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति इसके पहले भी लोक सभा को भंग कर सकता है।

लोक सभा के पदाधिकारी

लोकसभा के सदस्य बहुमत से अपना एक अध्यक्ष ;ैचमंामतद्ध और एक उपाध्यक्ष ;क्मचनजल ैचमंामतद्ध चुनते हैं। ये उन्हीं सदस्यों के बीच में से चुने जाते हैं।

पता कीजिए इस समय लोकसभा का स्पीकर कौन है ?

बैठकों के दौरान लोकसभा की कार्यवाही अध्यक्ष चलाता है। लोकसभा और राज्यसभा का एक साथ अध्िावेशन (बैठक) होने पर भी अध्यक्ष ही कार्यवाही का नियंत्रण व संचालन करता है। अध्यक्ष न हो तो यही काम उपाध्यक्ष करता है। यदि लोकसभा का बहुमत अध्यक्ष को न चाहे तो उन्हें प्रस्ताव पारित करके हटा सकते हैं।

लोकसभा के अधिवेशन साल में दो बार अवश्य होने चाहिए। दोनों अधिवेशनों के बीच छः महीने से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए।

लोक सभा के कार्य

कानून बनाना।
मंत्रिपरिषद् के कामों पर अपना नियंत्रण रखना।
कानूनों में संशोधन करना।
जनता पर कर लगाने और खर्च करने का निर्णय लेना।

राज्य सभा

राज्य सभा संसद का ‘उच्च सदन’ ;न्चचमत भ्वनेमद्ध है। इसके सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक 250 हो सकती है। इनमें से 12 सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किया जाता है। ये सदस्य अपने किसी न किसी कार्य के लिये प्रसिद्ध होते हैं। इन सदस्यों को राष्ट्रपति साहित्यकारों, वैज्ञानिकों, कलाकारों तथा समाज-सेवियों में से नामित करता है।

शेष सदस्यों का चुनाव राज्यों तथा दिल्ली और पुदुच्चेरी विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य करते हैं। चूँकि इनका चुनाव सीधे जनता द्वारा नहीं होता है इसलिए इस प्रकार के चुनाव को 'अप्रत्यक्ष चुनाव' कहते हैं। राज्य सभा का सदस्य वही व्यक्ति हो सकता है जिसकी आयु 30 वर्ष या उससे अधिक हो। शेष योग्यताएँ वही होती हैं जो लोकसभा के सदस्यों के लिए निश्चित की गई हैं। परन्तु कोई व्यक्ति एक ही समय में संसद के दोनों सदनों का सदस्य नहीं हो सकता।

सदस्यों का कार्यकाल

राज्य सभा के सदस्यों का कार्यकाल छः वर्ष है। इसके एक तिहाई सदस्य हर दो वर्ष बाद अवकाश ग्रहण करते हैं और उनके स्थान पर नये सदस्य चुनकर आते हैं। इस प्रकार राज्यसभा कभी भंग नहीं होती है। इसीलिए इसे 'स्थायी सदन' कहा जाता है।

राज्यसभा के पदाधिकारी

भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। यह राज्यसभा की कार्यवाही का संचालन करता है जब सभापति उपस्थित नहीं रहता तब उसके स्थान पर उपसभापति कार्य करता है।

अधिवेशन (बैठक)

राज्यसभा का वर्ष में दो बार अधिवेशन (बैठक) होना आवश्यक है। एक बैठक और दूसरी बैठक के बीच छः माह से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए।

राज्यसभा का कार्य

लोकसभा की तरह राज्यसभा भी कानून बनाने का कार्य करती है। दोनों सदनों द्वारा जब कोई प्रस्ताव (विधेयक) स्वीकार कर लिया जाता है तब राष्ट्रपति के पास हस्ताक्षर के लिए भेजा जाता है। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद वह विधेयक कानून बन जाता है।

विशेष बात यह है कि धन से सम्बन्ध रखने वाले विधेयक लोकसभा में ही प्रस्तुत किये जा सकते हैं। राज्यसभा में उन पर केवल चर्चा की जाती है।

कानून निर्माण की प्रक्रिया

संसद का सबसे महत्त्वपूर्ण काम है देश के लिए कानून बनाना और कानून बदलना। जिस विषय पर कानून बनाना होता है उसका एक प्रस्ताव तैयार किया जाता है, उसे विधेयक (ठपसस) कहते हैं। ये

विधेयक दो प्रकार के होते हैं- साधारण विधेयक तथा धन विधेयक। कानून बनने की संक्षिप्त प्रक्रिया इस प्रकार है

साधारण विधेयक

साधारण विधेयक लोकसभा या राज्यसभा में से किसी में भी पहले पेश किया जाता है। इस विधेयक को कोई भी मंत्री पेश कर सकता है।

साधारण विधेयक तीन चरणों में पारित होता है जिसे तीन वाचन कहते हैं।

पहला वाचन - लोकसभा के सदस्य ने अध्यक्ष से विधेयक पेश करने की अनुमति माँगी। उनकी अनुमति से लोकसभा में विधेयक पेश किया गया। हर सदस्य को विधेयक की एक प्रति दी गयी और उसके बारे में बताया गया। कुछ दिनों बाद समय तय किया गया और विधेयक के हर बिन्दु पर विस्तृत चर्चा की गयी। कई सदस्यों ने संशोधन भी सुझाए।

दूसरा वाचन - कुछ दिनों बाद संशोधन के साथ विधेयक दोबारा बारीकी से पढ़ा गया और विधेयक का विश्लेषण किया गया। इसी समय विधेयक में जरूरी संशोधन भी किए गए।

तीसरा वाचन - द्वितीय वाचन के पश्चात विधेयक का प्रारूप निश्चित हो जाता है। इस वाचन में संपूर्ण विध्ोयक को स्वीकार या अस्वीकार करने के सम्बन्ध में चर्चा होती है। इस चरण में विधेयक में कोई भी महत्त्वपूर्ण संशोधन नहीं किया जाता है।

यदि सदन का अपेक्षित बहुमत इसका समर्थन कर देता है, तो विधेयक पारित हो जाता है। यदि

विधेयक स्वीकृत हो जाता है तो उसे दूसरे सदन में स्वीकृति हेतु भेजा जाता है। दूसरे सदन में भी विधेयक इन तीनों अवस्थाओं में से गुजरता है। यदि दूसरा सदन भी इसे स्वीकृत कर लेता है, तो उस विधेयक को राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भेजा जाता है। राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के पश्चात वह काननू बन जाता है।

कानून बनाने की प्रक्रिया के मुख्य बिन्दु

साधारण विधेयक पहले किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है - राज्यसभा या लोकसभा में।

आधे से अधिक उपस्थित सदस्यों का मत यदि विधेयक के पक्ष में होता है तो विधेयक उस सदन में पारित हो जाता है।

राष्ट्रपति के हस्ताक्षर से पहले दोनों सदनों से विधेयक पारित होना जरूरी है।

आमतौर पर जब मत लिए जाते हैं तो सभा का सभापति अपना मत नहीं देता है, पर यदि विधेयक के पक्ष और विपक्ष में बराबर सदस्यों के मत हैं तो सभापति अपना मत दे सकता है। इस स्थिति में उसका मत निर्णायक होगा। यदि साधारण विधेयक एक सदन से पारित हो जाता है पर दूसरे सदन से नहीं पारित होता है तो समस्या उठ खड़ी होती है। इसे सुलझाने के लिए राष्ट्रपति, दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुला सकता है।

राष्ट्रपति साधारण विधेयक को सुझावों सहित वापस लोकसभा में भेज सकता है। लोकसभा चाहे तो उस विधेयक को वहीं पर समाप्त कर सकती है परन्तु वही विधेयक लोकसभा द्वारा दुबारा राष्ट्रपति को भेजे जाने पर राष्ट्रपति को अपने हस्ताक्षर करने ही होंगे।

धन विधेयक

जिन विधेयकों में खर्चें या आमदनी की बात जुड़ी है, जैसे बजट, तो उस के लिए प्रक्रिया कुछ अलग है। ऐसे विधेयक राष्ट्रपति की अनुमति से ही संसद में पेश किए जा सकते हैं। ये विधेयक हमेशा पहले लोकसभा में पेश किए जाते हैं। उन्हें मंत्री ही पेश कर सकते हैं। केवल लोकसभा ही इन विधेयकों पर मत दे सकती है। यानी ये विधेयक लोकसभा से ही पारित होते हैं। राज्यसभा में ये विधेयक केवल चर्चा के लिए भेजे जाते हैं। राज्यसभा केवल 14 दिन के लिए धन विधेयक अपने पास रख सकती है।

लोकतंत्र का एक और महत्वपूर्ण सिद्धान्त है बहुमत का शासन। बहुमत से लोग चुने जाते हैं, बहुमत से विधेयक पारित होते हैं।

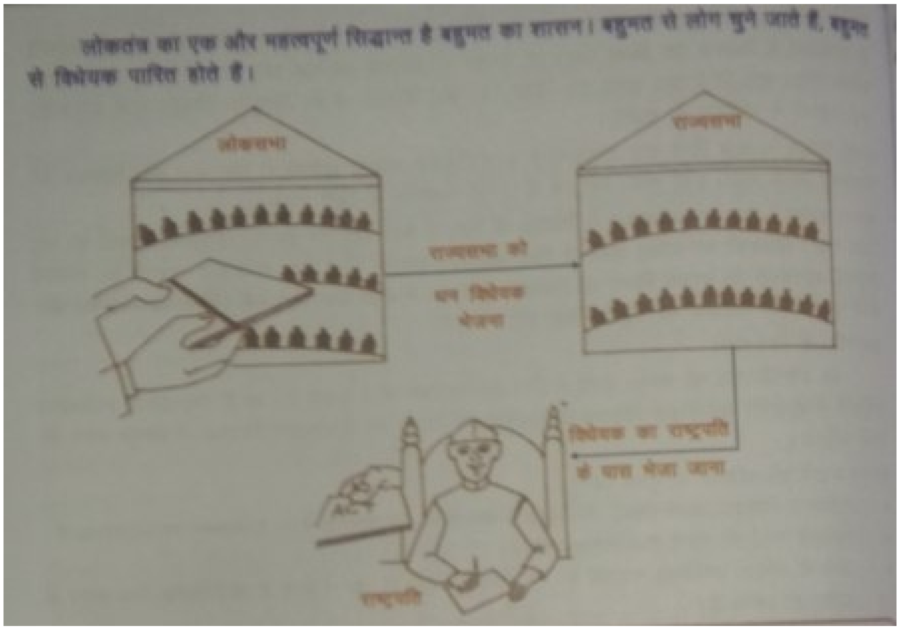

और भी जानें

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में

©हमारे प्रदेश की व्यवस्थापिका को विधानमंडल कहते हैं।

©यह राज्यपाल, विधान सभा तथा विधान परिषद् से मिलकर बनती है।

©विधानसभा में 403 सदस्य होते हैं जो जनता द्वारा निर्वाचित होते हैं। जबकि एक सदस्य का मनोनयन राज्यपाल आंग्ल भारतीय समुदाय से कर सकता है।

©वही व्यक्ति विधान सभा का चुनाव लड़ सकता है, जो 25 वर्ष या उससे अधिक आयु का हो विधानसभा के सदस्यों को विधायक या एम0एल0ए0 ;डमउइमत व िस्महपेसंजपअम ।ेमउइसलद्ध कहा जाता है।

©सभी सदस्य मिलकर अपने बीच में से ही एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष का चुनाव

करते हैं।

©सामान्यत: विधानसभा का गठन 5 वर्ष के लिए किया जाता है परन्तु मंत्रिपरिषद् की सलाह पर राज्यपाल इसे समय से पहले भी भंग कर सकता है।

©उत्तर प्रदेश विधान परिषद् में 100 सदस्य होते हैं। इसमें 38 सदस्य विधानसभा द्वारा, 36 सदस्य स्थानीय संस्थाओं द्वारा, 8 शिक्षकों द्वारा तथा 8 स्नातकों द्वारा निर्वाचित होते हैं। 10 सदस्य राज्यपाल द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।

©वही व्यक्ति विधान परिषद् का सदस्य बन सकता है जो 30 वर्ष या उससे अधिक आयु का हो। विधान परिषद् के सदस्यों को विधायक या एम0एल0सी0 ;डमउइमत व िस्महपेसंजपअम ब्वनदबपसद्ध कहते हंै। विधान परिषद् के सदस्य अपने बीच में से ही एक सभापति और एक उप सभापति चुनते हैं।

©विधान परिषद् एक स्थाई सदन है। इसके सदस्यों का चुनाव 6 वर्ष के लिए किया जाता है। प्रत्येक दूसरे वर्ष एक तिहाई सदस्य अवकाश ग्रहण करते हैं।

©विधानमंडल का मुख्य कार्य कानून बनाना है। विधानसभा एवं विधान परिषद् द्वारा पारित विधेयक राज्यपाल की सहमति के बाद कानून बन जाता है।

©हमारे प्रदेश का विधानसभा भवन लखनऊ में स्थित है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर वाले विकल्प के सामने वाले गोले को काला कीजिए -

(क) लोकसभा का कार्यकाल है -

(अ) 5 वर्ष (ब) 6 वर्ष

(स) 7 वर्ष (द) 8 वर्ष

(ख) उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की सदस्य संख्या है -

(अ) 95 (ब) 99

(स) 100 (द) 104

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) भारतीय संघीय व्यवस्था का प्रमुख लक्षण क्या है?

(ख) केन्द्र सूची, राज्य सूची, समवर्ती सूची के दो-दो विषय लिखिए।

(ग) लोकसभा के कार्यों को लिखिए।

(घ) लोकसभा तथा राज्यसभा की शक्तियों में कोई एक अन्तर लिखिए।

(ङ) विधेयक के कानून बनने के तीन चरणों को प्रस्तुत कीजिए।

(च) धन विधेयक क्या है ? इसको पारित करने की प्रक्रिया साधारण विधेयक से किस प्रकार अलग है ?

(छ) अपने प्रदेश के विधानमंडल के बारे में लिखिए।

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) संघ कई .... से मिलकर बना है।

(ख) संविधान में शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाले विषय .... सूची में दिया गया है।

(ग) लोकसभा, राज्यसभा तथा .... को मिलाकर भारतीय संसद बनती है।

(घ) राज्य सभा में सदस्यों की संख्या अधिक से अधिक .... हो सकती है।

3. सही मिलान कीजिए-

केन्द्र सूची का विषय	6 वर्ष
लोकसभा की बैठक की कार्यवाही	डाक तथा तार
राज्यसभा के सदस्यों का कार्यकाल	कम से कम 25 वर्ष
लोकसभा की सदस्यता हेतु न्यूनतम आयु	अध्यक्ष

समूह गतिविधि

कक्षा के बच्चों की 2 टोलियां बनाकर लोकसभा व राज्यसभा का गठन किया जाए। कक्षाध्यापक राष्ट्रपति की भूमिका में रहे। एक विधेयक पारित करने की प्रक्रिया का अभिनय किया जाए।

पाठ 3

कार्यपालिका - कानून लागू करना

सरकार का वह अंग जो नियमों, कानूनों को लागू करता है, कार्यपालिका कहलाता है। कार्यपालिका, विधायिका द्वारा पारित नीतियों और कानूनों को लागू करने के लिए उत्तरदायी होती है। चूँकि भारत संघ राज्य है इसलिए संविधान में केन्द्र और राज्य दोनों स्तरों पर कार्यपालिका की व्यवस्था है।

भारत का राष्ट्रपति

संघ की कार्यपालिका का प्रधान राष्ट्रपति होता है। वह भारत का प्रथम नागरिक होता है। वह भारत की तीनों सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति होता है। समस्त कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति को प्राप्त हैं, परन्तु वास्तविक शक्तियाँ प्रधानमंत्री एवं उसकी मंत्रिपरिषद् में निहित होती हैं।

राष्ट्रपति का चुनाव

राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मण्डल के द्वारा किया जाता है, जिसमें सम्मिलित होते हैं-

संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य।

राज्यों की विधानसभाओं तथा दिल्ली एवं पुदुच्चेरी संघ राज्य क्षेत्र की विध्ाान सभाओं के निर्वाचित सदस्य।

राष्ट्रपति का कार्यकाल

राष्ट्रपति का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है लेकिन राष्ट्रपति की मृत्यु होने, त्यागपत्र देने पर पद रिक्त हो सकता है। वह अपना त्यागपत्र उपराष्ट्रपति को देता है।

इसके अतिरिक्त यदि राष्ट्रपति संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन करे तो उसे संसद द्वारा महाभियोग की प्रक्रिया से हटाया जा सकता है। उसे हटाने का प्रस्ताव संसद के किसी भी

सदन में रखा जा सकता है।

राष्ट्रपति पद के लिए योग्यताएँ

वह भारत का नागरिक हो।

35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

वह किसी लाभ के पद पर न हो।

लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने की योग्यता रखता हो।

राष्ट्रपति की शक्तियाँ व कार्य

भारत सरकार के समस्त शासन संबंधी कार्य राष्ट्रपति के नाम से किए जाते हैं। राष्ट्रपति की शक्तियाँ निम्नवत हैं-

नियुक्ति संबंधी शक्तियाँ

राष्ट्रपति प्रधानमंत्री को नियुक्त करता है।

प्रधानमंत्री की सलाह पर अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है तथा उनके विभागों का बँटवारा करता है।

राष्ट्रपति राज्यपालों, उच्चतम व उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है।

निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन आयुक्त एवं अन्य आयुक्तों, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की नियुक्ति भी राष्ट्रपति करता है।

कानून बनाने में भूमिका

संसद का अंग होने के कारण कानून बनाने की प्रक्रिया में राष्ट्रपति की भूमिका प्रमुख है। संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित कोई विधेयक राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बिना कानून नहीं बन सकता। यदि संसद के दोनों सदनों में विधेयक पारित हो भी जाए फिर भी राष्ट्रपति एक बार हस्ताक्षर करने से मना कर सकता है। विधेयक में बदलाव के सुझाव दे सकता है और एक बार विधेयक वापस लौटा सकता है, पर यदि संसद के दोनों सदन दोबारा उसी विधेयक को, राष्ट्रपति के सुझावों के बिना अथवा सुझावों सहित पारित कर देते हैं, तो राष्ट्रपति को हस्ताक्षर करने होते हैं।

यदि किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा कोई विधेयक राष्ट्रपति के पास स्वीकृति हेतु भेजा जाता है तो ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति विधेयक पर अपनी स्वीकृति दे सकता है या पुनर्विचार

के लिए वापस लौटा सकता है।

क्षमा दान की शक्ति

राष्ट्रपति मृत्युदण्ड, अन्य दण्ड प्राप्त व्यक्तियों को क्षमा कर सकता है या दण्ड को कुछ समय के लिए स्थगित एवं परिवर्तित कर सकता है।

राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियाँ

राष्ट्रपति निम्नलिखित परिस्थितियों में इन शक्तियों का प्रयोग कर सकता है -

युद्ध, बाह्य आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह की स्थिति में (राष्ट्रीय आपात)

राज्यों में संवैधानिक तंत्र विफल होने पर (राष्ट्रपति शासन)

वित्तीय संकट के समय (वित्तीय आपात)

चर्चा कीजिए- राष्ट्रपति देश का औपचारिक प्रधान क्यों होता है ?

भारत का उपराष्ट्रपति

भारत का उपराष्ट्रपति पाँच वर्ष के लिए चुना जाता है। उपराष्ट्रपति को लोकसभा और राज्यसभा के सभी सदस्य मिलकर चुनते हैं। उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है। राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में उपराष्ट्रपति उसके स्थान पर कार्य करता है।

उपराष्ट्रपति पद के लिए योग्यताएँ

वह भारत का नागरिक हो।

35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

वह किसी लाभ के पद पर न हो।

राज्यसभा का सदस्य बनने की योग्यता रखता हो।

उपराष्ट्रपति स्वेच्छा से अपना त्यागपत्र राष्ट्रपति को दे सकता है अथवा राज्यसभा के प्रस्ताव पर

लोकसभा की सहमति से हटाया जा सकता है।

प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद्ः

राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को ही प्रधानमंत्री ;च्तपउम डपदपेजमतद्ध चुनता है जिसे लोकसभा में बहुमत प्राप्त हो। यदि वह संसद के किसी भी सदन का सदस्य नहीं है

तो पद धारण की तिथि से छः माह के भीतर किसी भी सदन का सदस्य बनना आवश्यक होगा।

यह कैसे पता चलता है कि किसे लोकसभा में बहुमत प्राप्त है? आमतौर पर राजनैतिक दलों के सदस्य चुनाव लड़ते हैं। आप कई दलों के नाम जानते होंगे। जब किसी एक दल से ही लोकसभा के आधे से अधिक सदस्य चुन लिए जाते हैं तो यह दल अपना नेता चुनता है। उसे लोकसभा में बहुमत प्राप्त होता है। अतः उसे प्रधानमंत्री बनाया जाता है। प्रधानमंत्री के सुझाव पर राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद्् के सदस्यों की नियुक्ति करता है। प्रधानमंत्री किसी मंत्री को हटाने अथवा नए मंत्री बनाने की राष्ट्रपति से संस्तुति करता है। सभी मंत्रियों का लोकसभा या राज्यसभा का सदस्य होना जरूरी है, नहीं तो उसे छः महीने के अन्दर ही संसद के सदस्य के रूप में निर्वाचित होना पड़ता है। जिस दल के सदस्य प्रधानमंत्री और मंत्री बनते हैं, उसे सत्तारूढ़ या सत्ताधारी दल और बाकी दलों को विपक्ष कहा जाता है।

प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद्् क्या काम करते हैं ?

संसद के द्वारा बनाए गए कानून और नीतियों को देश में लागू करने की जिम्मेदारी प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद्् की है। इसके लिए मंत्रिपरिषद्् के कई मंत्रालय और विभाग हैं, जैसे- रेल मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय आदि। मंत्रालय और विभागों में कई हज़ार लोग काम करते हैं। ये अधिकारी व कर्मचारी पूरे भारत में फैले हुए हैं।

इन सब कामों के लिए कई हज़ार करोड़ रुपये खर्च होते हैं। हर एक विभाग साल भर में सैकड़ों करोड़ रुपये खर्च करता है। इस पूरे खर्च की ज़िम्मेदारी भी केन्द्रीय मंत्रिपरिषद्् और प्रधानमंत्री की होती है। खर्च और आमदनी का एक अलग मंत्रालय है- वित्त मंत्रालय।

संसद का मंत्रिपरिषद्् पर नियंत्रण

मंत्रिपरिषद्् के कार्यों पर संसद नियंत्रण करती है। यदि मंत्रिपरिषद्् और प्रधानमंत्री ठीक से काम न करें तो उन्हें लोकसभा द्वारा हटाया जा सकता है। इन्हें हटाने के लिए लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पेश किया जा सकता है। यदि यह प्रस्ताव बहुमत से पारित हो जाता है तो प्रधानमंत्री सहित मंत्रिपरिषद्् को इस्तीफा देना पड़ता है।

इसके अलावा सांसद (संसद सदस्य) लोकसभा या राज्य सभा में अन्य प्रकार से भी नियंत्रण रखते हैं-

वे मंत्रियों से सवाल पूछ सकते हैं और जानकारी माँग सकते हैं। मंत्रिपरिषद्् किसी सवाल का जवाब देने से या जानकारी देने से इनकार नहीं कर सकता, न ही गलत जवाब दे सकता है।

वे किसी विषय पर मंत्रिपरिषद्् का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।

वे बजट पर टिप्पणी कर सकते हैं और उसमें संशोधन का सुझाव दे सकते हैं।

इस प्रकार मंत्रिपरिषद्् के कार्योंें पर संसद नियंत्रण रखती है।

उत्तर प्रदेश के संदर्भ में

(0) हमारे प्रदेश की कार्यपालिका राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद्् से मिलकर बनती है।

(0) राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। राष्ट्रपति उसी व्यक्ति को राज्यपाल नियुक्त करता है, जो भारत का नागरिक हो और 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

(0) राज्य लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों, राज्य के महाधिवक्ता एवं राज्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की नियुक्ति राज्यपाल करता है।

(0) राज्यपाल को उसके कार्यों में सहायता एवं सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद्् होती है, जिसका प्रधान मुख्यमंत्री होता है।

(0) राज्यपाल विधान सभा के बहुमत प्राप्त करने वाले व्यक्ति को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है। मुख्यमंत्री की सलाह पर राज्यपाल मंत्रिपरिषद्् के सदस्यों की नियुक्ति करता है।

(0) मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्् के सदस्य अधिक से अधिक विधान सभा के कार्यकाल अर्थात् 5 वर्ष तक अपने पद पर रह सकते हैं।

(0) अविश्वास का प्रस्ताव पारित हो जाने पर वे पाँच वर्ष के पहले भी हट सकते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) हमारे देश में कानून किसके द्वारा लागू किया जाता है ?

(ख) मंत्रिपरिषद् पर नियंत्रण कैसे रखा जा सकता है ?

(ग) राष्ट्रपति के चुनाव के लिए निर्वाचक मण्डल में कौन-कौन सम्मिलित होते है ?

(घ) राज्यसभा का सभापति कौन होता है ?

(ङ) राष्ट्रपति को पद से कैसे हटाया जा सकता है ?

(च) केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् का गठन कैसे होता है ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) राष्ट्रपति का चुनाव .... वर्ष के लिए होता है।

(ख) भारत का प्रथम नागरिक .... होता है।

(ग) राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में .... उसके स्थान पर कार्य करता है।

(घ) लोकसभा में विश्वासमत प्राप्त करने के लिए .... आवश्यक है।

3. निम्नवत् कथनों में सही के सामने सही (झ) तथा गलत के सामने गलत (´) का निशान लगाइए-

(क) संसद द्वारा बनाए गए कानून मंत्रिपरिषद् द्वारा लागू किए जाते हैं। ( )

(ख) राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में प्रधानमंत्री उसके सब काम करता है। ( )

(ग) राष्ट्रपति बनने के लिए न्यूनतम आयु 35 वर्ष होनी चाहिए। ( )

(ध) कोई भी विधेयक प्रधानमंत्री के हस्ताक्षर के बिना कानून नहीं बन सकता। ( )

समूह गतिविधि-

पूरी कक्षा को लोकसभा मान लिया जाए। बच्चों के दो समूह बना दिए जाएं। एक सत्तारूढ़ दल और दूसरा विपक्ष की भूमिका निभाए। प्रधानमंत्री तथा मंत्रियों से प्रश्नोत्तर का अभिनय कराया जाए।

E1THRG

पाठ 4

न्यायपालिका-कानून का पालन कराना

कोर्ट कचहरी और न्याय

आपने अपने आसपास कई कोर्ट-कचहरी के मामलों के बारे में सुना होगा। ऐसे एकाध किस्से आप कक्षा में सुनाइए। कचहरियों में कौन-कौन होते हैं और वे क्या-क्या करते हैं, चर्चा करिए। इस पाठ के सारे उप शीर्षक एक बार पढ़िए। क्या आपने इन शब्दों को पहले कभी सुना है ? क्या आप इनके बारे में कुछ जानते हैं ?

कल्लूराम और परसूराम का झगड़ा

कल्लूराम और परसूराम के खेत एक दूसरे से लगे हुए थे और दोनों खेतों के बीच मेड़ थी। एक दिन परसूराम अपनी मेड़ बना रहा था। उसने चुपके से मेड़ को कल्लू के खेत में खिसका दिया। यह तीसरा साल था जब परसू ने इस तरह मेड़ खिसकाई थी। कल्लू को पता भी नहीं चला था और मेड़ एक हाथ खिसक चुकी थी।

जब कल्लू अपना खेत जोतने लगा तो उसे कुछ गड़बड़ लगा। उसे याद था कि उसका हल बिजली के खम्भे के आगे तक चलता था। लेकिन यह क्या? अब तो एक हाथ पहले ही रुक जाता है। उसे यकीन हो गया कि परसू ने मेड़ खिसकाई है। उसी रात वह अपने भाई काछी और उसके बेटे रेवा के साथ खेत पर गया और सबने मिलकर रातों-रात मेड़ खोदकर वापस खिसका दी।

सुबह जब परसू को बात पता चली तो वह लाठी लेकर कल्लू के यहाँ आ धमका। दोनों के बीच झगड़ा बढ़ने लगा और मारपीट होने लगी। इतने में गाँव का चौकीदार भी वहाँ आ गया। लोगों ने बीच-बचाव किया और बात आगे बढ़ने से रोकी। बाद में कल्लू को काशी और रेवा पास के शहर कोटवार ले गये। उन्होंने अस्पताल में कल्लू की जाँच करवाई और पलस्तर चढ़वाया, फिर सब रपट लिखवाने पुलिस थाने गए।

थाने में रपट

थाने में रेवा ने परसू के विरुद्ध रपट लिखवाई। दरोगा ने कोरे कागज़ पर रपट लिखी। यह 'मौके की पहली रपट' (एफ.आई.आर. या फर्स्ट इन्फर्मेशन रिपोर्ट) थी। रेवा ने उस पर हस्ताक्षर करके दरोगा से कहा- "आप रजिस्टर में रिपोर्ट दर्ज कीजिए, और एक प्रति हमें भी दीजिए।" दरोगा ने कहा- "जब थानेदार साहब आयेंगे तभी रजिस्टर में लिख सकते हैं।" तो रेवा, काशी और कल्लू कोटवार थाने में रुके रहे। थोड़ी देर बाद थानेदार आया। उसने रेवा से रजिस्टर में रपट दर्ज करवाई। कल्लू जाने को तैयार हुआ, पर रेवा ने उसे रोककर थानेदार से रपट की एक प्रति माँगी। रेवा को पता था कि रपट की प्रति, रपट लिखवाने वाले को मिलती है। उसने रपट की एक प्रति ली और फिर सब अपने गाँव के लिए निकले।

एफ.आई.आर.

थाने में एफ.आई.आर. कोई भी दर्ज करा सकता है। यदि पढ़ा-लिखा हो तो स्वयं लिखकर और हस्ताक्षर करके एफ.आई.आर. दिया जा सकता है। मौखिक बताने पर थानेदार लिख लेता है और पढ़कर सुनाता है और जानकारी देने वाले से हस्ताक्षर करवाता है। एफ.आई.आर. में अपराध का ब्यौरा, अपराधी का नाम, जगह का नाम व अपराध का समय होना जरूरी है। गवाहों के नाम भी एफ.आई.आर. में होने चाहिए। इसी के आधार पर जुर्म का ब्यौरा आदि एक खास रजिस्टर, स्टेशन हाउस रजिस्टर में दर्ज होना चाहिए। जानकारी देने वाले को एफ.आई.आर. की एक प्रति निःशुल्क मिलनी चाहिए। यदि कोई

थानेदार एफ.आई.आर. नहीं दर्ज करता तो रपट देने वाला ही सीधे पुलिस अधीक्षक या मजिस्ट्रेट के पास रपट दर्ज करा सकता है-डाक से भी रपट भेजी जा सकती है।

जुर्म की छानबीन

एफ.आई.आर. के आधार पर थानेदार ने दरोगा से छान-बीन करने को कहा। उसी दिन दोपहर को दरोगा कल्लू के गाँव पहुँचा। पहले तो उसने कल्लू की चोटें देखीं। डॉक्टर की पर्ची से पता चला कि चोटें काफी गंभीर हैं। उसने कल्लू के पड़ोसियों से पूछताछ की। पड़ोसियों ने सुबह की मारपीट का विवरण दिया। दरोगा को यकीन हो गया कि कल्लू को मारपीट से ही इतनी चोट लगी थी।

वह परसू के पास गया और उसको बताया कि वह उसे ”गंभीर चोट पहुँचाने“ के जुर्म में गिरफ्तार कर रहा है। दरोगा उसे अपने साथ हरदा थाने ले गया। वहाँ उसने पूछताछ की। वह इस बात से मना कर रहा था कि उसने कल्लू की पिटाई की है। थानेदार ने बहुत कहा कि जुर्म कबूल कर लो पर उसने साफ इनकार कर दिया।

गिरफ्तारी

किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार करते समय, उसे यह बताना ज़रूरी है कि उसे किस ज़ुर्म में गिरफ्तार किया जा रहा है। यदि यह उसे नहीं बताया जाता तो उसको यह अधिकार है कि

वह यह पूछे और ज़ुर्म बताए जाने पर ही जाने को तैयार हो। बिना जुर्म बताए किसी को गिरफ्तार करना गलत है।

पुलिस किसी व्यक्ति को इसलिए गिरफ्तार करती है ताकि उससे पूछताछ कर सके, ताकि वह अपने खिलाफ सबूतों को नष्ट न कर सके और वह दूसरा कोई अपराध न कर सके। यानी गिरफ्तारी सज़ा नहीं है।

पुलिस थाने में किसी को भी अपना जुर्म कबूल करने की ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती है यदि थाने में कोई अपना ज़ुर्म कबूल कर भी ले तो इसके आधार पर उसे सज़ा नहीं हो सकती। जुर्म कबूल करना तभी माना जायेगा जब उसे कचहरी में या मजिस्ट्रेट के सामने कबूल किया जाये। पुलिस का काम तो सिर्फ मामले की छानबीन करके कचहरी में सबूत पेश करना है। पुलिस किसी को कोई सज़ा नहीं दे सकती। कचहरी में सारे मामले की सुनवाई होने के बाद मजिस्ट्रेट ही सज़ा सुना सकता है।

एफ.आई.आर. दजऱ् करने वाले को उसकी एक प्रति क्यों लेनी चाहिए- कक्षा में चर्चा करिए।

ज़मानत

थानेदार ने परसू को हवालात में बंद कर दिया। उसने थानेदार से बहुत कहा कि उसे छोड़ दिया जाये। थानेदार ने परसू को बताया, ”तुम्हें किसी की ज़मानत पर ही छोड़ा जा सकता है। कोई व्यक्ति जिसके पास ज़मीन-जायदाद है, तुम्हारी ज़िम्मेदारी ले सकता है। यदि वह तुम्हारी ज़मानत ले तो तुम्हें घर जाने दिया जा सकता है। यदि तुम्हारे पास ही कुछ ज़मीन जायदाद है तो तुम ही बॉण्ड भर सकते हो। तुम्हें जब भी थाने या कचहरी बुलाया जाये तुम आओगे, नहीं तो यह जायदाद ज़ब्त कर ली जायेगी।“

परसू ने बताया कि उसके पास 8 एकड़ जमीन है। उसने अपने लिए एक बॉण्ड भर दिया। थानेदार ने उसे यह भी बताया कि ”कल तुम्हें पेशी के लिए कचहरी आना पड़ेगा। तुम चाहो तो अपने बचाव के लिए वकील रख सकते हो।“ अन्ततः परसू जम़ानत पर छूट गया पर सभी जुर्मों पर जमानत नहीं मिलती है।

पेशी दर पेशी

कचहरी में मुकदमा शुरू हुआ। करीब एक साल तक पेशी दर पेशी चलती रही। इस दौरान दोनों पक्षों की गवाही और सबूत पेश किए जाते रहे। हर पेशी पर परसू का वकील अपना फीस लेता रहा। आने-जाने का खर्चा और काम का नुकसान अलग। अंततः एक साल बाद मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला सुनाया कि परसू को चार साल की कैद होगी।

चर्चा कीजिए-किसी भी केस में गवाहों की बात को सुनना क्यों जरूरी है ?

परसू फैसले से खुश नहीं था। वकील ने बताया, ”सेशन्स कोर्ट में अपील की जा सकती है। परसू की ओर से उसके वकील ने ज़िले के सेशन्स कोर्ट में अपील कर दी। इसके कारण सेशन्स जज ने परसू की सज़ा स्थगित कर दी। उसे तुरन्त जेल नहीं जाना पड़ा।

फिर सेशन्स कोर्ट में मुकदमा चलता रहा। परसू और उसके गवाहों को एक बार बुलाया गया और एक बार कल्लू और उसके गवाहों को, बाकी पेशी तो वकील ने सँभाली। दो साल बाद सेशन्स जज ने फैसला दिया। उसने परसू की सज़ा कुछ कम कर दी।

परसू फैसला सुनकर हताश हो गया। उसने अपने वकील से पूछा, ”क्या ये फैसला भी कहीं बदला जा सकता है ?“ वकील ने बताया, अपने प्रदेश में एक उच्च न्यायालय जो इलाहाबाद में है। वहाँ अपील कर सकते है। परसू ने वकील को और फीस देकर उच्च न्यायालय में अपील की। उच्च न्यायालय ने अपील दर्ज कर ली और कुछ समय बाद फैसला दिया, लेकिन परसू उच्च न्यायालय में मुकदमा हार गया। उसे वही सज़ा काटनी पड़ी जो सेशन्स जज ने दी थी। आखिर परसू को जेल जाना ही पड़ा।

दीवानी और फौजदारी मामले

परसू बहुत दुखी था। उसने अपने वकील से कहा ”इतने साल मैं जेल में रहूँगा तो मेरी खेती का क्या होगा ? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं कल्लू को कुछ पैसे दे दूँ और बात निपट जाए ?“ वकील ने बताया ऐसा नहीं हो सकता है। तुमने कल्लू के साथ मारपीट की थी। अतः यह एक फौजदारी मामला है, अर्थात् ऐसा अपराध है जो मारपीट से संबंधित है। मारपीट, चोरी, डकैती, मिलावट करना, रिश्वत लेना, खतरनाक दवाएं बनाना- ये सब फौजदारी मामले हैं। इनमें जुर्म साबित होने पर जेल जाने की सज़ा अवश्य मिलेगी। सिर्फ ज़मीन जायदाद के मामलों में जेल की सज़ा नहीं होती। ये दीवानी मामले होते हैं।
”दीवानी मामले क्या होते हैं ?“ परसू ने पूछा। वकील ने कहा, ”जब भी कोई जमीन-जायदाद के झगड़े या मज़दूर-मालिक के बीच मज़दूरी के झगड़े, किसी के बीच पैसे के लेन-देन या व्यापार आदि के झगड़े होते हैं तो दीवानी मामले दर्ज़ कराए जाते हैं। जैसे तुम्हारी मेड़ का झगड़ा था, उस पर दीवानी मुकदमा चलाया जा सकता था। इनमें कैद की सज़ा तो नहीं होती पर जिस भी पक्ष को नुकसान सहना पड़ा है या जिसकी सम्पत्ति पर नाजायज़ कब्ज़ा किया गया है, उसे उस नुकसान का मुआवज़ा दिया जा सकता है या सम्पत्ति लौटाई जा सकती है। पर तुमने तो मारपीट भी की थी। इसलिए यह फौजदारी मुकदमा बन गया। इसमें तो कल्लू को पैसे देने से छुटकारा नहीं मिलेगा।“
चर्चा कीजिए- ऽ परसू ने जब कल्लू की मेड़ खिसकाई थी तो मामला दीवानी था या फौजदारी ?

ऽ परसू ने जब कल्लू को पीटा तो मामला दीवानी था या फौजदारी ?

परसू की कहानी तो उच्च न्यायालय में ही खत्म हुई, पर पूरे भारत में एक सबसे ऊँचा न्यायालय भी है। उसे उच्चतम न्यायालय या सुप्रीम कोर्ट कहते हैं। यहाँ भी अपील की जा सकती है।

न्यायपालिका की संरचना

भारत में न्यायपालिका का बड़ा महत्व है। यह कार्यपालिका तथा व्यवस्थापिका से बिल्कुल अलग है तथा स्वतन्त्र रूप से कार्य करती है। भारत में नीचे से लेकर ऊपर तक सभी न्यायालय एक ही व्यवस्था में संगठित हैं। जिला न्यायालय, उसके ऊपर राज्यों के उच्च न्यायालय तथा सबसे ऊपर भारत का उच्चतम (सर्वोच्च) न्यायालय होता है।

सर्वोच्च न्यायालय

यह देश का सर्वोच्च अपीलीय न्यायालय है जो नई दिल्ली में स्थित है। इसके निर्णय देश के सभी न्यायालय को मानने होते हैं।

न्यायाधीशों की योग्यताएँ

ऽ भारत का नागरिक हो।

ऽ वह किसी उच्च न्यायालय में कम से कम 5 वर्ष तक न्यायाधीश के पद पर कार्य कर चुका हो।

या

उच्च न्यायालय में दस वर्ष तक वकालत कर चुका हो।

या

भारत के राष्ट्रपति की दृष्टि में कानून का विशेष ज्ञाता हो।

कार्यकाल

प्रत्येक न्यायाधीश 65 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्य कर सकता है। असमर्थता तथा कदाचार का दोष प्रमाणित हो जाने पर संसद की सिफारिश पर राष्ट्रपति इन्हें पद से हटा भी सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय (उच्चतम न्यायालय) के अधिकार

संविधान द्वारा उच्चतम न्यायालय को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। कुछ मुकदमों की प्रारम्भिक सुनवाई उच्चतम न्यायालय में ही होती है। वे मुकदमे जो संघीय सरकार तथा राज्यों अथवा केवल राज्यों के परस्पर विवादों के कारण उत्पन्न होते हैं यहाँ प्रारम्भ हो सकते हैं। सर्वोच्च न्यायालय भारतीय संविधान का संरक्षक व उसके प्रावधानों की व्याख्या करता है।

भारत में सर्वोच्च न्यायालय अपील का अन्तिम न्यायालय है।

भारत का उच्चतम न्यायालय नागरिकों के मूल अधिकारों का संरक्षक है। यदि केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार किसी प्रकार से नागरिकों के मूल अधिकारों को छीनती है तो नागरिक अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उच्चतम न्यायालय जा सकता है।

राष्ट्रपति द्वारा माँगने पर उच्चतम न्यायालय राष्ट्रपति को कानूनी प्रश्नों पर परामर्श देता है या परामर्श देने से मना कर सकता है। राष्ट्रपति सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए परामर्श को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है।

यदि संसद कोई ऐसा कानून बनाती है जो संविधान के प्रावधानों के विरुद्ध हैं तो उच्चतम न्यायालय उस कानून को असंवैधानिक घोषित करके रद्द कर सकता है।

इस प्रकार उच्चतम न्यायालय बहुत महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली है। उसके निर्णय के बारे में संसद में किसी प्रकार की चर्चा नहीं की जाती है। इसे अपनी मानहानि करने वाले को दण्ड देने का अधिकार प्राप्त है। अतः सच्चे अर्थों में यह सर्वोच्च है।

उच्च न्यायालय

उच्च न्यायालय राज्य में शीर्ष न्यायालय होता है। भारत में कुल 24 उच्च न्यायालय हैं। उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र कोई राज्य विशेष या राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों का एक समूह होता है, जैसे पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय, पंजाब और हरियाणा राज्यों के साथ केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ को भी अपने अधिकार क्षेत्र में रखता है। हमारे प्रदेश का उच्च न्यायालय इलाहाबाद में स्थित है। उच्च न्यायालय में भी एक मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीश होते हैं। वे 62 वर्ष की आयु तक अपने पद पर कार्य कर सकते हैं। उच्च न्यायालय न्याय व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

कार्य

मौलिक अधिकारों की रक्षा करना।

अधीनस्थ न्यायालयों से आए विवादों पर कानून के अनुसार फैसले देना।

जनहित याचिकाओं पर फैसले सुनाना।

अधीनस्थ न्यायालयों का निरीक्षण और पर्यवेक्षण करना।

जिला न्यायालय

जिला न्यायालय हर जिले में होता है जो दीवानी और फौजदारी मामलों की सुनवाई करता है। जिला न्यायालय उस राज्य के उच्च न्यायालय के अधीनस्थ होता है। जिला न्यायाधीश की नियुक्ति उस राज्य के राज्यपाल द्वारा की जाती है।

लोक अदालत

हमारे देश में मुकदमों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। इस कारण नियमित न्यायालयों पर कार्य का भार बहुत बढ़ गया है। इससे मुकदमांे के निपटारे में देर होती है

तथा पैरवी मंे धन भी खर्च होता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर लोक अदालतों की स्थापना की गई। समय-समय पर हर क्षेत्र/जिले स्तर पर लोक अदालतें लगायी जाती हैं।

लोक अदालतों ने शान्तिपूर्ण ढंग से दो पक्षों के मध्य समझौता कराकर विवादों को सुलझाने में बहुत सफलता पायी है। आइए, हम जानें कि किन-किन विषयों और क्षेत्रों में लोक अदालतें विवाद सुलझाती हैं - स वाहन दुर्घटना मुकदमा स पेंशन संबंधी मुकदमे

स समझौते योग्य फौजदारी मुकदमा स बिजली, गृहकर, गृहऋण संबंधी मुकदमा

स उद्योगों और बैंको से संबंधित मुकदमे स भूमि अधिग्रहण संबंधी मुकदमे

स विवाह/पारिवारिक मुकदमे स उपभोक्ता संबंधी मुकदमे

परिवार न्यायालय

परिवार न्यायालय अधिनियम 1984 के तहत विभिन्न राज्यों में परिवार न्यायालयों का गठन हुआ। इन न्यायालयों का मुख्य कार्य विवाह संबंधी मामलों, नाबालिग बच्चों के संरक्षण आदि से संबंधित है।

दहेज लेना और देना कानूनन अपराध है

अर्पिता के भाई महेन्द्र की हाल ही में शादी हुई है। उसके भाई प्राइवेट बैंक में मैनेजर हैं। शादी में उन्हंे फ्रिज, टी0वी0, ए0सी0 कार और बहुत से सामान दहेज में मिले। अर्पिता की भाभी बहुत अच्छी हैं और उसे बहुत प्यार करती हैं। उसने देखा कि शादी के कुछ समय बाद से ही उसकी माँ और भाई दहेज कम मिलने की बात कहकर उसकी भाभी को परेशान करने लगे। भाभी के विरोध करने पर भाई ने उन्हें बहुत मारा-पीटा। उसे ये देखकर बहुत दुःख हुआ कि जो भाई उसे बड़ी-बड़ी शिक्षाएँ देते थे वो आज कैसे रुपयों के लालच में अपनी पत्नी के साथ मारपीट कर रहे हैं। एक दिन अर्पिता ने टी0वी0 पर देखा कि एक औरत ने दहेज लेने के खिलाफ अपने पति और सुसराल वालों पर दहेज प्रताड़ना का मुकदमा कर दिया।

अर्पिता सोचने लगी कि आखिर उसकी भाभी अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज क्यों नहीं उठा रही हैं ? जबकि वो शिक्षित हैं, नियम कानून के बारे में जानती हैं, फिर भी वो चुप क्यों हैं ?

आपके अुनसार अर्पिता अपनी भाभी को बचाने के लिए क्या कर सकती है ? सोचकर बताइए।
दहेज एक गलत प्रथा है। यह क्यों गलत है ? सोचिए और लिखिए।

आप भी जानिए:

दहेज लेना और देना अपराध है। इसके खिलाफ अपने क्षेत्र के थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई जा सकती है। इस तरह अन्याय के खिलाफ हम लड़ सकते हैं।
दहेज लेना, देना या इसे बढ़ावा देना दंडनीय अपराध है, जिससे कम से कम 5 सालों की सजा और कम से कम 15,000 या दहेज की राशि के दोनों में जो अधिक हो, मूल्य के जुर्माने का प्रावधान है।

उपभोक्ता अदालत

जब कोई व्यक्ति सामान बेचते वक्त ग्राहक को ऐसी वस्तु बेचता है जिसकी गुणवत्ता में किसी प्रकार की कमी हो या उस वस्तु के दाम में हेर-फेर किया गया हो तो इससे उपभोक्ता (ग्राहक) के अधिकार का हनन होता है। वस्तु की गुणवत्ता में कमी कभी-कभी हादसे या दुर्घटना का रूप ले लेती है। ऐसी परिस्थिति से उपभोक्ता को संरक्षण मिले इसलिए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के तहत हर भारतीय उपभोक्ता को संरक्षण दिया जाता है। उपभोक्ता कोर्ट में ग्राहक की शिकायत सही होने पर ग्राहक/उपभोक्ता अपने साथ हुई परेशानी के लिए दुकानदार या कंपनी पर मुआवज़े का दावा कर सकता है। ऐसी स्थिति में कोर्ट द्वारा लगाए जुर्माने का भुगतान दुकानदार को करना पड़ता है।

जनहित याचिका

परसू की कहानी में हमने देखा कि उसके पास खेती लायक कुछ जमीन थी जिसके सहारे वह उच्च न्यायालय तक अपील का खर्चा उठा पाया। लेकिन दिहाड़ी मजदूर और भूमिहीन किसान जैसे गरीबों के लिए अदालत में जाना काफ़ी मुश्किल साबित होता है। न्याय पाने की प्रक्रिया में काफी पैसा और कागजी कार्यवाही की जरूरत पड़ती है, उसमें बहुत समय भी लगता है जिसके कारण बहुत लोग न्याय के लिए आवाज नहीं उठा पाते।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए 1980 के दशक में सर्वोच्च न्यायालय ने जनहित याचिका ;च्प्स्द्धकी व्यवस्था लागू की। इसके अन्तर्गत यदि किसी व्यक्ति (व्यक्तियों के

समूह) के अधिकारों का हनन हो तो कोई अन्य व्यक्ति या संस्था उसके हित के लिए उच्च न्यायालय या सीधे सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमा दर्ज कर सकता है।

जनहित याचिका अन्य याचिकाओं से भिन्न है। इस प्रकार की याचिका पोस्टकार्ड पर साधारण आवेदन पत्र लिखकर भी की जा सकती है। इसको प्रारम्भ करने का श्रेय जस्टिस पी0एन0भगवती को जाता है। इसके अन्तर्गत कमजोर वर्गों के लोगों, बंधुआ मजदूरों, स्त्रियों और बच्चों की शिकायतों को समुचित महत्त्व दिया गया है।

निःशुल्क कानूनी सेवा प्राप्त करने योग्य व्यक्ति

महिला तथा बच्चे

अनुसूचित जाति एवं जनजाति सदस्य

कारागार में रहने वाले व्यक्ति

बाढ़, सूखा, भूकम्प, औद्योगिक विनाश से पीड़ित लोग

दिव्यांगजन

मानव दुर्व्यवहार या बेगार का सताया व्यक्ति जिनकी वार्षिक आय 50 हजार रुपये से अधिक न हो।

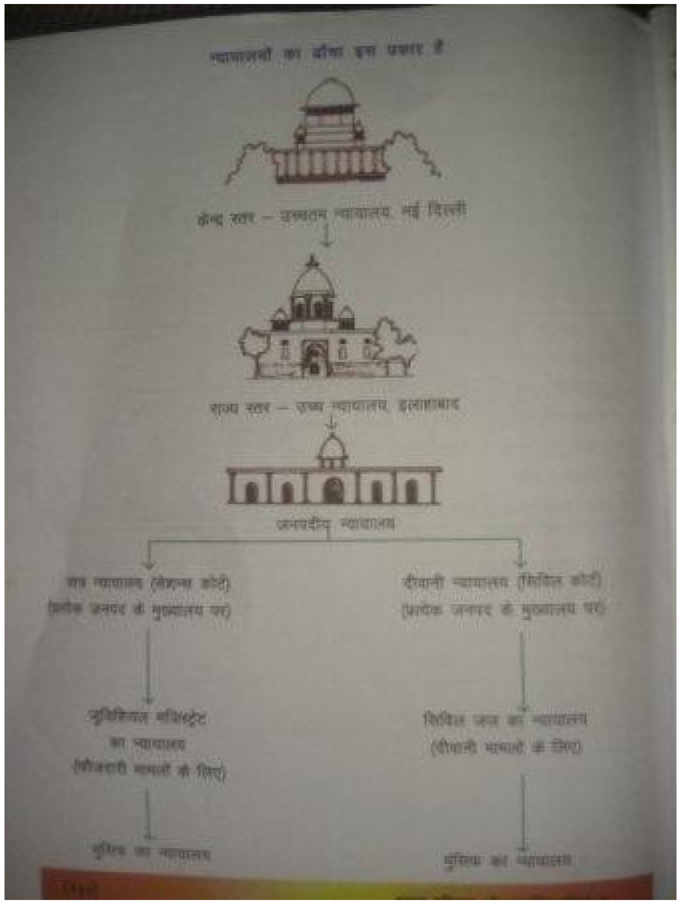

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) एफ.आई.आर. कहाँ और कब दर्ज़ किया जाता है ?

(ख) गिरफ्तारी और सज़ा में क्या अन्तर है ?

(ग) ज़मानत किस प्रकार दी जाती है ?

(घ) फौजदारी और दीवानी मामलों में क्या अन्तर है ?

(ङ) हमारे लिए न्यायपालिका क्यों महत्त्वपूर्ण है ?

(च) न्यायपालिका की संरचना का वर्णन कीजिए।

(छ) लोक अदालत में किस प्रकार के मुकदमे सुलझाए जाते हैं ?

(ज) उपभोक्ता अदालत किसे कहते हैं ?

(झ) परिवार न्यायालय की स्थापना क्यों की गई ?

(´) जनहित याचिका से आप क्या समझते हैं ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश .... वर्ष की आयु तक ही कार्य कर सकता है।

(ख) जिला न्यायाधीश की नियुक्ति उस राज्य के .... द्वारा की जाती है।

(ग) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 के तहत हर भारतीय ....को संरक्षण दिया जाता है।

(घ) मारपीट के मामले .... मुकदमे कहलाते हैं।

3. सही मिलान करिए-

जमीन-जायदाद के मामले	सेशन्स कोर्ट
जनपद स्तरीय न्यायपालिका	उच्च न्यायालय
राज्य स्तरीय न्यायपालिका	उच्चतम न्यायालय
केन्द्र स्तरीय न्यायपालिका	दीवानी मुकदमे

प्रोजेक्ट वर्क

दुकानदार से खरीदे गये सामान में गुणवत्ता की कमी होने पर इसकी शिकायत किस अदालत में करंेगे। चर्चा करें।

समूह गतिविधि- अपने गुरुजी के साथ इस पाठ के आधार पर मुकदमे का एक नाटक करिए। कल्लू, परसू, मजिस्ट्रेट और गवाह मुख्य पात्र होंगे। कहानी को एक बार ध्यान से पढ़कर सभी पात्र अपने-अपने संवाद याद कर लें। परसू के वकील और सरकारी वकील को सवाल जवाब ठीक से तैयार करने पड़ेंगे। नाटक में मजिस्ट्रेट को अपना फैसला भी सुनाना होगा।

शब्दावली

ऽ संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न ः देश के आंतरिक एवं बाहरी मामलों में निर्णय लेने की पूर्ण स्वतंत्रता।

ऽ पंथ निरपेक्ष ः सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार एवं संरक्षण करना।

ऽ लोकतंत्रात्मक ः जनता के लिए, जनता द्वारा तथा जनता की सरकार।

ऽ गणराज्य ः भारत का राष्ट्राध्यक्ष वंशानुगत न होकर निर्वाचित होगा।

ऽ समाजवाद ः समानता लाना।

ऽ अभिव्यक्ति ः अपने मन के उठे विचारों को दूसरों के सामने बिना डर या बेहिचक कहना।

ऽ आंतरिक एवं विदेशी नीतियाँ ः देश के भीतर तथा बाहर शासन चलाने के लिए बनाए गए नियम।

ऽ मौलिक अधिकार ः वे अधिकार जो व्यक्ति के जीवन के लिए मौलिक तथा अनिवार्य होने के कारण संविधान द्वारा नागरिकों को प्रदान किए जाते हैं और जिन अधिकारों में राज्य द्वारा भी हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता, मूल अधिकार कहलाते हैं।

ऽ मौलिक कर्तव्य ः वे कर्तव्य हैं, जिसका पालन राष्ट्रहित में प्रत्येक नागरिक को जीवन पर्यन्त करना होता है।

ऽ नीति निदेशक तत्व ः नीति निदेशक तत्व कल्याणकारी राज्य की स्थापना करता है अर्थात राज्य का कर्तव्य होगा कि वह कानून निर्माण करते समय तथा प्रशासन में इन सिद्धान्तों का पालन करें।

ऽ सांस्कृतिक विरासत ः पूर्वजों द्वारा स्थापित भवन, साहित्य, सभ्यता, कला तथा धार्मिक मान्यताओं से संबंधित विचार तथा वस्तुएँ।

छाँट कर लिखिए -

भारत के प्रथम राष्ट्रपति का नाम

....

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का नाम

....

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री का नाम

....

भारत के वर्तमान राष्ट्रपति का नाम

....

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम

....

भारत में कुल राज्यों की संख्या

....

उत्तर प्रदश्ो में कुल जनपदों की संख्या

....

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी, श्रीमती इन्दिरा गांधी,

उनतीस, श्री रामनाथ कोविंद, पचहत्तर, पं0 जवाहर लाल नेहरू।

Table of Contents

Untitled-9